

आर.एन.आई. नं. 7387/63

मुद्रण तिथि : 15-16 अप्रैल 2023

डाक प्रेषण तिथि : 15-17 अप्रैल 2023

ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61

अंक : 01

मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 72

डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23

Office Posted At R.M.S., Bikaner

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणापासक

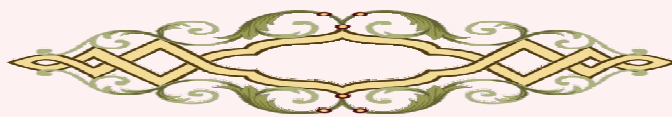
धार्मिक पाक्षिक

60
वर्ष
पूर्ण



61वें
वर्ष
में
प्रवेश

“ज्ञानी को गर्व नहीं होता, बल्कि ज्ञान के गहरा होने पर वह धीर, गंभीर होता चला जाता है।”



“दीया है, तेल है, बाती है। उसे प्रज्वलित होने के लिए जलती हुई लौ के स्पर्श की जरूरत है। वैसे ही बुद्धि को उद्यम की जरूरत होती है। उसका जितना उपयोग किया जाएगा, वह खिलती जाएगी।”



“संग्राहक नहीं, शोधक बनो। संग्राहक सागर और शोधक गोताखोर की तरह होता है।”

**-परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलालजी म.सा.**

**कामी कामे न कामए, लद्धे वावि अलद्ध कण्हुई।**

-सूत्रकृतांग (1/2/3/6)

साधक सुखाभिलाषी होकर काम-भोगों की कामना न करे, प्राप्त भोगों को भी अप्राप्त जैसा कर दे अर्थात् उपलब्ध भोगों के प्रति भी निःस्पृह रहे।

The monk must not desire sensual pleasure. He must, on the other hand, remain aloof towards the available means of sensual pleasures.

जंमि य भग्गंमि होइ सहसा सव्वं भग्गं...**जंमि य आराहियंमि आराहियं वयमिणं सव्वं...।**

-प्रश्नव्याकरण (2/4)

एक ब्रह्मचर्य ही ऐसा व्रत है जिसके भंग होने पर सहसा अन्य सब व्रत भंग हो जाते हैं। एक ब्रह्मचर्य की आराधना कर लेने पर अन्य सब शील, तप, विनय आदि व्रत आराधित हो जाते हैं।

Celibacy is the only vow by breaking which all the other vows (Such as righteousness, penance, humility, etc.) also stand broken and by whose observance all the other vows are also properly observed.

जहा पोमं जले जायं, नोवलिप्पई वारिणा।**एवं अलितं कामेहिं, तं वयं बूम माहणं॥**

-उत्तराध्ययन (25/27)

ब्राह्मण वही है जो संसार में रहकर भी काम-भोगों से निर्लिप्त रहता है। जैसे कि कमल जल में रहकर भी उससे लिप्त नहीं होता।

He is the true Brahmin (a wise man of noble disposition) who does not get involved in the worldly pleasures even while living a worldly life just like a lotus-flower does not get wet even while staying in water all the time.

खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा, पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा।**संसारमोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा॥**

-उत्तराध्ययन (14/13)

ये काम-भोग क्षणभर सुख और चिरकाल तक दुःख देने वाले हैं, बहुत दुःख और थोड़ा सुख देने वाले हैं, संसार-मुक्ति के विरोधी और अनर्थों की खान हैं।

The sensual pleasures are momentarily pleasurable but cause long lasting pain; they give little pleasure and great pain; they are a mine of misfortune and hinder liberation as well.

साभार- प्राकृत मुक्तावली

**आ****ग****म****वा****णी**

अनुक्रमणिका



स्थायी स्तम्भ

जीवनी	: The Wonderful Effect of Chaturmas - संकलित.....	07
धर्मदेशना	: ज्ञान और क्रिया - आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.....	09
धर्मदेशना	: बिना अनुभूति का अक्षरीय ज्ञान - आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.....	13
धर्मदेशना	: ज्ञान-ज्योति का आलोक - आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.....	15
ज्ञान-सार	: ऐसी वाणी बोलिए - संकलित.....	19
ज्ञान-सार	: श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र - सरिता बैंगानी.....	23
तत्त्व-ज्ञान	: तिर्यच के भेद - संकलित.....	25
तत्त्व-ज्ञान	: समकित के 67 बोल - शकुन्तला लोढ़ा.....	27
किड्स कॉर्नर	: बालमन में उपजे ज्ञान - मोनिका जय ओस्तवाल.....	42
गुड बॉक्स	: सोशल मीडिया : एक भटकाव - संकलित.....	44
गुरुचरण विहार	- महेश नाहटा.....	61

संस्कार सौरभ

महासती शिवा	- संकलित.....	31
धर्ममूर्ति आनन्दकुमारी	- संकलित.....	39
आदि प्रभु एवं अक्षय तृतीया	- संकलित.....	46
ज्ञानी और अज्ञानी का स्वरूप	- डॉ. दिलीप धींग.....	48
ज्ञान की महिमा	- प्रो. सुमेरचन्द जैन.....	51
ज्ञान विवेक : अंधकार से प्रकाश की ओर	- सुरेश बोरदिया.....	53
स्वयं में 'स्व' की खोज ही आत्मज्ञान है	- पद्मचन्द गाँधी.....	56
इतिहास के झरोखे से	- संकलित.....	59

भक्ति-रस

मुक्तक	- राजेन्द्र जैन 'अयोग्य'.....	47
--------	-------------------------------	----



अहर्निश जले ज्ञान-दीप

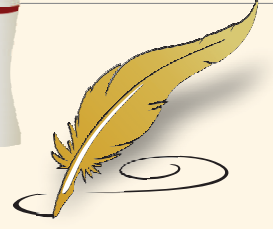
- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

व्यापारी के पास यदि रुपये हों तो वह उनको दो-चार दिन भी अपने पास रखने के बजाय ब्याज या व्यापार में लगाना चाहता है। उसकी तमन्ना रहती है कि पैसा-पैसे को बढ़ाये। इस सम्बन्ध में जब विचार करते हैं तो लगता है कि जो व्यापारी पैसों को बढ़ाने में इतनी तत्परता रखता है तो क्या ज्ञान-धर्म, त्याग-तपस्या को भी उसी प्रकार से बढ़ाने की उसकी तमन्ना रहती है? यदि नहीं, तो क्या उसने ज्ञान या धर्म को महत्त्व दिया है? ज्ञान का दीप अखण्ड प्रज्वलमान रहना चाहिये। वह तभी संभव है जब उसमें ज्ञान-धी डालते रहा जाय। आज जो सीखा है उसमें रोज कुछ नया जुड़ना चाहिये। भले एक शब्द ही क्यों न हो। कुछ न कुछ नया जुड़ता गया तो निश्चित रूप से ज्ञान का दीप निरन्तर प्रज्वलित बना रहेगा। उसके लिए चाहे कितना भी परिश्रम करना पड़े, किया जाना चाहिये। कड़ा परिश्रम भी करना हो तो अवश्य किया जाय। यदि रात-रात भर जागना पड़ जाय या खाना भी छूट जाय तब भी पाँव पीछे नहीं हटाना चाहिये। सफल होने के लिए दृढ़ता का होना आवश्यक है। कर्मठता के बिना सफलता सहज उपलब्ध नहीं होती। क्षयोपशम की तीव्रता से कभी-कभी अल्प पुरुषार्थ से भी सफलता मिल जाती है। लेकिन ऐसे प्रसंग अत्यन्त विरले होते हैं। अधिकांश व्यक्तियों को सफल होने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। कड़ी मेहनत की कमाई से बनी रोटी में जो मिठास आती है वह सहज मिलने वाली रोटी से कई गुणा अधिक होती है। ऐसा ही ज्ञान के सम्बन्ध में समझना चाहिये। शिविरों में पुरस्कार प्राप्ति से जो ज्ञान पाया जाता है उसमें वह मिठास-आनन्द नहीं आता जो स्वयं के पुरुषार्थ से प्राप्त ज्ञान से आता है। पूर्वजों से प्राप्त धन की कीमत उसका भोग करने वाला क्या जान सकता है? नहीं जान सकता। अतः सामान्य रूप से केवल ऊपरी-ऊपरी तौर पर ही ज्ञान न सीखें, उसकी गहराई में भी उतरने का लक्ष्य रखा जाय। गहरे से प्रकट हुआ ज्ञान अद्भुत है। उससे प्राप्त होने वाले आनन्द का कहना ही क्या? अतः प्रतिदिन कुछ समय ज्ञान सीखने के लिए अवश्य नियोजित किया जाय।

माघ कृष्ण 10, शनिवार, 5 दिसम्बर 2015

साभार- ब्रह्माक्षर

सुनहरी कलम से...



जय जिनेन्द्र!

प्रकृति की विभिन्न व्यवस्थाओं- दिन-रात, ऋतु परिवर्तन की तरह हमारी सामाजिक व्यवस्थाएँ भी होती हैं और परस्पर दोनों के सामंजस्य से ही हमारा जीवन सुचारु रूप से चलता है। सामाजिक व्यवस्थाओं में समाज के विभिन्न वर्ग के लोगों का सहयोग रहता है। जैसे- पुलिस, अध्यापक, चिकित्सक, सफाई कर्मचारी इत्यादि विभिन्न विभागों के कार्यकर्ता। यदि इनमें से किसी भी विभाग के कार्यकर्ता अपना कार्य तारतम्यता से न करें तो सामान्य जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है और व्यक्ति अपने को निःसहाय महसूस करता है।

ऐसा ही कुछ घटित हुआ राजस्थान में पिछले कुछ दिनों में। एक सरकारी बिल के विरोध में सभी निजी चिकित्सक हड़ताल पर चले गए। परिणामस्वरूप जन-जन भय में जीने लगा और शंकित हो चिन्ता करने लगा कि अब क्या होगा? हमें कुछ हो गया तो? हमारे साथ कोई दुर्घटना घट गई तो? ऐसे सैंकड़ों सवाल दिलो-दिमाग में चलने लगे। वातावरण में त्राहि-त्राहि मच गई। स्वस्थ होते हुए भी भय की लकीरें उभरने लगीं।

सम्पूर्ण सृष्टि में सिर्फ मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो अपने भविष्य को लेकर काफी सतर्क रहता है और उसकी यही सतर्कता चिकित्सकों की हड़ताल के कारण भय में परिवर्तित हो गई। परन्तु क्या यह भय स्थायी है? नहीं। यह भय अस्थायी है, क्योंकि चिकित्सकों और सरकार के बीच समझौता होते ही यह सारा भय काफ़ूर हो गया।

एक बात यहाँ विचारणीय है कि कई और भी जीव हैं जो भयभीत होते हैं, जब मानव हड़ताल पर जाते हैं। प्रश्न है कौनसी हड़ताल? वह हड़ताल है विवेक, करुणा, दया की हड़ताल। अपनी जरूरतों/लालसाओं की पूर्ति के लिए मानव मानवीय गुणों की हड़ताल पर जा चुका है और अपना मूल स्वरूप भूल चुका है।

मानव प्रकृति का हनन कर सिर्फ अपनी जरूरतें ही पूरी करना नहीं चाहता बल्कि असीमित इच्छाओं की पूर्ति करना चाहता है, जो कि सागर के समान है और जिनका कोई अंत नहीं है। चिकित्सकों की हड़ताल का तो फिर भी सरकार से समझौता हो गया, परन्तु मानव अपने मानवीय गुणों की हड़ताल का समझौता ना जाने कब करेगा? उसकी इस हड़ताल का हर्जाना अभी तो प्रकृति और प्रकृति पर आधारित बेजुबान जीव अपने जीवन की कुर्बानी देकर भर रहे हैं, परन्तु कालान्तर में अपने द्वारा की गई मानवीय गुणों की हड़ताल का हर्जाना मानव को भुगतना ही पड़ेगा। यह एक कटु सत्य है।

सह-सम्पादिका



THE WONDERFUL EFFECT OF CHATURMAS

Golden Glimpses of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.S.A.

After the “Achar Vishuddhi Mahotsav” the english translated series of “Pujya Hukmesh” is presented below to make the readers aware about the life of Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa.

Continued from 15-16 Mar. 2023-

Dear children!

In just one Chaturmas of Pujya Shriji, many families started observing the Vratas with all their might after attaining pure (true) Samyaktva from Pujya Shriji’s divine words. By relishing the nectar of Paap Prakshalini Jinavani from him, detachment from this useless world was born in the minds of four individuals. The names of these four individuals were Shardul Singh Ji Kothari, Lalchand Ji Lodha, Lalchand Ji Daga, and his son Kewalchand Ji Daga.

Standing in a meeting that lasted all day, these four expressed their deep desire to adopt self-control and approached Pujya Shri with a request. They said, “Oh great teacher! We wish to drink the nectar of your discourse, which is infused with your spirit of renunciation. By doing so, our souls can become indifferent to this impure and

meaningless world, and we can climb the path of self-control to cross the ocean of existence. Therefore, we ask you to grant us the precious gem of good character, and take us under your refuge so that we can become disciples of the path of liberation by practicing self-control according to your guidance.” Upon witnessing their deep desire to take Deeksha, Pujya Shri along with everyone else present there were enchanted. However, family members also attempted to explain them otherwise. Pujya Shri himself also tried to explain the difficulties that come with the path of self-control. But when he saw determination in the eyes of all four of them, he finally gave his consent to walk the difficult path, and everyone, including family members and community leaders decided the Deeksha ceremony to be held on the fifth day of the month of Magh in the year 1907 in Bikaner.

Dear children! After this, the Chaturmas (four-month period of spiritual practice) was completed with unprecedented religious devotion and enthusiasm. The scene of the vihaar was also unique. All mouths echoed the same voice that – “We spent our entire life wandering in the dark alleys of falsehood. We obtained the company of these great personalities only from our great merit (punya), through which we understood the true nature of the path to liberation and its proper worship. Otherwise, until today, we considered religion to be only worldly practices. These Tirthankara Devs (omniscient beings) who, by understanding the nature of the sublime, auspicious religion of nonviolence, self-control, and penance, have attained the pure, formless, and supreme state, by creating embodiments of these Tirthankaras, we adopted undisciplined tendencies of the six

senses with uncontrolled passion, and were engaged in the worship and reverence of the passionless gods who were filled with attachment and aversion.”

The most important part of this Chaturmas were the four Mumukshus, highly noble and ideal people, who were determined to attain the path of self-restraint. Their initiation (Deeksha) was also scheduled to take place on Magh Sudhi Panchami. People were saying that we all must come together to make this festival so ideal that the Deeksha festival is remembered by people for hundreds of years. With this strong determination in mind, everyone listened to the auspicious recitation of Pujya Shri Ji and gathered from their respective places in the city to prepare for making the Deeksha festival an ideal one.

Continued...

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राष्ट्रीय अध्यक्ष (सत्र 2023-2025) मनोनयन हेतु सूचना

हमारे गौरवशाली संघ के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गौतमचन्द्रजी जैन (रांका) का कार्यकाल आसोज सुदी 2 दिनांक 16 अक्टूबर, 2023 को पूर्ण होने जा रहा है। अतः आगामी सत्र 2023-2025 हेतु इस पद के लिए संघ समर्पित, सेवा भावना से ओत-प्रोत सुश्रावक, जो श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के आजीवन सदस्य हो, उनके नामांकन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इस पद के लिए आप अपना अथवा अन्य किसी सुज्ञ संघ आजीवन सदस्य का नाम प्रस्तावित कर सकते हैं। कृपया अपना प्रस्ताव दिनांक 30 अप्रैल 2023 से पूर्व निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें-

राजकुमार नाहर

प्रमुख-नियामक परिषद्

103-104, जनकपुरी प्रथम, इमलीवाला फाटक, जयपुर-302005 (राज.)

Mo.: 9928074897 (WhatsApp), Email : rknahtar27@gmail.com

-राष्ट्रीय महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन संघ



-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

एक कहता है- 'अगर ज्ञान हमें प्राप्त हो गया है तो क्रिया की क्या आवश्यकता है?' दूसरा कहता है- 'क्रिया ही कल्याणकारी है। ज्ञान प्राप्त कर लेने से कोई लाभ नहीं है।'

लक्ष्य दोनों का एक है, फिर भी लक्ष्य की उपलब्धि के मार्गों में समन्वय न होने के कारण दोनों में से एक भी लक्ष्य पर नहीं पहुँच सकता। ज्ञान और क्रिया, दोनों का समन्वय ही दोनों पैरों के समान लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायक होता है। जो ज्ञान क्रिया का निषेध करता है वह ज्ञान नहीं, अज्ञान है। जो क्रिया अज्ञानपूर्वक की जाती है वह संसार भ्रमण का कारण होती है। दोनों का सम्यक् समन्वय परमार्थ साधक है।

न केवल परमार्थ साधन में ही, अपितु व्यवहार में भी ज्ञान और क्रिया, दोनों की आवश्यकता होती है। कोई मनुष्य स्वतन्त्रता प्राप्त करना चाहता है, पर केवल स्वतन्त्रता को जान लेने मात्र से वह प्राप्त नहीं हो सकती और न उसे जाने बिना प्रयत्न करने से। ज्ञान और क्रिया दोनों होने पर ही वह प्राप्त हो सकती है। कड़कड़ाती भूख लगने पर भोजन के ज्ञान से ही भूख नहीं मिट सकती और भोजन का स्वरूप समझे बिना भूख मिटेगी ही कैसे? इस प्रकार प्रत्येक व्यावहारिक सिद्धि के लिए ज्ञान व तदनुकूल

क्रिया अनिवार्य रूप से अपेक्षित है। शास्त्र में कहा है-

पढमं नाणं तओ दया।

पहले ज्ञान की आवश्यकता है, फिर दया अर्थात् चारित्र या क्रिया सम्भव है।

हतं ज्ञानं क्रियाहीनं हता चाज्ञानिनां क्रिया।

ज्ञानहीन क्रिया अन्धी है और क्रियाहीन ज्ञान पंगु है।

मुख के द्वारा भोजन किया जाता है, यह तो सभी जानते हैं, पर भोजन पथ्य है या अपथ्य यह जानना भी आवश्यक है। अपथ्य भोजन करने वाले रोगी और परिणामतः दुःखी देखे जाते हैं? इन सब बातों से यह स्पष्ट है कि प्रत्येक सिद्धि के लिए, चाहे वह व्यावहारिक हो या पारमार्थिक हो या महान हो, ज्ञान और क्रिया दोनों अपेक्षित हैं। जैसे एक चक्र से रथ नहीं चल सकता, उसी प्रकार अकेले ज्ञान या अकेली क्रिया से कोई सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

ज्ञान-रहित क्रिया बहुत बार हानिकारक सिद्ध होती है। इसी प्रकार क्रिया-रहित ज्ञान तोतारटंत मात्र है। एक आदमी ने तोते को सिखाया कि 'बिल्ली आये तो उससे बचके रहना।' तोता ये शब्द रटता रहा। एक बार बिल्ली आई और उसने तोते को अपने निर्दयी पंजे में पकड़

लिया। उस समय भी तोता यही रटता रहा- 'बिल्ली आये तो उससे बचके रहना।' लोग कहने लगे - मूर्ख तोता! अब कब बिल्ली आयेगी और कब तू बचेगा?

आशय यह है कि तोते को ज्ञान होने पर भी क्रिया के अभाव में वह बच न सका। इस प्रकार क्रियाविहीन ज्ञान निरर्थक होता है।

आधुनिक शिक्षा तोतारटंत के समान ही है। जिस वस्तु पर अपना अधिकार नहीं, उसे अपनी समझना और जिसे आप बना नहीं सकते, उसे पाकर अभिमान करना और जीवन को पराधीन बनाना तोतारटंत के समान है। उदाहरणार्थ तुम्हारे सिर पर जो पगड़ी है, उसे बनाने में

तुमने क्या किया है? क्या यह पगड़ी तुमने बुनी या रंगी है? तुमने अपनी धोती कभी स्वयं बनाई? अगर नहीं, तो उसे पहन कर अभिमान कैसे कर सकते हो?

भाइयो! अगर जीवन में किसी प्रकार की सिद्धि प्राप्त करनी है तो पहले उसका स्वरूप, उसके साधन और उसके मार्ग को समीचीन रूप से समझो और फिर तदनुकूल क्रिया करो। ऐसा किये बिना जीवन सफल नहीं हो सकता।

► ज्ञान और चारित्र्य

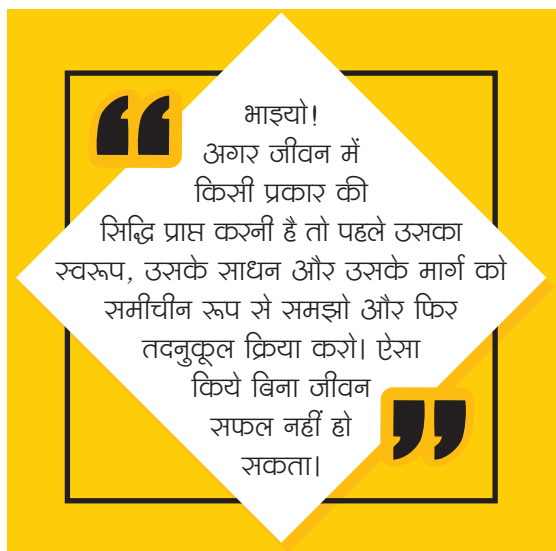
जैन धर्म का कथन है कि उत्कृष्ट संयम का सद्भाव होने पर ही उत्कृष्ट ज्ञान आता है। यह सम्भव नहीं है कि उत्कृष्ट संयम तो न हो पर उत्कृष्ट ज्ञान का आविर्भाव हो जाए। कदाचित् उत्कृष्ट संयम से पहले ही उत्कृष्ट ज्ञान उत्पन्न होने लगे तो गजब हो जाए। ऐसी स्थिति में संसार पतित हुए बिना न रहे। अतएव पहले मोह का सम्पूर्ण क्षय होता है, तदनन्तर ही परिपूर्ण ज्ञान यानी केवलज्ञान उत्पन्न होता है। मोह नष्ट होने से पहले ज्ञान उत्पन्न होता तो संसार पतित हो जाता। कल्पना

कीजिए कि आपको धन की लालसा है। धन का मोह ज्यों-का-त्यों बना हुआ है, फिर भी आपको अवधिज्ञान उत्पन्न हो जाए तो आप न जाने कितनों का सफाया कर डालेंगे? यह तो बिल्ली को पंख आने के समान होगा। बिल्ली को पंख आ जाएं तो वह किसी भी पक्षी को चैन न लेने देगी। इस प्रकार धन का मोह छूटने से पहले आपको अवधिज्ञान प्राप्त हो जाए तो आप संसार में न जाने क्या उलट-फेर कर डालेंगे। बिल्ली को पंख नहीं आते, यही गनीमत है। पंख न आने से बिल्ली विशिष्ट पाप से बच जाती है और पक्षियों के प्राण बच जाते हैं। इसी भाँति मोह छूटने से पहले ज्ञान की उत्पत्ति न होने में ही कुशलता है।

► ज्ञानी और अज्ञानी में अन्तर

ज्ञानी और अज्ञानी के बीच यह एक महान अन्तर है कि अज्ञानी जिन पदार्थों को अपने विनोद और आमोद-प्रमोद का साधन समझता है, ज्ञानी उन्हीं पदार्थों को अपनी जीवन-साधना का कल्याणकारी साधन मानते हैं। झरने का झर-झर

शब्द सुनकर साधारण आदमी उसे विनोद का कारण मानकर थोड़ी देर खुश हो लेता है, परन्तु ज्ञानीजन उस ध्वनि को सुनकर गंभीर विचार करते हैं। वे सोचते हैं- 'यह झरना है, मेरे आने से पहले भी झर-झर ध्वनि कर रहा था, इस समय भी यही ध्वनि कर रहा है और जब मैं यहाँ से चल दूंगा तब भी इसका यह नाद निरन्तर जारी रहेगा। यह झरना न किसी की निन्दा की परवाह करता है, न प्रशंसा की। यह तो इसी प्रकार संगीत करता हुआ सागर में समा जाता है। एक ओर मैं हूँ मनुष्य, प्रकृति का राजा! जो जरा-सी प्रशंसा सुनकर फूल कर कुप्पा हो जाता



हूँ और तनिक निन्दा सुनकर ज्वालाएँ उगलने लगता हूँ। ज्ञानीजन प्रकृति के प्रगाढ़ परिचय से ऐसा पाठ सीखते हैं।

संसार के पदार्थ अलग-अलग दृष्टियों से देखे जाने पर अलग-अलग प्रकार के दिखाई देने लगते हैं। हाड़-पिंजरे को देखकर कोई उसे अपना भोजन समझता है, तो कोई उसे अपनी खोज का साधन मानता है। किसी कुत्ते के सामने अस्थिपंजर रख दिया जाए तो वह अपना भोजन समझकर खाने लगता है और अस्थिपंजर किसी डॉक्टर के सामने रख दिया जाए तो वह शरीर संबंधी किसी खोज के लिए उसका उपयोग करता है। ज्ञानी और अज्ञानी के बीच भी इसी प्रकार का अन्तर है। अज्ञानी लोग हाड़-पिंजरे का बाहरी रूप देखकर मोहित हो जाते हैं और ज्ञानीजन बाहर दिखाई देने वाले रूप के पीछे क्या छिपा है, इस प्रकार का विचार करके वैराग्य लाभ करते हैं।

► ज्ञानी का निर्ममत्व

माथे पर अंगारे रखे हों और मुनि तपस्या में लीन हो, यह कैसी असम्भव-सी कल्पना है। परन्तु यह असम्भवता अपनी निर्बलता को प्रकट करती है। हमने शरीर और आत्मा के प्रति अभेद की कल्पना स्थिर कर ली है। हमारे अन्तःकरण में देहाभ्यास प्रबल रूप से विद्यमान है। हम शरीर को ही आत्मा मान बैठे हैं। अतएव शरीर की वेदना को आत्मा की वेदना मानकर विफल हो जाते हैं। जिन्होंने परमहंस की वृत्ति स्वीकार करके, स्व-पर भेदविज्ञान का आश्रय लेकर अपनी आत्मा को शरीर से सर्वथा पृथक् कर लिया है, जो शरीर को भिन्न और आत्मा को भिन्न अनुभव करने लगते हैं, उन्हें इस प्रकार की शारीरिक वेदना तनिक भी विचलित नहीं कर सकती। वे सोचते हैं कि शरीर के भस्म हो जाने पर भी मेरा क्या बिगड़ता है? मैं चिदानन्द हूँ, मुझे अग्नि का स्पर्श भी नहीं हो सकता।

जब आपका ध्यान दूसरी ओर होता है तो मामूली चोट का आपको पता नहीं चलता। बालक को खेल में ज्यादा चोट लग जाती है, पर वह खेल में तल्लीन होता है तो उस समय उसे चोट का किंचित् भी अनुभव नहीं होता।

इसी प्रकार मुनि की आत्मानुभूति इतनी उग्र होती है, आध्यात्मिक ध्यान में ऐसी निश्चलता होती है कि शरीर की ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता। इस दशा में जिसे हम भीषण उपसर्ग समझते हैं वह उपसर्ग उनके लिए साधारण-सी बात हो जाते हैं। दुःख एक प्रकार का प्रतिकूल संवेदन है। वह अपने-आप में कुछ भी नहीं है। जिस घटना को प्रतिकूल रूप में अनुभव किया जाता है, वही घटना दुःख बन जाती है। अगर उस पर ध्यान ही नहीं दिया जाए अथवा उसे प्रतिकूल संवेदन न किया जाए तो दुःख की वेदना नहीं हो सकती। यही कारण है कि एक ही घटना विभिन्न मानसिक स्थितियों में विभिन्न प्रभाव उत्पन्न करती है। गाली कभी प्रतिकूल संवेदन के कारण दुःख उत्पन्न करती है और वही गाली ससुराल में प्रियजनों के मुख से निकलने पर अनुकूल संवेदन के कारण सुख रूप हो जाती है। इससे यह स्पष्ट है कि दुःख या सुख पहुँचाने की शक्ति गाली में नहीं है। अगर ऐसा होता तो वह सदा दुःख ही पहुँचाती या सदा सुख ही प्रदान करती। मगर ऐसा होता नहीं है। अतएव यह स्पष्ट है कि गाली को सुखरूप और दुःखरूप में ढालने वाला साँचा दूसरा है। वह साँचा आत्मा के अधीन है। वही संवेदना का साँचा है।

साधारण जनता को भीषण अतिशय प्रतीत होने वाली घटना को भी मुनिराज अपनी संवेदना के साँचे में ढालकर सुखरूप परिणत कर लेते हैं। यही कारण है कि गजसुकुमाल मुनि मस्तक जलने पर भी दुःख की अनुभूति से बचे रहे।

► ज्ञानी

ज्ञानीजन बालक के समान निर्विकार बनना चाहते हैं अथवा होते हैं। सच्चे ज्ञानी अपनी स्थिति बालक के समान बना भी लेते हैं। किसी नारी पर उनकी नजर पड़ती है तो उसे माता के रूप में ही देखते हैं। कोई गालियाँ देता है तो वह अपने निर्दोष हास्य से उसकी उपेक्षा कर देते हैं। सम्यग्ज्ञान का कवच प्रत्येक स्थिति में उनकी रक्षा करता है।

► ज्ञानी पुरुष और गाली

साधारणतया लोग गाली सुनते ही क्षुब्ध हो जाते हैं। क्षोभ की ज्वालाओं में विवेक घी बनकर भस्म हो जाता है। पर ज्ञानवान पुरुषों का चरित्र विचित्र होता है। वे गालियों में भी सत्य का शोध करते हैं।

ज्ञानी पुरुष गाली सुनकर सोचते हैं कि गाली देने वाला शरीर को गाली देता है या आत्मा को? अगर शरीर को गाली देता है तो इसमें मेरा क्या बिगाड़ हुआ? मैं शरीर नहीं हूँ। मैं शरीर से निराला सच्चिदानन्दमय चेतन हूँ। अगर आत्मा को गाली देता है तो इसकी और मेरी आत्मा समान है। इसके अतिरिक्त आत्मा को गाली लग नहीं सकती।

गाली देने वाला अपनी जिह्वा का दुरुपयोग कर पाप का उपार्जन करता है। वह मानसिक दुर्बलता का शिकार है, अतएव करुणा का पात्र है। जो करुणा का पात्र है उस पर क्रोध करना विवेकशीलता नहीं है।

गाली देने वाला अगर पाप करता है तो उसका मुकाबला करने के लिए मुझे पाप क्यों करना चाहिए? ऐसा करने से हम दोनों में क्या अन्तर रह जाएगा?

पाप से पाप का मुकाबला करने पर पापों की परम्परा अक्षय हो जाएगी। पाप का क्षय धर्म से हो सकता है। धर्म से ही पाप का प्रतिकार करना हितावह है।

► ज्ञानी और अज्ञानी

ज्ञानी पुरुष मन से, वचन से और तन से प्रतिक्षण पुण्यकार्य करके पुण्यप्रकृति का बन्ध करते हैं एवं अज्ञानी पापाचरण करके प्रतिपल पाप की पोटली बांधते हैं।

ज्ञानी का प्रत्येक कार्य विश्वकल्याण की कामना से होता है और अज्ञानी का स्वार्थलिप्सा से। अतएव ज्ञानी के कार्य उसे स्वर्ग का स्वामी बनाते हैं और अज्ञानी के कार्य उसे नरक का अतिथि बनाते हैं।

► क्रियाशील बनो

संसार में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो किसी कार्य की प्रशंसा में 'वाह! वाह' के नारे लगाते हैं और जब वही कार्य सिर पर आ पड़ता है तो एक ओर खिसक जाते हैं। इस प्रकार की दोहरी नीति से कोई भी कार्य सिद्ध नहीं

हो पाता। अतएव हमारी प्रामाणिकता का यह तकाजा है कि हम जिस कार्य को हृदय से अच्छा समझें, उस कार्य को क्रिया में उतारने का हृदय से प्रयास करें। दूसरों को खुश करने के लिए मुँह से वाह-वाह करना कार्यकताओं को और अपने अन्तःकरण को छलने की चालाकी है। चालाकी से दुनिया खुश हो सकती है, परमात्मा नहीं।

► वचन और कार्य

सौ निरर्थक बातें करने की अपेक्षा एक सार्थक कार्य करना अधिक श्रेयस्कर है। दूसरे के किसी सद्गुण की प्रशंसा करना अच्छा है, परन्तु उसे अपने जीवन में उतारने की प्रबल चेष्टा करना उससे भी अच्छा है। जैसे मक्खी गंदगी खोजती है, उसी प्रकार तुम दूसरों के दुर्गुण खोजोगे तो अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसा होगा। पराये दुर्गुणों पर दृष्टि डालने और उनका प्रचार करने की अपेक्षा चुपचाप अपने दुर्गुणों को पहचानना और उन्हें नष्ट करने का प्रयत्न करना लाख दर्जा श्रेष्ठ कार्य है।

► तर्क और श्रद्धा

बुद्धिवाद का यह जमाना है। मनुष्य अपने बुद्धिवैभव पर फूला नहीं समाता। प्रत्येक विषय में तर्क-वितर्क किया जाता है, पर केवल तर्कबुद्धि से काम नहीं चलता। तर्क तो पारे की तरह चपल है। 'तर्कोऽप्रतिष्ठः' तथा 'तक्का तत्थ न विज्जइ' इत्यादि अनुभवप्रसूत उद्गारों से प्राचीन शास्त्रकारों ने तर्क की अक्षमता घोषित की है। प्रकृति के निगूढतर रहस्य और सूक्ष्मतम अध्यात्म-तत्त्व बुद्धि या तर्क के विषय नहीं हैं। तर्क उनके निकट भी नहीं पहुँच पाता। ऐसी स्थिति में बुद्धि या तर्क के भरोसे बैठा रहने वाला सम्यक् ज्ञान से वंचित रहता है।

श्रद्धा ने मानव जाति का परमहित साधन किया है। जहाँ मनुष्य अपने को असहाय पाता है, वहाँ श्रद्धा उसकी सहायता करती है। इस प्रकार तर्क और श्रद्धा, दोनों का जहाँ समन्वय होता है, वहीं सत्य की उपलब्धि की सम्भावना हो सकती है।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-26



बिना अनुभूति का अक्षरीय ज्ञान

— परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

आज व्यक्ति अक्षरीय ज्ञान प्राप्त कर बड़ी डिग्रियाँ तो प्राप्त कर रहा है, पर स्व के ज्ञान के अभाव में जीवन में कितनी हास्यास्पद स्थिति बन जाती है, इसे आप कथानक के माध्यम से समझें।

प्राचीनकाल में काशी विश्वविद्यालय में बहुत से विद्यार्थी पढ़ते थे। एक गाँव का विद्यार्थी भी वहाँ पढ़ने आया। वह वहाँ का सारा अध्ययन बड़ी लगनपूर्वक करके उत्तीर्ण हो गया। तत्पश्चात् उसने अपने माता-पिता को समाचार प्रेषित किये कि मेरा विद्याध्ययन पूर्ण हो गया है। मैं वापिस घर आना चाहता हूँ। आप मुझे लेने के लिए जल्दी ही आना। सारे गाँव वालों को यह सूचना मिली कि अमुक का लड़का विद्वान् बन पंडित की पदवी पाकर काशी से आ रहा है तो सभी गाँव वाले उत्सुकतापूर्वक उसके स्वागत की तैयारी करने लगे। इधर वे पंडितजी अपने गाँव के बाहर पहुँचकर स्वागत के लिए आने वाले गाँव वाले लोगों की प्रतीक्षा करने हेतु एक वृक्ष की छाया में बैठ गए। तभी चार बहिनें जो पनघट पर पानी भरने आई थीं, वे परस्पर उन्हीं पंडितजी

के विषय में बातें करने लगी। वे बहिनें परस्पर कहने लगी कि ये पंडितजी काशी से पढ़कर भले ही आए हैं, पर लगता है कि इन्होंने केवल अक्षरीय ज्ञान प्राप्त किया है। कहावत के अनुसार इन्होंने पढ़ा है, पर गुना नहीं है।

अपनी इस अनुभूति का साक्षात्कार करने हेतु वे बहिनें उनके पास पहुँची और इधर-उधर की बातें करती हुई बोली— “पंडितजी! आप तो पढ़-लिखकर आ गए, पर क्या कहूँ?” पंडितजी ने पूछा— “क्यों क्या बात हुई? कहो कहो, जल्दी कहो।” वे बहिनें कहने लगी— “पंडितजी! क्या कहूँ, कहने की हिम्मत नहीं हो रही है।” पंडितजी बोले— “अरे बहिनी! आप संकोच क्यों कर रही हैं जो कुछ भी हो साफ-साफ कह दो। मैं जानने के लिए अत्यन्त उत्सुक हूँ।” वे बहिनें बोली— “पंडितजी! आप तो काशी पढ़ने के लिए गए थे, पर पीछे से आपकी पंडिताइन.....” कहती-कहती रुक गई। इस पर पंडितजी झुंझलाते हुए कहने लगे— “अरे, तुम चुप क्यों हो गई? कहो ना पंडिताइन को क्या हुआ?” “पंडितजी! आपकी पंडिताइन अर्थात् आपकी

धर्मपत्नी विधवा हो गई।” ज्योंही यह बात पंडितजी ने सुनी तो वे बड़े दुःखी हो फूट-फूटकर रोने लगे। उनको रोते देख उन बहिनों को हँसी आने लगी, पर बड़ी मुश्किल से हँसी को रोककर पंडितजी को ढाढ़स बंधाकर कहने लगी कि पंडितजी! अब रोने से क्या होने वाला है? जो होना था, सो हो गया। आप चुप रहिये और चलिये घर की तरफ। पर पंडितजी के अश्रुओं का निर्झर बन्द नहीं हुआ और इधर परिवार वाले तथा गाँव के सभी लोग उनका स्वागत करने के लिए वहाँ आ पहुँचे। वे बहिनें जिन्होंने बड़ी मुश्किल से हँसी रोक रखी थी, उस भीड़ का लाभ उठाते हुए वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गई। परिवार वाले और गाँव के सभी सदस्यों ने उन पंडितजी को इस प्रकार जोर-जोर से रोते देखकर अनुमान लगा लिया कि शायद किसी गमी के समाचार उन्हें मिले हैं, इसलिए ये इस तरह रो रहे हैं। वे सभी लोग भी रीति-रिवाज के अनुसार पंडितजी के रोने में साथ देने लगे और सभी रोते-रोते घर पहुँचे। घर पहुँचने के बाद भी बहुत देर तक रोने का कार्यक्रम चलता रहा। आखिर रोते-राते पंडितजी जब चुप हुए तो सभी ने पूछा कि क्या हुआ पंडितजी? किनकी मृत्यु के समाचार मिले हैं आपको? पंडितजी ने आश्चर्यपूर्वक कहा कि “किसकी मृत्यु? अरे! आप गाँव में रहते हो फिर भी आपको पता नहीं? बेचारी मेरी पंडिताइन विधवा हो गई।” यह सुनकर सभी लोग एक साथ खिलखिलाकर हँस पड़े और उनकी विधवा बहिन जो भैया का स्वागत करने के लिए आई हुई थी, वो कहने लगी कि “वाह भाई वाह! आपने भी खूब अपनी हँसी करवाई। अरे! आपके रहते हुए मेरी भाभी विधवा कैसे हो सकती है।” तब काशी से पढ़-लिखकर विद्वान् बनकर आए पंडितजी तर्क देते हुए

कहने लगे- “ओहो! तुम भी कैसी बात करती हो? मेरे रहते हुए तुम्हारी भाभी विधवा नहीं हो सकती है तो मैं पूछता हूँ कि मेरे रहते हुए तुम कैसे विधवा हो गई?” यह सुनकर सभी लोग पुनः खिलखिलाकर हँस पड़े। बहिन भी अपनी हँसी को रोक न सकी। कहा- “भाई! मेरे पतिदेव मर गए हैं। इसलिए मैं विधवा हो गई, पर मेरी भाभी के पतिदेव तो आप हैं, अतः आपके रहते हुए मेरी भाभी विधवा नहीं हो सकती है।” “अब समझा, ऐसी बात है क्या! ओह मैं कितना उल्लू बन गया। उन बहिनों ने भी मेरी अच्छी हँसी करवाई।” पूछा गया किन बहनों ने? पंडितजी ने उनका परिचय दिया तब घर के सदस्य इस बात का रहस्य पूछने उनके पास गए। उन्होंने बताया कि हमने देखा कि पंडितजी जहाँ बैठे थे वहाँ कीड़ी नगरा था। जब पंडितजी को बैठने के स्थान का भी विवेक नहीं है तो हमने अनुमान लगाया कि ये काशी से पढ़कर भले ही आए हैं, पर इनमें विवेक-ज्ञान का अभाव है। इसीलिए हमारे अनुमान का प्रत्यक्षीकरण हमने किया और हमारा अनुमान शत-प्रतिशत ठीक निकला।

बन्धुओ! इस कथानक से यह सबक ग्रहण करना है कि **ज्ञान सीखें अवश्य, पर विवेक का जागरण जीवन में अवश्य हो**, केवल तोता रटन ज्ञान से जीवन का सद्विकास नहीं हो सकता है। आज स्वाध्याय करने के प्रसंग से प्रायः मनुष्य केवल मूल को रट लेते हैं, पर उसका अर्थ क्या है? उसका रहस्य क्या है? यह नहीं जानते हैं। ज्ञान के आचार क्या हैं? इनका भी उन्हें ज्ञान नहीं रहता है। यही कारण है कि स्वाध्याय जिसका महान फल आत्मशुद्धि है, वह प्राप्त होने के बजाय कभी-कभी उल्टा प्रसंग भी उपस्थित हो जाता है।

साभार- नानेशवाणी-46 (दृष्टांत सुधा)

परम कल्याण के बोल

1. उदार भाव से सुपात्रदान देवे तो जीव का परमकल्याण होता है
2. धर्म से डिगते हुए को स्थिर करे तो जीव का परमकल्याण होता है
3. उग्र तप करने से जीव का परमकल्याण होता है
4. अग्लान भाव से वैयावृत्य करे तो जीव का परमकल्याण होता है

सुमुख गाथापति
राजीमति
धन्नामुनि
नन्दीषेण, पंथकमुनि



ज्ञान-ज्योति का आलोक



-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

ज्ञान को प्रकाश का पर्याय माना जाता है। ज्ञान का यह प्रकाश कैसे हो, यह समझने की बात है। बाहर जो प्रकाश है वह सूर्य का, विद्युत्जन्य या अग्निजन्य है। इस प्रकार जो साधन हैं और जिनमें अग्नि का निमित्त जुड़ता है, उनसे प्रकाश की प्राप्ति होती है। रत्न, मणि आदि से भी प्रकाश का प्रसंग बनता है, पर ज्ञान का प्रकाश इन सबसे भिन्न होता है। वह स्वयं में प्रकाशमान है। यह बात अलग है कि उस पर छाया या आवरण आ जाए तो उसका प्रकाशित रूप प्रकट नहीं हो पाता।

शास्त्रवचन है- **‘णाणस्स सव्वस्स पगासणाए’** इसमें जो निहितार्थ है वह यह है कि जहाँ-जहाँ ज्ञान पर आवरण आ गया है, ढक्कन लग गया है, उसे यदि हटा दें तो ज्ञान प्रकाशित हो जाएगा। ज्ञान का आलोक पूरे आत्मप्रदेशों में व्याप्त है। आत्मा एक द्रव्य है, जो असंख्यात प्रदेशात्मक है। ये सभी प्रदेश ज्ञान से प्रकाशित हों तथा उसमें छिपा सर्वज्ञान या सम्पूर्ण ज्ञान प्रकाशित हो, यह लक्ष्य होना चाहिये।

ज्ञान के चार प्रकार- **मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान** तथा **मनःपर्यवज्ञान** भी अपने-अपने विषय की दृष्टि से पूर्ण हैं। ये नहीं कहा जा सकता कि मतिज्ञान अपूर्ण है। यद्यपि सभी ज्ञान अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव से पूर्ण हैं तथापि भिन्न संदर्भों में इनके भावों में अंतर

देखा जा सकता है। इस प्रकार जब हम इकाई की बात करते हैं तब अर्थ भिन्न हो जाता है। यदि वे अर्थ करें कि प्रथम चार ज्ञान में भेद नहीं है, बल्कि वे आत्मा के साथ रहने वाली ज्ञान शक्तियाँ हैं। उन्हें पूर्ण रूप से प्रकाशित करना है तो उत्तरार्द्ध का अर्थात् आगे आने वाले पद का अर्थ होगा- अज्ञान मोह का नाश- **‘अण्णाण मोहस्स विवज्जणाय’**, उसके बिना ज्ञान सर्वरूप से प्रकाशित नहीं होगा। ज्ञान है तो अज्ञान मोह को नष्ट हो जाना चाहिए, पर ऐसा हमेशा नहीं होता। कभी-कभी व्यक्ति सोचता है कि उसे ज्ञान हो गया है, लेकिन वास्तव में पूर्ण ज्ञान नहीं होता, अज्ञान भी वहाँ जुड़ा रहता है।

भगवती सूत्र में शिवराजर्षि का कथन है। जब उन्होंने तापसी दीक्षा ली तब उन्हें अवधिज्ञान के विपरीत विभंगज्ञान हुआ। जितना वे देख रहे थे उसे ही मान लिया कि उससे आगे कुछ नहीं है। सारा विश्व उतने में ही सीमित है। इस प्रकार ज्ञान तो हुआ, पर साथ में अज्ञान भी रह गया। ऐसी स्थिति में ज्ञान-ज्योति पूर्ण रूप से प्रकाशित नहीं होगी। उसे प्रकाशित करना है तो अज्ञान और मोह को दूर करना होगा। **अज्ञान और मोह पड़े रहेंगे तो ज्ञान पूर्ण रूप से प्रकाशित नहीं होगा। यह भी होता है कि अज्ञान का स्वरूप क्या है इसे व्यक्ति जान नहीं पाता। अज्ञान का एक स्वरूप**

तो है अभाव, दूसरा है विपरीतता। वह किन-किन रूपों में व्यक्त होता है, इसे समझ लें।

गंगा और गोमती नाम की दो गायें थीं। हम जानते हैं कि लोग कभी-कभी पशुओं के भी नाम रख देते हैं। नाम लेने से ये पशु उस ओर दृष्टि कर लेते हैं। आज तो घर में गायें कम ही मिलेंगी। हाँ, कुत्तों के व्यवहार से हम भली-भाँति परिचित हैं। कोई आवाज लगाए- टॉनी, तो वह इस प्रकार से पुकारे जाने का अभ्यस्त होने के कारण उछलकर पास आ जाता है और मुँह ऊँचा करके देखने लगता है या भौंकने लगता है। तात्पर्य यह है कि नाम पुकारने के साथ ही वह अपनी हर्ष ध्वनि व्यक्त करता है। हम उसे समझ पाएँ या नहीं, यह अलग बात है। गंगा और गोमती दोनों गायें साथ-साथ चरने जातीं और वापस साथ-साथ लौटती थीं। दोनों में इतना स्नेह हो गया था कि एक साथ चरने जातीं और सायंकाल वापस साथ-साथ अपने-अपने घर लौटतीं। घटना शेखपुरा रियासत के राजगढ़ गाँव की है। गाँव में एक किसान था- दीनू। उसकी गाय थी गंगा तथा धनाढ्य सेठ हस्तीमल की गाय थी गोमती। एक बार गंगा ने बछड़े को जन्म दिया। दीनू और उसकी पत्नी प्रसन्न हुए। सोचा अभी तक हमने इसे सूखा घास खिलाया है हरी घास नहीं दी है, पर इसने बछड़ा दिया है तो इसे गुड़-दलिया खाने को दिया जाए। इस पर मन में उदासी आ गई। सोचा, स्वयं का ही पेट पालना कठिन है। पास में पैसे नहीं है, दलिया-गुड़ का जुगाड़ कैसे किया जाए? सहसा दीनू की पत्नी ने कहा- 'सेठ हस्तीमल से उधार मांग लाओ।' दीनू दौड़ा हुआ गया और गुड़-दलिया ले आया।

इधर गंगा कुछ दिन से बाहर चरने नहीं जा रही थी और गोमती चरने जाती तो दीनू के घर के सामने से निकलती तो रंभाती। गंगा भी भीतर से रंभाती। यह बात सेठ को अच्छी नहीं लगती। उसके मन में द्वेष-भाव पैदा हो गया। यह भी अज्ञान ही था। सेठ को यह नहीं सुहाया कि बड़े घर की गाय छोटे घर की गाय से दोस्ती करे।

गोमती को जंगल भेजने की कोशिश की गई, पर वह इधर-उधर घूमकर वहीं आ जाती। सेठ विचार में पड़ गया कि क्या करूँ? कैसे करूँ? गोमती को खूब मारा-पीटा गया, पर ज्योंही उसे छोड़ा जाता, वह दीनू के घर के सामने पहुँच जाती और रंभाने लगती। सेठ बहुत क्रोधित हुआ। हताशा में अब वह गाय के बदले दीनू से ईर्ष्या करने लगा। यह था अज्ञान का प्रकटीकरण।

गाय रंभाती थी तो सेठ का क्या बिगाड़ हो रहा था। पर अहं एवं अज्ञान बीच में आ रहा था कि मैं बड़ा सेठ हूँ। उस गरीब के घर के सामने मेरी गाय रंभाए, यह ठीक नहीं। गाय के कारण दीनू से ईर्ष्या करने वाला सेठ सोचने लगा कि इसे कैसे दबाया जाए? तभी उसे ध्यान आया कि दीनू ने गुड़-दलिया लिया था, जिसका चुकारा नहीं हुआ है। बस, उसे कारण मिल गया कि वही निकलवाना है दीनू से।

एक दिन वह सेठ दीनू के घर पहुँचा और कहने लगा- "तुमने अभी तक पैसे नहीं चुकाए। देखो मैं तुम्हें सात दिन की मोहलत देता हूँ अन्यथा दुगुनी रकम वसूली करूँगा और यदि एक माह में भी नहीं चुकाये तो चौगुनी वसूली करूँगा।" यह था अज्ञान के प्रकटीकरण का रूप। ऐसे अज्ञान को प्रोत्साहन देते रहें तो ज्ञान प्रकाशन की स्थिति ही नहीं बनेगी। यही है 'मन-मंदिर में घुप्प है अंधेरा' वाली बात। मन-मंदिर में यह अंधेरा है अज्ञान का, अहं का। 'अहं' का ही एक रूप ईर्ष्या है। उसी से डाह, मत्सर आदि भाव पनपते हैं, जिनकी भिन्न-भिन्न रूपों में अभिव्यक्ति होती है। आपने देखा होगा कि पानी उछलता है। खूब गरम कर दिया जाये और ढक्कन उधाड़ा जाए तो वहाँ से भाप निकलेगी। कोई चाहे उस भाप में मुँह देख लूँ तो मुँह झुलस जाएगा। यदि ठंडे पानी का बर्तन हो तो उसमें मुँह देखा जा सकेगा। इसी प्रकार हमारे भीतर के दर्पण की बात है। जब उसमें अहं का या क्रोध का उबाला आ जाता है, भाप निकलने लगती है तब वहाँ आत्मा के भाव तिरोहित हो जाते हैं और ज्ञान का प्रकाश लुप्त हो जाता है।

बात छोटी-सी थी, पर सेठ के मन में फितूर आ गया। गरीब किसान के साथ खेल-खेलने लगा। अत्याचार और शोषण की प्रवृत्ति उसमें उत्पन्न हो गई कि 'यदि सात दिनों में नहीं चुका सकते तो अपनी गंगा को बेच दो।' उसकी आँख में गंगा किरकिरी बनकर खटकने लगी थी। गंगा के कारण गोमती रंभाती है। वह चाहता था कि यदि गंगा निकल जाएगी तो फिर गोमती नहीं रंभाएगी। इसलिए वह दबाव डालने लगा।

आजकल कुछ नीतियाँ ऐसी ही हैं। चाहे पारिवारिक क्षेत्र हो, सामाजिक या धार्मिक हो अथवा राजनीतिक क्षेत्र, सभी जगह दबाव की नीति अपनाई जाती है। कहाँ, कैसे, किसे दबाया जाए यही ध्यान रखा जाता है। कभी-कभी कहते हैं- भारत पर ऋण है, अन्य देशों का दबाव पड़ रहा है, किन कारणों से? कारणों पर तो विचार नहीं किया जाता। कारण है भारतीय नागरिकों की संग्रह-वृत्ति। वे चाहते हैं, अपनी पूर्ति कर लूँ। पूर्ति तक कोई बात नहीं, पर जोड़-तोड़ कर रखना, चाहे भारत पर कितना ही कर्ज हो, यह तो अनुचित है। कर्जा है तो फिर दबने का प्रसंग बनेगा। कर्जदार ऊँचा माथा नहीं कर सकेगा। संसार में ऐसे तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं, जो किसी के सामने माथा ऊँचा नहीं कर सकते-

(1) जिसके घर से लक्ष्मी विदा हो चुकी है, वह सोचता है कि समाज में मेरी प्रतिष्ठा नहीं रही, लोग मेरी हँसी उड़ाएँगे।

(2) जो कर्जदार है, वह सिर उठाकर नहीं चल सकता।

(3) जो किसी के उपकारों से दबा है, वह सिर उठाकर नहीं चल सकता।

दीनू ने कहा- मेरे पास जैसे ही पैसे आएँगे, मैं कर्ज चुका दूँगा। सेठ ने सोचा- कहीं इसने सात दिन में चुकारा कर दिया तो बात नहीं बनेगी। मेरी योजना तो इसे फँसाने की है, ताकि गंगा यहाँ से निकल जाए। दिलिये-गुड़ के कितने पैसे रहे होंगे? पर गंगा का कोप दीनू पर

था। वह सोता था तब भी चैन नहीं पड़ता था। गंगा आँखों में झूलने लगती थी। सोता तो रंभाने की आवाज कानों में गूँजती। चिन्तन दौड़ा- कैसे उसे अलग करूँ? संयोग ऐसा बना कि एक शाम दीनू ने देखा कि गंगा के आने का समय हो गया था, पर वह तब तक लौटी नहीं थी। काफी देर हो गई थी। छोटा बछड़ा बा-बा रंभा रहा था क्योंकि भूख से व्याकुल जो था। दीनू ने सोचा- कहीं वह सेठ के घर तो नहीं चली गई। सेठ के घर पहुँचा तो सेठ भी बेचैन था कि मेरी गोमती भी नहीं आई है। चलो दीनू देखें, पता नहीं आज दोनों को क्या हो गया? दोनों निकले। जिधर से कुछ आवाज आती उधर बढ़ने लगते। जंगल और अंधेरी रात, कैसे खोजें? दीनू और सेठ दोनों गायों का नाम पुकारते हुए आगे बढ़ रहे थे।

सहसा गंगा की आवाज सुनाई पड़ी। आगे बढ़े तो देखा कि गंगा एक भेड़िये से मुकाबला कर रही थी। भेड़िया खतरनाक जन्तु होता है, छोटे पशुओं को मारकर खा जाता है। गंगा उस पर बार-बार सींगों से प्रहार कर रही थी। वह थोड़ी दूर जाता, पर फिर गोमती की ओर लौटने का प्रयास करता। गंगा फिर उसे हटाने की कोशिश करती। दीनू को देखते ही गंगा जोर-जोर से रंभाने लगी। भेड़िये को मौका मिला, वह फिर उधर बढ़ने लगा। गोमती ने एक बछड़े का प्रसव किया था और भेड़िया उसे अपना आहार बनाना चाहता था। गंगा उसे बचाने के लिए भेड़िये से जूझ रही थी। यह दृश्य देखकर सेठ की आँखें खुल गई। वह तो गंगा का बुरा सोच रहा था, पर गंगा ने तो गोमती के बछड़े को बचाया था। सेठ ने दीनू का हाथ पकड़ा- भाई! मित्रता हो तो ऐसी हो, जैसे इन दोनों की। इसने तुम्हारा कर्ज ही नहीं उतारा, मुझ पर कर्ज चढ़ा भी दिया है। भाई, अब ध्यान रखना इसको सूखी घास मत खिलाना। मैं अपने घर से घास की व्यवस्था करवा दूँगा। क्योंकि मुझ पर जो ऋण चढ़ा है उसका भुगतान मुझे करना है। तो हम समझें कि बात घटना की नहीं, उस संदेश की है, जो इस घटना से मिलता है।

मन-मंदिर के घुप्प अंधेरे में ज्ञान-ज्योति प्रकट हो जाए, आलोक भर जाए, ऐसी स्थिति बने इस हेतु प्रयत्नशील रहना चाहिये। ऐसा आलोक प्रकट करने के लिए प्रभु ने कहा है- **‘अण्णाण मोहरस्स विवज्जणाय’** अज्ञान-मोह पड़ा रहा तो ज्ञान प्रकट नहीं होगा। अज्ञान के भिन्न-भिन्न रूप हैं। कभी वह किसी रूप में प्रभावित करता है तो कभी किसी अन्य रूप में। क्रोध, मान, माया, ईर्ष्या, लोभ, डाह, मत्सर आदि, ये अज्ञान के पर्याय हैं। सेठ हस्तीमल के अन्दर भी अज्ञान पैदा हुआ था, पर गंगा की कार्यशैली ने उसे ज्ञान में परिवर्तित कर दिया। व्यक्ति की कार्यशैली किसी भी संशय का समाधान कर देती है।

कहा गया है- **‘गुर्वस्तु मौनः संशयः छिन्न’** गुरु का मौन भी शिष्य के संशय को छिन्न करने वाला है। कार्यशैली तथा मौन से संशय छिन्न होता है। ऐसा नहीं है कि बोलने से ही समाधान होता हो। मौन आचरण भी उत्तम समाधान है। हस्तीमल सेठ में अज्ञान पनपा था, पर जड़ें गहरी नहीं हुई थी। यदि वह ज्यादा समय रहता, जड़ें गहराई में चली जाती तो निकालना कठिन होता। वे जड़ें सुदृढ़ नहीं हुई थी। ऐसी गाँठें खोलने में अधिक दिक्कत नहीं होती। गंगा के उत्तम कार्य से सेठ के ज्ञानचक्षु खुल गए। ज्ञानचक्षु खुले, अज्ञान तिरोहित हुआ तो आत्मीयता और मित्रता का वातावरण बन गया।

व्यक्ति के भीतर अलग-अलग वृत्तियाँ पनपती रहती हैं। ये वृत्तियाँ तीन प्रकार की कही गई हैं- **सात्विक, राजसी, तामसिक**। तामसिक वृत्ति अज्ञान का ही प्रतीक है। तामसी का भावों से सम्बन्ध होता है। जहाँ चिंगारी है, वहाँ तपन बढ़ेगी। वैर से वैर की परम्परा बढ़ेगी। अज्ञान का पर्दा सघन होगा। राजसी वृत्ति, राजसी या तामसी वृत्ति से टकराएगी तो वहाँ भी अशान्ति उत्पन्न होगी। यदि सात्विक वृत्ति उभर आई तो शांति का वातावरण बन जाएगा। अर्जुन माली में तामसी

वृत्ति थी, पर जब सेठ सुदर्शन की सात्विक वृत्ति से उसकी टकराहट हुई तो सात्विक वृत्ति के सामने तामसिक वृत्ति टिक नहीं पाई। उसे मिटना ही पड़ा। दया-करुणा का प्रादुर्भाव अनोखा आलोक बिखेर देता है। कौरवों-पांडवों के बीच युद्ध हुआ। राजसी से तामसी वृत्ति टकराई तो दुर्योधन का नाश हुआ, पर वृत्ति शांत नहीं हुई। तामसी वृत्ति से कंस, जरासंध की टकराहट हुई, पर सुधार नहीं हुआ बल्कि वैरानुबंधी वैर की परम्परा जुड़ती चली गई। अज्ञान की घनी अंधेरी रात्रि में जुगनू की चमक कितना प्रकाश करेगी? कभी-कभी किरणें फैल नहीं पाती। यदि ज्ञान का सम्पूर्ण रूप से आलोक करना है तो तामसी और राजसी वृत्तियों का शमन करना होगा, तभी ज्ञान-ज्योति का प्रकटीकरण होगा अन्यथा जुगनू की भाँति टिमटिमाते प्रकाश को तामसी वृत्ति दबोच लेगी। सात्विक वृत्ति से ज्ञान की किरण को बढ़ाया जाना चाहिये, क्योंकि यदि अनुरूप सहयोग न मिला तो ज्ञान का प्रकाश अहं से विषाक्त हो जाएगा। जैसे दीपक में तेल, बाती तो हो, पर प्रकाश की लौ न मिले तो आलोक नहीं फैलेगा। यदि उस तेल में पानी मिल जाए तो भी ज्योति लड़खड़ाएगी। वैसे ही अहं का पानी ज्ञान की ज्योति को दुर्बल बनाता है।

अज्ञान और मोह को दूर करें तभी ज्ञान-ज्योति प्रकट होगी तथा आलोक को विकीर्ण करेगी। ज्ञान-ज्योति को सही तरीके से आलोकित करने के लिए सात्विक वृत्ति का विकास करें, गहनता से आत्म-निरीक्षण करें तभी राजसी, तामसी वृत्ति का उभार होगा। जब ऐसा होगा तभी विमल जिनेश्वर के दर्शन होंगे और सभी आत्मप्रदेश ज्ञान से आलोकित हो जाएँगे।

साभार- श्री रामउवाच-4 (दो कदम सूर्योदय की ओर)



मधुर वचन

ऐसी वाणी बोलिए

15-16 मार्च 2023 अंक से आगे...

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. द्वारा लिखित 'ऐसी वाणी बोलिए' धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 'मित वचन' पूर्ण होने के पश्चात् 'मधुर वचन' प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय की व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है.....

- ★ मीठा बोलना अथवा विनम्रतापूर्वक बोलना अथवा कठोरता और कर्कशता से रहित बोलना। "णो व णं फरुसं वइज्जा" कठोर वचन न बोलें। (आचारांग सूत्र 2/1/6 (360))
- ★ सत्य, हित और मितभाषी बनने के साथ-साथ मधुर भाषी बनना भी आवश्यक है, क्योंकि जब तक कोई बात सही तरीके से नहीं कही जाती, तब तक वह चाहे सत्य हो, हितकारी हो और कम शब्दों में कही गई हो, फिर भी वह अच्छी नहीं लगती।
- ★ जब हम कुछ बोलते हैं तो सामने वाला व्यक्ति हमारे तरीके को देखता है, हमारा तरीका उसे अच्छा (+) लगता है तो वो अपना सिर हिलाता है, मुस्कराता है अथवा शांत भाव से हमारी बात सुनता है और यदि हमारा तरीका उसे बुरा लगता है तो वो हमारा विरोध करता है, उदास होता है अथवा हमसे दूर भाग जाता है। (अगले पेज पर दिये गये 8 उदाहरणों को लोग प्रायः निगेटिव (-) व्यवहार के रूप में देखते हैं)
- ★ हमारे तरीके में सबसे Important (अहम) चीज है हमारी Tone (लहजा, स्वर) और हमारी Body Language (शारीरिक हाव-भाव)।
- ★ "The tone that we use in our conversation can make or break what we say" हमारा लहजा हमारी बात को बना भी सकता है और बिगाड़ भी सकता है।

आप Type X हैं या Type Y ?

Type X

जिनमें Patience (धैर्य) कम होता है अथवा जो अच्छे के साथ अच्छा और बुरे के साथ बुरा करने की प्रवृत्ति (आदत) वाले होते हैं, वे बुरा देखते ही अपनी मधुरता छोड़ देते हैं और कर्कश हो जाते हैं।

Type Y

जो मौका आने पर Patience रख लेते हैं अथवा जिनका व्यवहार दूसरों के व्यवहार पर निर्भर (Depend) नहीं करता बल्कि जो स्वाभाविक रूप से विनम्र (Polite) होते हैं, यानी अच्छे के साथ अच्छे और बुरे के साथ भी अच्छे, वे प्रायः मधुर भाषी ही होते हैं।

सम्यक् देव-गुरु-धर्म से जुड़ने के पहले आप किस रूप में थे?

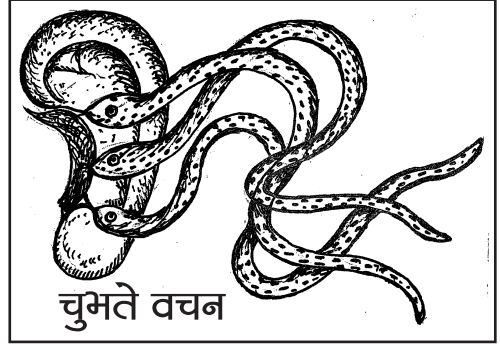
Type :

सम्यक् देव-गुरु-धर्म से जुड़ने के बाद आप किस रूप में हैं?

Type :

संसार में लोग अनेक प्रकार से कठोर और कर्कश वचनों का प्रयोग करते हैं। यहाँ उसके कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं -

1. किसी व्यक्ति की बार-बार शिकायत/आलोचना करना
2. उल्टा जवाब देना
3. बात काटना
4. बात-बात पर टोकना
5. दबावपूर्वक बोलना
6. अभद्र शब्दों का प्रयोग करना
7. बहस करना
8. ओवर रिएक्ट करना



आत्महितैषी श्रावक-श्राविकाओं को इनका वर्जन करके मधुर वचनों का ही प्रयोग करना चाहिए अथवा मौन रहना चाहिए।

1 किसी व्यक्ति की बार-बार शिकायत/आलोचना करना

★ वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेशाणुबंधीणि महब्भयाणि॥

वाणी से बोलते हुए दुष्ट और कठोर वचन जन्म-जन्मान्तर में वैर और भय के कारण बन जाते हैं।

(श्री दशवैकालिक सूत्र - 9/3/7)

★ 'He Should She Should Attitude' (उसे ये करना ही चाहिए, उसे वो करना ही चाहिए, ऐसी सोच वाले लोग सबसे अधिक प्रतिक्रियाशील होते हैं। ऐसे लोग अक्सर दूसरों को अपने साँचे में फिट करने की कोशिश करते रहते हैं। व्यक्ति यदि इनके साँचे में फिट हो गया तब तो ठीक, वरना ये परेशान हो जाते हैं। परेशान होकर कुछ लोग तो अंदर ही अंदर बड़बड़ करते हैं और कुछ लोग सीधा उस व्यक्ति पर अटैक करते हैं। उसकी शिकायत करते हैं, उस पर चिल्लाते हैं और उसकी गलतियों को गिना-गिनाकर उसे बताते हैं कि वो कितना बुरा और नालायक है। आइए! अब हम देखते हैं कि लोग किस-किस तरीके से शिकायत करते हैं और उसके क्या-क्या परिणाम हो सकते हैं -

- (A) **किसी को काम के संबंध में सुनाना :** 'तुम कोई काम ढंग से नहीं करते। सफाई नाम की कोई चीज ही नहीं है। तुमसे कराने से अच्छा तो मैं खुद ही कर लूंगी...।'
- (B) **स्वभाव के विषय में सुनाना :** 'तुम एक नंबर के गुस्सैल हो। घमंड तुम्हारे नाक पर चढ़ा रहता है। तुम्हें व्यवहार निभाना आता ही नहीं। तुमसे हम परेशान हो चुके हैं। तुम्हें कितनी बार कह दिया कि थोड़ी शांति रखो, पर तुम कुछ समझते ही नहीं। थोड़ा तो विनय होना चाहिए।'
- (C) **बुद्धि के विषय में सुनाना :** 'तुम्हें अकल कब आएगी? कितना समझाना पड़ता है, फिर भी नहीं समझते। ध्यान कहाँ रहता है तुम्हारा? कभी ढंग से पढ़ाई नहीं करते। थोड़ा तो मन लगाया करो। नहीं पढ़ोगे तो हमेशा बुद्धु ही रह जाओगे।'

- (D) **धर्म के विषय में सुनाना :** 'संस्कार नाम की चीज नहीं है। खाली इधर-उधर भटकते हो। कभी तो स्थानक जाना चाहिए, सामायिक करनी चाहिए। दिन-रात पैसा-पैसा करते हो, मरोगे तो सीने पर बांध के जाओगे क्या?'
- (E) **व्यापार-धंधे के विषय में सुनाना :** 'तुम्हारा दिमाग हमेशा उलटा ही चलता है। तुम्हें निर्णय लेना नहीं आता, फिर भी पंचायती करते हो। तुम्हें कितनी बार कह दिया कि मेरे से पूछ के काम करो, पर नहीं। तुम्हें तो दुनिया को दिखाना है ना कि तुम कितने होशियार हो, इस बार घाटा लगाया तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा...।'
- (F) **संघ में श्रावक-श्राविका को सुनाना :** 'तुम लोग किसी काम में सहयोग नहीं करते। सारा काम करने का ठेका हमारा ही है क्या? कभी तो तुम लोगों को भी विहार सेवा में अथवा संघ की किसी गतिविधियों में हिस्सा लेना चाहिए। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति की एक अथवा अनेक बार आलोचना करना -

Note - क्या आपको लगता है कि इस प्रकार से शिकायत करने पर कोई आपकी बात सुनेगा?

- ★ ये मनुष्य की कमजोरी है कि उसे अपनी बुराई सुनना अच्छा नहीं लगता। जैसे ही कोई उसकी बुराई करता है, वह उग्र हो जाता है और अपना बचाव करने लगता है।
- ★ अनेकानेक परिवारों में यह देखा गया है कि जिस व्यक्ति से पूरे घर के लोग परेशान हैं, वे उस व्यक्ति की ढेरों गलतियाँ गिनाते हैं, परंतु जब वह बात उस व्यक्ति से पूछी जाती है, तब वह अपनी एक भी गलती को स्वीकार नहीं करता। हर बात (पॉइन्ट) पर उसका अपना एक तर्क तैयार रहता है - 'मैंने कुछ किया ही नहीं। उसने वैसा कहा, तब मैंने वैसा कहा। उसकी तो आदत ही खराब है। वो हमेशा बुराई ही करता है। मैंने आज तक किसी का बुरा नहीं किया, फिर भी मुझे इतना सुनना पड़ता है। मैं जितना सहन करती हूँ, उतना कोई नहीं करता होगा। मेरी जगह कोई और हो तो भाग ही जाए...आदि।'
- ★ हम गलत देख नहीं सकते, इसलिए शिकायत कर देते हैं और सामने वाला गलत सुन नहीं सकता, इसलिए वो हमारी बात काट देता है। हमारी बात कटती है तो हमें और तेज गुस्सा आता है, परिणामस्वरूप हमारा भी मन खराब होता है, सामने वाले का भी मन खराब होता है और आपसी संबंध भी खराब होते हैं।
- ★ अतः शिकायत करने के बजाय हमें अपनी बात प्रेम से व मधुरता से कहनी चाहिए। हमारे लहजे में कहीं भी यह नहीं झलकना चाहिए कि हम टॉर्चर कर रहे हैं, बल्कि हमारे लहजे से यह लगना चाहिए कि हम सामने वाले का भला चाहते हैं। हम उसकी केयर करते हैं और हम उसे बहुत योग्य समझते हैं।
- ★ हमारे व्यावहारिक जीवन में बहुत सारी सिचुएशन आती है, उन्हें हेण्डल करते हुए हमें केवल इतना ध्यान रखना है कि हमारा लहजा शिकायती न हो, बल्कि सहज हो।

कुछ Examples (उदाहरणों) से समझते हैं -

(i) किसी से कोई काम करवाने के लिए सीधे मुँह न बोलकर शिकायती लहजे में बोलते हैं :-

- ★ **(i) Situation 1 :** बिस्तर पर बच्चे ने कुछ बिखेर दिया और उठाया नहीं।

तरीका 1

देखते ही चिल्लाना : 'तुम कितने लापरवाह हो, हमेशा बिखेर कर छोड़ देते हो। क्या तुम घर को कूड़ाखाना बनाना चाहते हो?'

तरीका 2

सहजता से : शौर्य! प्लीज बिस्तर से अपना सामान उठा लो।

- ★ **(ii) Situation 2 :** घर का काम ज्यादा है, थकान भी है, बच्चों से मदद की अपेक्षा है, पर उन्हें खुद से उपज ही नहीं रहा है कि हम कुछ हेल्प करा दें।

तरीका 1

टॉट कसना : घर में इतना काम है पर तुम लोगों को खुद से कभी उपजता ही नहीं है, इतना तो विवेक होना चाहिए कि छोटे-छोटे काम कर दें।

Note - इस तरीके से बच्चा काम भी करेगा तो अरुचि से। वो चिढ़ भी सकता है। यदि आपका तरीका लगातार ऐसा रहा तो कुछ दिनों में बच्चा जवाब देना भी सीख जाएगा।

तरीका 2

जानकारी देना : आज तुम मेरी थोड़ी हेल्प कर दो तो मुझे अच्छा लगेगा।

अथवा, बच्चों से पूछना : क्या तुम मेरे काम में थोड़ी हेल्प करोगे ?

Note - इस तरीके में कोई दबाव नहीं है, चॉइस करने का मौका भी बच्चों को दिया गया है। इससे बच्चे खुशी से काम कर देते हैं।

Note - कुछ लोग निठला, काम चोर, आलसी, बेकार जैसे शब्दों का प्रयोग करके काम करवाते हैं। श्रावक के लिए इन शब्दों का प्रयोग वर्जनीय है।

- ★ **(iii) Situation 3 :** खाना खाने का समय है और घर के सदस्य एक आवाज में कभी भी नहीं आते।

तरीका 1

लगातार आवाज लगाना, गुस्सा करना : खाने का समय हो रहा है। तुम लोग कभी एक बार में नहीं आ रहे हो क्या ? पहले आओ, वरना पड़े रहना। खुद लेकर जीमना...। इस प्रकार जब तक नहीं आएँ, तब तक बीच-बीच में बोलते रहना। खाने बैठ जाएँ, तब तक भी बोलते रहना।

तरीका 2

प्रश्न पूछना : अभी खाना लगाऊँ या 10 मिनट बाद ?

Note - ज्यादा बोलने से हमारी वेल्यू खत्म हो जाएगी। फिर कोई हमारी बात सुनेगा ही नहीं, बल्कि और ज्यादा लेट से आएंगे और हम चिल्लाते ही रहेंगे। इससे अच्छा प्रश्न पूछकर चॉइस उन पर छोड़ देना चाहिए।

- ★ किसी से काम करवाने के लिए उसे :-
प्रेम से कहें : 'ये काम कर दो ना।'
उनसे पूछें/रिक्वेस्ट करें : 'ये काम कर दोगे क्या ?'
उसकी अनुकूलता के बारे में पूछें : 'अनुकूलता तो है ना।'
उन्हें कहें : अनुकूलता नहीं हो तो मुझसे निःसंकोच कह देना।
काम करवाने के बाद : धन्यवाद दें।

Note - आप इतनी शालीनता से कहेंगे तो आपका काम आसान हो जाएगा और शिकायत करते रहेंगे तो आपका आसान सा काम भी मुश्किल हो जाएगा। इसका अनुभव तो आपने किया ही होगा!

— क्रमशः



श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र

संकलनकर्ता- सरिता बैंगानी, कोलकाता

15-16 मार्च 2023 अंक से आगे...

पूर्व चित्रण - प्रभु द्वारा गौतम स्वामी को लक्ष्य करके दिया गया उद्बोधन प्रस्तुत अध्ययन में संकलित है। भगवान महावीर स्वामी ने वृक्ष के पत्ते, ओस की बूँदों के दृष्टांत से जीवन की नश्वरता एवं अस्थिरता को बताया है। मनुष्य जीवन की दुर्लभता के 12 कारण, मनुष्य जन्म की प्राप्ति के बाद आर्यत्व, पाँचों इन्द्रियों की पूर्णता, उत्तम धर्म श्रवण का अवसर, उस पर श्रद्धा और ऐसे धर्म का आचरण दुर्लभ बताया है।

दुर्लभता की इन घाटियों को पार कर लेने पर भी और इनका संयोग मिलने पर भी भगवान महावीर स्वामी ने क्षणभर का भी प्रमाद करने को हितकारी नहीं कहा है, क्योंकि आयु का नाश प्रति समय हो रहा है और उसके प्रभाव से धर्म साधना के संबंध में इस प्रकार फरमाते हैं-

**परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
सं सत्व-बले य हायई, समयं गौयम ! मा वमायए॥26॥**

भावार्थ - गौतम! तुम्हारा शरीर जीर्ण-नष्ट हो रहा है, केश सफेद हो रहे हैं, शरीर के समस्त बलों से बलहीन हो रहे हो। ध्यान, स्वाध्याय, भिक्षाचर्या आदि करने की शक्ति भी कम होती जा रही है। इसलिए गौतम! जब तक यह सर्वबल विद्यमान है, तब तक तुम अपनी आत्मा का कल्याण करने में समय मात्र का भी प्रमाद मत करो। क्योंकि सर्व बल विद्यमान होने पर ही तप, संयम की आराधना करने का कार्य सम्पन्न हो सकता है।

सत्त्व-बले यानी दस प्रकार के बल प्राण।

इसका तात्पर्य यह है- यद्यपि श्री गौतम स्वामी के शरीर में कोई रोग, पीड़ा नहीं थी और न इन्द्रियों की शक्ति क्षीण हुई थी, फिर भी समस्त साधकों को सम्बोधित करते हुए गौतम स्वामी को भगवान महावीर स्वामी ने कहा कि जो बल पहले पुष्ट थे वे बल आयु के साथ प्रति समय क्षीण होते चले जा रहे हैं। इन्द्रियों की क्षीणता का प्रभाव हमारे जीवन में इस प्रकार होता है-

1. **श्रोत्रेन्द्रिय बल की क्षीणता-** जब तक श्रोत्र बल है तब तक जीव को धर्म श्रवण करने में तत्पर रहना चाहिए, क्योंकि धर्म सुनने से ही उसकी आराधना की शुद्धि हो पाती है। धर्मचर्चा, प्रवचन, कल्याण आदि सम्यक् प्रकार से हो पाता है। ज्ञान के बिना धर्म आचरण धीरे-धीरे लुप्त होता चला जाता है।
2. **चक्षुइन्द्रिय बल की क्षीणता-** जैसे-जैसे चक्षु बल क्षीण होता चला जाता है- जीवदया, प्रतिलेखन, स्वाध्याय, गुरुदर्शन आदि के रूप में धर्म आराधना नहीं हो पाती है।
3. **घ्राणेन्द्रिय बल की क्षीणता-** नासिका इन्द्रिय का बल जैसा पहले था वैसा बल अब नहीं अतएव सुगंध-दुर्गन्ध के प्रति राग-द्वेष का परित्याग करके समत्व धर्म का पालन करना संभव नहीं होता है।

4. **रसनेन्द्रिय बल की क्षीणता**— जिह्वा में रस ग्रहण करने का बल तथा वचन उच्चारण बल से होता है। जिह्वा बल क्षीण होने पर स्वाद के प्रति राग-द्वेष का त्याग, स्वाध्याय करना, वाचना, उपदेश एवं प्रेरणा देना, ऐसे सहज रूप से धर्म आराधना करना संभव नहीं हो पाता है।
5. **स्पर्शेन्द्रिय बल की क्षीणता**— जब तक स्पर्श बल प्रबल है, तब तक जीव शीत-उष्ण, हल्का-भारी आदि परिषर्षणों पर विजय प्राप्त करके गोचरी, विहार सेवा, कायक्लेश, तप, संयम आदि उत्तम धर्म साधना कर सकता है, अन्यथा स्पर्शेन्द्रिय बल के क्षीण होने से जीव धर्म आचरण से प्रायः सर्वथा वंचित रह जाता है।

**अरई गंडं विसूइया, आयंका विविहा फुसंति ते।
विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं, समयं गीयम! मा पमायए॥27॥**

भावार्थ - उद्वेग, फोड़ा-फुन्सी, विशूचिका अर्थात् हैजा आदि तथा विविध प्रकार के अन्य शीघ्र घातक रोग तुम्हारे शरीर को स्पर्श कर सकते हैं, जिससे तुम्हारा शरीर विपद्ग्रस्त अर्थात् शक्तिहीन तथा विध्वस्त हो सकता है। इसलिए गौतम! समय मात्र का भी प्रमाद मत करना।

इसका तात्पर्य यह है— जब तक यह शरीर निरोगी और स्वस्थ है, जब तक जरा दूर है, जब तक इन्द्रियों की शक्ति क्षीण नहीं हुई है और जब तक आयु का अंत नहीं आया है तब तक विवेकी पुरुष को आत्मकल्याण के लिए पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। अतः जो भी मोक्ष अभिलाषी है उन सभी को भगवान महावीर द्वारा कथित इस रत्नत्रय मार्ग को जानने का तथा उसका पालन करने में एक समय मात्र भी व्यर्थ नहीं करना चाहिए।

— क्रमशः

ज्ञान-फुलवारी (मार्च 2023 धार्मिक अंक) के सही हल

प्रश्न 1. (द) अप्रतिपाती अवधिज्ञान	पृष्ठ 29
प्रश्न 2. (द) निशीथ चूर्णि	पृष्ठ 03
प्रश्न 3. (ब) 1008	पृष्ठ 32
प्रश्न 4. (अ) 1	पृष्ठ 31
प्रश्न 5. (स) उपरोक्त दोनों	पृष्ठ 30
प्रश्न 6. (ब) आँखों पर पट्टी के समान	पृष्ठ 45
प्रश्न 7. (द) उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा.	पृष्ठ 68
प्रश्न 8. (द) उपरोक्त सभी	पृष्ठ 21
प्रश्न 9. (अ) हेमराजजी का	पृष्ठ 41
प्रश्न 10. (द) कौशाम्बी	पृष्ठ 38

ज्ञान-फुलवारी (मार्च 2023 धार्मिक अंक) के विजेता

- | | |
|--------------------------------|--------------------------------------|
| 1. वन्दनाजी भूरा, नोखामण्डी | 2. लक्ष्मीलालजी बोरदिया, चित्तौड़गढ़ |
| 3. इन्द्राजी पारख, राजनांदगाँव | 4. संगीताजी संघवी, इन्दौर |
| 5. अरूणाजी मुणोत, जलगाँव | |



तिर्यच के भेद

सागर से भी गहरा
जैन धर्म का तत्त्व ज्ञान है, इसमें जितना
उतरते जाएंगे उतनी ही तिरने की संभावना बढ़ती
जाती है। जैन धर्म, तत्त्व ज्ञान, जैन धर्म का मौलिक
इतिहास तथा लोकालोक आदि के बारे में सूक्ष्म से सूक्ष्म
जानकारी जन-जन के आत्मकल्याण हेतु देने का
प्रयास किया जा रहा है। इसे अवश्य पढ़ें
और श्रमणोपासक से जुड़े रहें।

15-16 मार्च 2023 से आगे.....

प्रश्न 16. सम्मूर्च्छिम या गर्भज तिर्यच पंचेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर पाँच प्रकार के होते हैं- जलचर, चतुष्पद स्थलचर, खेचर, उरपरिसर्प स्थलचर और भुजपरिसर्प स्थलचर।

प्रश्न 17. जलचर किसको कहते हैं?

उत्तर प्रधानता से जल के आधार पर रहने वाले तिर्यच पंचेन्द्रिय जलचर कहलाते हैं। जैसे- मछली, कछुआ आदि।

प्रश्न 18. चतुष्पद स्थलचर किसे कहते हैं?

उत्तर प्रधानता से जमीन पर रहने वाले चार पैरों वाले तिर्यच पंचेन्द्रिय चतुष्पद स्थलचर कहलाते हैं। जैसे- गाय, बकरी, शेर आदि।

प्रश्न 19. चतुष्पद स्थलचर तिर्यच पंचेन्द्रिय के कितने भेद हैं?

उत्तर चार- एक खुर, दो खुर, गंडीपद और सनखपद।

प्रश्न 20. एक खुर किसे कहते हैं?

उत्तर जिनके पैर में एक खुर हो। जैसे- घोड़ा, गधा आदि।

प्रश्न 21. दो खुर किसे कहते हैं?

उत्तर जिनके दो खुर हों। जैसे- गाय, भैंस, बकरी आदि।

प्रश्न 22. गंडीपद किसे कहते हैं?

उत्तर जिनके पैर का तला सुनार की एरन जैसा गोल हो। जैसे- हाथी, गंडा आदि।

प्रश्न 23. सनखपद किसे कहते हैं?

उत्तर बड़े-बड़े नख वाले जीव। जैसे- चीता, सिंह, कुत्ता, बिल्ली आदि।

प्रश्न 24. उरपरिसर्प स्थलचर किसे कहते हैं?

उत्तर प्रधानता से जमीन पर रहने वाले छाती के बल चलने वाले तिर्यच पंचेन्द्रिय उरपरिसर्प स्थलचर कहलाते हैं। जैसे- साँप, अजगर आदि।

प्रश्न 25. उरपरिसर्प स्थलचर के कितने भेद हैं?

उत्तर दो- एक फण मांडते हैं, दूसरे फण नहीं मांडते।

प्रश्न 26. भुजपरिसर्प स्थलचर किसको कहते हैं?

उत्तर प्रधानता से जमीन पर रहने वाले भुजाओं के बल पर चलने वाले तिर्यच पंचेन्द्रिय भुजपरिसर्प स्थलचर कहलाते हैं। जैसे- चूहा, नेवला आदि।

प्रश्न 27. खेचर किसको कहते हैं?

उत्तर आकाश में उड़ने में समर्थ तिर्यच पंचेन्द्रिय अर्थात् पक्षी खेचर कहलाते हैं। जैसे- कोयल, कबूतर आदि।

प्रश्न 28. खेचर के कितने भेद हैं और कौन-कौनसे हैं?

उत्तर चार- चर्मपक्षी, रोमपक्षी, विततपक्षी और समगपक्षी।

प्रश्न 29. चर्मपक्षी किसको कहते हैं?

उत्तर जिसकी पाँखें चमड़े की होती हैं। जैसे- चमगादड़ (बागल) आदि।

प्रश्न 30. रोमपक्षी किसको कहते हैं?

उत्तर जिनकी पाँखें रोम (केश) की होती हैं। जैसे- तोता, कबूतर, चिड़िया आदि।

- प्रश्न 31. विततपक्षी किसको कहते हैं?**
उत्तर जिसकी पाँखें हमेशा फैली हुई रहती हैं।
- प्रश्न 32. समग पक्षी किसको कहते हैं?**
उत्तर जिसकी पाँखें हमेशा बन्द रहती हैं।
- प्रश्न 33. विततपक्षी और समगपक्षी को तुमने देखा है?**
उत्तर नहीं, ये पक्षी अढ़ाई द्वीप के बाहर हैं।
- प्रश्न 34. अढ़ाई द्वीप के अन्दर कितने प्रकार के पक्षी रहते हैं?**
उत्तर दो प्रकार के- चर्मपक्षी और रोमपक्षी।
- प्रश्न 35. अढ़ाई द्वीप के बाहर कितने प्रकार के पक्षी रहते हैं?**
उत्तर चारों ही प्रकार के।
- प्रश्न 36. क्या मक्खी, भंवरे को खेचर कह सकते हैं?**
उत्तर नहीं, यह चतुरिन्द्रिय होने से विकलेन्द्रिय हैं।
- प्रश्न 37. हम जलचर हैं या स्थलचर?**
उत्तर हम तो मनुष्य हैं, जलचर, स्थलचर आदि भेद तो तिर्यच पंचेन्द्रिय के हैं।
- प्रश्न 38. क्या सीप जलचर में गिनी जाती है?**
उत्तर नहीं, यह द्वीन्द्रिय होने से विकलेन्द्रिय है।
- प्रश्न 39. तिर्यच के कुल कितने भेद हैं?**
उत्तर 48- एकेन्द्रिय के 22, विकलेन्द्रिय के 6 और तिर्यच पंचेन्द्रिय के 20 इस प्रकार कुल 48 हैं।
- प्रश्न 40. एकेन्द्रिय के 22 भेद में से पृथ्वीकाय के कितने भेद हैं?**
उत्तर चार- सूक्ष्म अपर्याप्त, सूक्ष्म पर्याप्त, बादर अपर्याप्त, बादर पर्याप्त।
- प्रश्न 41. एकेन्द्रिय के 22 में से अप्काय के कितने भेद हैं?**
उत्तर चार- सूक्ष्म अपर्याप्त, सूक्ष्म पर्याप्त, बादर अपर्याप्त, बादर पर्याप्त।
- प्रश्न 42. एकेन्द्रिय के 22 भेद में से तेजस्काय (तेउकाय) के कितने भेद हैं?**
उत्तर चार- सूक्ष्म अपर्याप्त, सूक्ष्म पर्याप्त, बादर अपर्याप्त, बादर पर्याप्त।
- प्रश्न 43. एकेन्द्रिय के 22 भेद में से वायुकाय के कितने भेद हैं?**

- उत्तर** चार- सूक्ष्म अपर्याप्त, सूक्ष्म पर्याप्त, बादर अपर्याप्त, बादर पर्याप्त।
- प्रश्न 44. एकेन्द्रिय के 22 भेद में से वनस्पति के कितने भेद हैं?**
उत्तर छह- सूक्ष्म वन. अपर्याप्त, सूक्ष्म वन. पर्याप्त, प्रत्येक वन. अपर्याप्त, प्रत्येक वन. पर्याप्त, साधारण वन. अपर्याप्त, साधारण वन. पर्याप्त। सब मिलकर एकेन्द्रिय के 22 भेद हुए।
- प्रश्न 45. विकलेन्द्रिय के 6 भेद कौन-कौन-से हैं?**
उत्तर द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, ये तीन ही विकलेन्द्रिय हैं। इन तीनों के अपर्याप्त और पर्याप्त मिलकर 6 भेद हुए।
- प्रश्न 46. तिर्यच पंचेन्द्रिय के 20 भेद कौन-कौनसे हैं?**
उत्तर जलचर, चतुष्पद स्थलचर, खेचर, उरपरिसर्प स्थलचर और भुजपरिसर्प स्थलचर। इन पाँचों के असंज्ञी और संज्ञी मिलकर 10 और इन दसों के अपर्याप्त और पर्याप्त मिलकर 20 भेद हुए।
- प्रश्न 47. तिर्यच पंचेन्द्रिय के 20 भेद में से अपर्याप्त कितने और पर्याप्त कितने?**
उत्तर दस अपर्याप्त- 5 असंज्ञी और 5 संज्ञी दस पर्याप्त- 5 असंज्ञी और 5 संज्ञी।
- प्रश्न 48. तिर्यच के 48 भेद में त्रस कितने और स्थावर कितने हैं?**
उत्तर 26 त्रस- 20 पंचेन्द्रिय और 6 विकलेन्द्रिय तथा 22 स्थावर- पृथ्वीकाय आदि एकेन्द्रिय।
- प्रश्न 49. तिर्यच के 48 भेद में से असंज्ञी के कितने और संज्ञी के कितने?**
उत्तर असंज्ञी के 38 भेद- 22 एकेन्द्रिय, 6 विकलेन्द्रिय और 10 असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय सब मिलकर 38 हुए और 10 संज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय।
- प्रश्न 50. तिर्यच के 48 भेद में से सूक्ष्म के कितने और बादर के कितने हैं?**
उत्तर सूक्ष्म के 10 और बादर के 38 भेद।

साभार- जैन तत्त्व निर्णय

- क्रमशः



समकित के 67 बोल

– शकुन्तला लोढ़ा, ब्यावर

15-16 मार्च 2023 अंक से आगे...

बारहवाँ बोल – स्थान छह

स्थान- जिन मौलिक सिद्धान्तों पर आस्था करने से सम्यक्त्व स्थिर रहता है, उन्हें स्थान कहते हैं। यानी कि स्थान उसे कहा जाता है जिस पर कोई व्यवस्था या वस्तु स्थापित की जा सके। स्थापित करने के आधार को स्थान कहते हैं। जैसे अगर जमीन है तो जमीन पर कोई व्यवस्था की जा सकती है, तो जमीन उसके लिए स्थान है। ठीक वैसे ही भावनात्मक दृष्टि से स्थान कहे गए हैं अर्थात् जिन विचारों पर, जिन मूलभूत सिद्धान्तों पर सम्यक्त्व टिका हुआ है, सम्यक्त्व के लिए जो आधार भूमि है, उस आधार भूमि को या मूलभूत सिद्धान्तों को स्थान के नाम से जाना जाता है। जिन सिद्धान्तों पर सम्यक्त्व आधारित है वे सिद्धान्त अगर स्थिर हैं, उन सिद्धान्तों को मानते हैं तो सम्यक्त्व रहेगा और उन सिद्धान्तों को अगर हम स्वीकार नहीं करते हैं तो फिर सम्यक्त्व का आधार हिल जाएगा और सम्यक्त्व स्थिर नहीं रह पाएगा। इसलिए जो आधारभूमि रूप मूलभूत सिद्धान्त और मूलभूत विचार हैं, वे ही सम्यक्त्व का आधार हैं, स्थान हैं। उनमें छह बोल बताए गए हैं।

स्थान- जिन मौलिक सिद्धान्तों पर आस्था करने से सम्यक्त्व स्थिर रहता है, उन्हें स्थान कहते हैं।

1. जीव है और जीव का लक्षण चेतना है,
2. जीव द्रव्य नित्य शाश्वत है।

ये दोनों बोल आत्मा की अनुभूति और आत्मा की सिद्धि पर निर्भर करते हैं। जैन दर्शन का मुख्य आधार आत्मवाद है। इस जगत् में बहुत सारे दर्शन, मान्यताएँ हैं, जो अलग-अलग विचारधाराओं के साथ संचालित

होती हैं और अनादिकाल से चल रही हैं। सर्वप्रथम दर्शन के दो मुख्य भेद हैं- आत्मवादी दर्शन और अनात्मवादी दर्शन। जो दर्शन आत्मा को स्वीकार करते हैं, आत्मा की सत्ता को स्वीकार करते हैं और उसके चैतन्य स्वरूप को मानते हैं, वे आत्मवादी दर्शन हैं।

जो दर्शन आत्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं करते हैं, वे अनात्मवादी दर्शन हैं। फिर आगे चलकर आत्मा को मानने वाले भी आत्मा के स्वरूप को नित्य-शाश्वत मानते हैं या नहीं मानते हैं? कई ऐसे भी धर्म, दर्शन, सिद्धान्त हैं जो आत्मा को मानते हैं, लेकिन आत्मा की शाश्वत सत्ता को नहीं मानते। पूर्वजन्म और पुनर्जन्म को नहीं मानते। ऐसी दशा में आत्मा को मानना या न मानना कोई महत्त्व नहीं रखता है। आत्मा को जो स्वीकार करते हैं और आत्मा की त्रैकालिक सत्ता को स्वीकार करते हैं, वे ही सही अर्थों में आत्मवादी होते हैं। आज विज्ञान भी इस बात को मानता है कि इस संसार में ऐसा कोई भी परमाणु नहीं है, जो अनादिकाल पहले नहीं था और एक भी ऐसा परमाणु नहीं है, जो पूर्ण रूप से नष्ट हो गया हो या आगे जाकर नष्ट हो जाएगा। इस जगत् में जितने भी पुद्गल हैं, परमाणु हैं, हमेशा से उतने ही हैं और मात्र उनका रूप बदलता रहता है, फॉर्मेशन बदलता रहता है। इसलिए आत्मा अगर है तो आत्मा नित्य है। आत्मा नए रूप में उत्पन्न नहीं हो सकती और एक ही आत्मा हमेशा के लिए पूर्ण रूप से कभी भी नष्ट या नाश को प्राप्त नहीं हो सकती। इस सिद्धान्त को स्वीकार करने से जीव में आत्मवाद की श्रद्धा जागती है और यही श्रद्धा मोक्ष के लिए, सम्यक्त्व के लिए आधार बनती है। आत्मा है तो ही वो कर्मों से बंधती है या मुक्त होती है

और कर्मों के बंधन से मुक्त हो जाना ही मोक्ष है। इसलिए मूलभूत सिद्धान्त में पहली बात कही गई है कि जीव है यानी की आत्मा है और आत्मा का लक्षण चेतना है अर्थात् आत्मा जड़ पदार्थ से बिलकुल अलग है। अजीव का गुण जड़ता है और जीव का गुण चेतना है। दोनों बिलकुल अलग हैं और निश्चय में दोनों का कोई संग नहीं है, दोनों का आपस में कोई जुड़ाव नहीं है। लेकिन कर्मों के कारण आत्मा पुद्गल से जुड़ी हुई है। अनादिकाल से कर्मों का लेप आत्मा पर लगा हुआ है। इसलिए वो पुद्गल से जुड़ी हुई है। 'आत्मा है और आत्मा नित्य है' इस सिद्धान्त की अनुभूति जब जीव को होगी कि मैं आत्मा हूँ, मैं नित्य शाश्वत हूँ, मेरा लक्षण चेतना है, जड़ मेरा स्वभाव नहीं है, जड़ के लिए राग-द्वेष करना मेरा स्वभाव नहीं है, तब हमारा सम्यक्त्व निर्मल बनेगा।

3. जीव आठ कर्मों का कर्ता है,

4. जीव आठ कर्मों का विनाशक है।

भगवती सूत्र में वर्णन आता है- गणधर गौतम स्वामी ने भगवान से प्रश्न किया- 'भगवन्! क्या जीव स्वकृत कर्मों का फल भोगता है?' भगवान ने फरमाया- 'हाँ गौतम! यह सत्य है। जीव स्वकृत कर्मों का फल भोगता है अर्थात् वह कर्म करता भी है और उसका फल भी भोगता है। लेकिन दूसरों के किए हुए कर्मों का फल नहीं भोगता है।'

जैसे ही यह स्वीकार किया जाता है कि आत्मा ही कर्मों का कर्ता है, आत्मा ही कर्मों का भोक्ता है, तो इसी के साथ आत्मा की त्रैकालिक सत्ता निर्धारित हो जाती है। मैं अभी हूँ, भूत में था (पहले कर्म बांधे इसलिए) और मुझे अपने द्वारा बांधे हुए कर्मों का फल कालान्तर में अवश्य मिलेगा। इस प्रकार कर्म का बंध और कर्म का फल मानते ही आत्मा की त्रैकालिक सत्ता अपने आप सिद्ध हो जाती है। इसलिए आत्मा को नित्य शाश्वत कहा है। जीव स्वकृत कर्मों का फल भोगता है। दूसरे के किए हुए कर्मों का फल नहीं भोगता और जब यह बात समझ में आ जाए तो व्यक्ति को यह विश्वास हो जाता है

कि मुझे संसार में जो भी सुख-दुःख, संयोग-वियोग, मान-अपमान, सफलता-असफलता आदि मिल रहे हैं, उन सबका कारण मैं ही हूँ। मेरे सिवाय दूसरा कोई भी उपादान कारण नहीं है। मैं अपने अच्छे-बुरे का, सुख-दुःख का कारण मैं स्वयं ही हूँ। निमित्त कोई भी हो सकता है। निमित्त मूल कारण नहीं है। निमित्त मात्र उस घटना में सहयोगी होता है। मूल कारण मेरा स्वयं का उपादान है, मेरे द्वारा किए हुए अच्छे या बुरे कर्म हैं। जब यह बात स्वीकार हो जाती है तो हम दूसरों को जिम्मेदार नहीं ठहराते हैं। न व्यक्ति को, न वस्तु को, न घटनाओं को और न स्थान को। मैं वहाँ नहीं जाता तो मुझे दुःख नहीं होता। उसने ऐसा नहीं किया होता तो मुझे नुकसान नहीं होता। सारी बातें कर्म सिद्धान्त के विपरीत है। मेरे कर्मों का उदय आया। उन कर्मों ने प्रकृति के अनुरूप या कर्मबंध के समय जो-जो निमित्त बने हुए थे, जिनका मैं बदले का देनदार हूँ, वे निमित्त के रूप में उपस्थित हुए। भगवान उन निमित्त को सहायक मानते हैं और हम उनको दुःखदायक मानते हैं।

अंतकृद्शांग सूत्र में पढ़ते हैं कि गजसुकुमाल मुनि के सिर पर सोमिल ब्राह्मण ने जलते हुए अंगारे रख दिये तो हमारी सामान्य दृष्टि में सोमिल ब्राह्मण दुःखदायक, पीड़ादायक है, लेकिन भगवान की दृष्टि में वह सहायक है। अरिष्टनेमि भगवान कृष्ण वासुदेव के पूछने पर बताते हैं कि उस व्यक्ति ने गजसुकुमाल मुनि के सैंकड़ों, हजारों वर्षों के बंधे हुए कर्मों का भुगतान करने में सहायता की भूमिका निभाई। निमित्त तो हमारे कर्मों का भुगतान करने में सहायक होता है और हम उस निमित्त को पीड़ादायक मानते हैं और उसके प्रति द्वेष करते हैं। हमारे में रोष, आवेश, कषाय आता है, लेकिन भगवान कहते हैं कि जीव अपने ही स्वकृत कर्मों का फल भोगता है।

5. भव्य जीव कर्मों का क्षय कर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं,

6. सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप, ये मोक्ष के उपाय हैं।

कोई भी जीव कब तक इन कर्मों के कारण पूर्वजन्म से फिर नया जन्म, फिर पूर्वजन्म से पुनर्जन्म कब तक? इससे अलग भी कोई व्यवस्था है या नहीं? इससे मुक्त भी कोई प्रकृति का रूप है या नहीं? तब कहा गया कि मोक्ष है अर्थात् सभी कर्मों से मुक्त होकर जन्म-मरण की इस श्रृंखला को समाप्त किया जा सकता है। तब मोक्ष का स्वरूप बताया गया। ज्ञानियों ने फरमाया कि जहाँ जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, रोग नहीं, शोक नहीं, दुःख नहीं, दारिद्र नहीं, कर्म नहीं, काया नहीं, ऐसा जो विशुद्ध आत्मा का सहज स्वरूप है, निज रूप है, उसका नाम मोक्ष है। इसके विपरीत संसारी जीव इसी में जी रहा है कि हमारे जीवन में जन्म भी है, मरण भी है, रोग भी है, शोक भी है, दुःख भी है, दारिद्र भी है, भूख भी है, प्यास भी है। संसारी और सिद्ध में यही अन्तर है। संसारी जीवों के जीवन में यह सब होने के कारण ही वह दुःखी है। जब तक यह बात हमारी समझ में नहीं आएगी, हमारे अनुभव के स्तर पर नहीं आएगी, तब तक आत्मा का कल्याण संभव नहीं है। हम सोचते हैं कि भूख लगने पर खाना खा लेने से, नींद आने पर सो जाने से हम सुखी हो जाते हैं। जन्म हो जाए तो हम सुखी और मृत्यु हो जाने पर हम दुःखी हो जाते हैं, लेकिन जहाँ जन्म भी नहीं है और मृत्यु भी नहीं है वहाँ का जो सुख है, वो निराला है। मोक्ष में मोह-माया नहीं, चाकर-ठाकर नहीं। कोई किसी का ना मालिक है और ना कोई किसी का नौकर है। हम मालिक बन जाएँ तो समझते हैं कि हम सुखी हो गए। नौकर बना दिया जाए तो हम दुःखी हो जाते हैं। धन-माया हो तो भी व्यक्ति दुःखी और न हो तो भी व्यक्ति दुःखी है। इन दोनों से ऊपर उठ जाए तो न उसे माया की चाहना रहे और न माया नहीं होने का अभाव उसे परेशान करे। वो दशा जब आती है तो व्यक्ति को सुख की दशा प्राप्त होती है।

भगवान ने मोक्ष का स्वरूप बता दिया। अब जो व्यक्ति इसको समझ ले, इसके भावों को समझ जाए तो निश्चित ही उसकी यह मनोभिलाषा जग जाएगी कि फिर आज मैं जो जीवन जी रहा हूँ, जहाँ जन्म-मृत्यु, रोग-शोक, दुःख-दारिद्र, मोह-माया, भूख-प्यास आदि है,

वो जीवन अच्छा है या इन सब से ऊपर उठकर जो मुक्ति है वह वास्तविक सुख है। यदि हमें इसका सच्चा सुख अनुभव हो और सिद्धों के सुख का भावों से अनुभव कर पाएँ तो निश्चित रूप से लगता है कि वास्तविक सुख तो मोक्ष में है। तो फिर हमें वहाँ चले जाना चाहिये और उसे प्राप्त कर लेना चाहिये। तब अंतिम सिद्धान्त बताया मोक्ष का उपाय है सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र, सम्यक् तप। जो साधक उसका सम्यक् उपाय करता है, उसे मोक्ष अवश्य प्राप्त होता है। मोक्ष प्राप्त करना जीव के हाथ में है। किसी ईश्वर, देव, देवी, अवतार आदि किसी शक्ति के हाथ में मोक्ष देने का अधिकार नहीं है। कोई किसी को मोक्ष नहीं दे सकता है। इसके संबंध में पुरुषार्थ करना चाहिये। जिसने ज्ञान से तत्त्व तथा जिन-वचन रहस्य को जान लिया है उसे इस उपाय के विषय में स्वशक्ति पुरुषार्थ करना चाहिये तभी मोक्ष संभव है।

ये बोल सम्यक् दर्शन के आधार हैं। ये जैन दर्शन की आधार भूमि हैं। इसलिए इनको स्थान कहा है। जब तक सिद्धान्त पुस्तकों में रहे, बुद्धि में रहे, कण्ठ में रहे वहाँ तक सिद्धान्त हैं। वे ही सिद्धान्त जब हमारे जीवन में आए तो व्यवहार है, आत्मा है और आत्मा नित्य शाश्वत है, यह सिद्धान्त है। जब जीव को स्वयं इसकी अनुभूति होगी कि मैं आत्मा हूँ। मैं नित्य शाश्वत हूँ। चेतना मेरा लक्षण है। शरीर मेरे से अनंत बार अलग हुआ, पर चेतना कभी नहीं छूटी, यह सिद्धान्त व्यवहार है।

मैंने कर्म बांधे हैं। जीव कर्मों का कर्ता है, जीव कर्मों का भोक्ता है, यह सिद्धान्त है। जब यह सिद्धान्त अपने जीवन में आ जाएगा, व्यवहार में आ जाएगा कि मैंने ही कर्म बांधे हैं और मुझे ही भोगने हैं तब वो सिद्धान्त मेरे जीवन में व्यवहार बनेगा। मोक्ष है यह सिद्धान्त है, मुझे मोक्ष मिल सकता है यह व्यवहार है और अंत में मोक्ष का उपाय यह सिद्धान्त है और उपाय मुझे अपने जीवन में धारण करना है तभी मेरा मोक्ष होगा, क्योंकि मैं आत्मा हूँ और मेरा शुद्ध स्वरूप विशुद्ध चेतनामय शाश्वत आत्मा है। यह बात जब जीवन में दृढ़ बनती है तब वो हमारे सम्यक्त्व को पुष्ट करती है। अभी

हमें यह सोचना होगा कि जन्म-मरण करते, आठ कर्मों को बांधते, आठ कर्मों को भोगते पीड़ा महसूस होती है या नहीं? या मुझे इसी में सुख लगता है? यदि संसार में व्यक्ति को सुख की अनुभूति होती है तो वह सबसे बड़ा मिथ्यात्व है और जब सच्चे शाश्वत सुख की मनोभावना जागृत होती है और संसार दुःखमय अनुभव होने लगता है। कहने से, सुनने से, बोलने से नहीं, अनुभूति से संसार और संसार के सारे छल-प्रपंच दुःखदायी लगने लगते हैं और दुःख के कारणों की अनुभूति होने लगती है कि ये दुःख के कारण है; चाहे लाखों-करोड़ों की सम्पत्ति है, पद है, प्रतिष्ठा है, वो सब दुःख के ही कारण हैं, तब शुद्ध आत्मदशा की अनुभूति की व्यवस्था आगे बढ़ती है और वहीं से सम्यक्त्व की यात्रा प्रारंभ होती है।

कथा: इस सम्बन्ध में नरसुन्दर राजा का दृष्टान्त प्रसिद्ध है, जो नास्तिक था, जीवादि पदार्थ नहीं मानता था, देव-गुरु-धर्म के प्रति द्वेष रखता था। एक बार एक योगी उसकी राजसभा में आया। योगी ने राजा को प्रभावित करके विष दे दिया और वहाँ से फरार हो गया। राजा ने सभी मंत्र-तंत्रवादी बुलाए, पर कोई विष न उतार सका। राजा को मृत समझकर ज्यों ही चिता पर रखने लगे, त्यों ही राजा आँख खोलकर उठ बैठा। राजा ने पूछा- “मैं निर्विष कैसे हुआ?” मंत्री ने पता लगाकर गंभीर स्वर में कहा- “किसी लब्धिवान उग्रतपस्वी साधु के शरीर की हवा लगे तो विष उतर जाता है। आपके उद्यान में चन्द्रप्रभाचार्य पधारे हैं, उन्हीं की कृपा समझिए।” राजा को साधु के प्रति आस्था उत्पन्न हुई। उनका दर्शन-वन्दन किया, धर्मोपदेश सुना। अवसर देखकर आचार्य ने आत्मा (जीव) के अस्तित्ववाद की प्ररूपणा की। राजा ने पूछा- “भगवन्! आकाश पुष्पवत् आत्मा नहीं है, अगर होता तो घट-पटादि की तरह दिखाई देता न!”

आचार्य- तुमने आँखों से आत्मा को नहीं देखा, इसलिए कहते हो कि आत्मा नहीं है। तुम्हारी समझ के अनुसार तो मेरुपर्वत आदि नहीं हैं। तुम्हारे पूर्वज भी नहीं हैं, क्योंकि तुमने वे सब देखे नहीं हैं। परन्तु तुम्हारे पूर्वज नहीं हैं तो तुम्हारी उत्पत्ति कैसे हुई? जैसे तुम्हारे पूर्वज

अनुभव से सिद्ध होते हैं, वैसे ही आत्मा के चैतन्य, सुख-दुःखादि संवेदन आदि गुण प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं।

राजा ने कहा- हाँ, सत्य बात है, परन्तु जीव पुण्य करके स्वर्ग में और पाप करके नरक में जाता है, यह बात नहीं जंचती। मेरी माँ सम्यग्दृष्टि व्रती श्राविका थी, वह मरकर स्वर्ग में गई हो तो मुझे बोध देने क्यों नहीं आती? और मेरे पिता ने अनेक पापकर्म किये। वे मरकर नरक में गए हों तो यहाँ आकर मुझे पाप करने से रोकते क्यों नहीं?

आचार्य- जैसे चोर आदि अपराधी को पकड़ने के बाद सजा पूरी होने तक छोड़ा नहीं जाता, वैसे ही नारकी जीवों को परमाधार्मिक देवों ने पकड़ रखा है, वे सजा पूरी होने तक छोड़ते ही नहीं हैं, तब तुम्हारा पिता तुम्हें पाप से रोकने को कैसे आए? इसी तरह स्वर्ग में गया हुआ जीव वहाँ के विविध काम-भोगों में आसक्त रहता है तथा मनुष्यलोक की दुर्गन्ध 400-500 योजन ऊँचाई तक फैली हुई है, ऐसा स्वर्ग प्राप्त जीव यहाँ कैसे आएगा तुम्हें अपना समाचार देने? आत्मा रूपी पदार्थ तो है नहीं, जो इन्द्रियों से दिखाई दे।

इस प्रकार विविध युक्तियों से आचार्य ने आत्मा का अस्तित्व, नित्यत्व, कर्म कर्तृत्व, भोक्तृत्व तथा मुक्ति का उपाय आदि तत्त्व समझाए। राजा को जातिस्मरण ज्ञान हुआ, पूर्वजन्म जानकर जीवादि नौ तत्त्वों तथा आत्मा के षट् स्थानक पर श्रद्धा की। मुनि दीक्षा लेकर निरतिचार चारित्र का पालन करने लगा।

आत्म-स्वरूप के युक्तिपूर्ण बोध देने के सम्बन्ध में इसी प्रकार का चरित्र रायप्रसेणी सूत्र में वर्णित है। श्वेताम्बिका नगरी का राजा प्रदेशी (पसेणी) जो अत्यंत क्रूरकर्मा, नास्तिक तथा धर्मद्वेषी था, उसे केशीकुमार श्रमण ने बड़ी कुशलता व निर्भीक युक्तियों से आत्मा एवं धर्म का स्वरूप समझाया। राजा का जीवन-दर्शन बदल गया और पापी नास्तिक परम श्रद्धालु धार्मिक बन गया।

समकित के 67 बोलों की शृंखला का समापन इस अंक में हो रहा है। आप सभी पाठकगण इन बोलों को अपने जीवन में स्थान देकर आदर्श श्रावक के रूप में प्रतिस्थापित हों, यही शुभेच्छा है।



महासती शिवा

15-16 मार्च 2023 अंक से आगे...

उनका नाम भी शिवा था और वे वास्तव में ही शिवा अर्थात् कल्याणकारिणी थी। उनका जीवन पवित्र, मन उदार और भाव सरल थे। वे प्राणिमात्र का भला (कल्याण) चाहती थी। इसलिए वे 'यथानाम तथागुण' थीं।

शिवा वैशाली के गणाध्यक्ष राजा चेटक की चतुर्थ पुत्री और उज्जयिनी के प्रचण्ड शासक चंडप्रद्योत की पटरानी थी। बचपन से ही उनमें धार्मिक संस्कार भरे हुए थे। भगवान महावीर पर उनकी अचल श्रद्धा थी और भगवान महावीर के तत्त्वदर्शन का उन्होंने गहरा अभ्यास किया था। अपने धर्म एवं शील में वे बड़ी दृढ़ थीं। उनके दिव्य-शीलगुणों की महिमा मानव तो क्या देवता भी गाया करते थे।

चंडप्रद्योत का एक मंत्री था भूदेव। भूदेव विद्वान् एवं राजनीतिज्ञ तो था, किन्तु चरित्र की दृष्टि से शून्य था। अपनी चतुरता, मधुर वचन एवं व्यवहार कुशलता के कारण वह राजा का परम विश्वासपात्र भी था। चंडप्रद्योत उसे मंत्री ही नहीं, अपना मित्र भी समझता



था। मित्रता के कारण वह किसी भी समय राजा के अन्तःपुर में आ सकता था। राजा के मित्र के नाते रानी शिवादेवी भी उसका आदर करती और देवर की तरह मानती थी। शिवादेवी के रूप और सौन्दर्य को देखकर भूदेव उस पर मुग्ध हो रहा था। रानी कभी उसके साथ बोलती, हँसती तो वह अपना भान भूल जाता और सोचता- कैसे भी करके इस दिव्य रूप का स्पर्श मिल जाए तो बस जीवन कृतार्थ हो जाए। पवित्र आँखें सबको पवित्र रूप में देखती हैं और दुष्ट, अपवित्र मन सबको अपवित्र ही समझता है। रानी भूदेव को भाई के समान पवित्र आँखों से देखा करती और विशुद्ध स्नेह से उसके साथ बोलती, किन्तु भूदेव के मन में पाप छाय़ा हुआ था। हर बार वह रानी के रूप और अंगोपांग पर कामुकदृष्टि से देखता रहता। धीरे-धीरे भूदेव महलों में समय-बे-समय आने लगा। राजा की अनुपस्थिति में भी महलों में कोई बहाना करके आने की चेष्टा करता। किन्तु सरलमना रानी ने यह समझकर उसे कभी नहीं रोका कि यह तो देवरतुल्य हैं और देवर के लिए भाभी माँ के समान होती है। किन्तु पापी भूदेव तो मन का मैला था। वह तो रानी के शील पर ही हाथ साफ करना चाहता था। मौका देखकर उसने रानी की एक विश्वासपात्र दासी को लालच देकर अपने जाल में फँसाकर उसके माध्यम से रानी को अपनी वासनाभरी इच्छा से सूचित कर दिया।

दासी के मुँह से ऊलजलूल बातें सुनी तो शिवा चंडिका की तरह गर्ज उठी- “पापिनी! ऐसी दूती बनकर आई है? खबरदार जो ऐसी बात कभी मुँह से निकाली।” थर-थर काँपती हुई दासी ने रानी के पैर पकड़ कर क्षमा मांगी। दासी ने भूदेव को धत्ता बताया, वह भी अपना-सा मुँह लेकर बैठ गया।

मुँह पर चाहे एक मन लकड़ी डालो चाहे सौ मन,

उसे कोई भार नहीं लगता। उसी प्रकार कामी और विषय व्याकुल मन को चाहे जितनी फटकार और धिक्कार सुनाओ उसकी आदत नहीं बदलती। रानी की फटकार सुनकर भी भूदेव अपनी दुष्टता से बाज नहीं आया। एक दिन उसे सुनहरा अवसर मिल गया। राजा चंडप्रद्योत किसी काम के लिए राजधानी से बाहर जा रहे थे। भूदेव बीमारी का बहाना बनाकर घर पर ही रह गया। मौका देखकर वह सीधा राजमहल में चला आया।

भूदेव का पापी मन उसके चेहरे पर साफ नजर आ रहा था। रानी चौकन्नी हो गई। उसने भूदेव को बाहर ही बिठा दिया। सोचा- भूला-भटका मन शायद समझाने से रास्ते पर आ जाए! उसने भूदेव को बहुत समझाया, विषयों के दुष्परिणाम और व्यभिचारियों की दुर्दशा की कई कथाएं सुनाई, पर चिकने घड़े पर पानी की एक बूँद भी नहीं टिकती उसी प्रकार भूदेव समझा नहीं और विषयांध हुआ वह रानी का हाथ पकड़ने को आगे बढ़ा। रानी की आँखें अंगारों के समान जल उठीं। वह सिंहनी की तरह गर्जती हुई बोली- “दुष्ट! नराधम! हट जाओ! एक कदम भी आगे बढ़े तो समझ लेना तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा। प्रेम का ढोंग रचाकर, मित्रता का बहाना बनाकर यह पाप करना चाहते हो! राजा की पत्नी, मित्र की पत्नी, माँ के समान होती है। आज अपनी माँ पर भी बुरी नजर डालते शर्म नहीं आई तुम्हें! अपने मित्र की पीठ में छुरा घोंपते जरा भी हया-दया नहीं आई तुम्हें! पापी कुत्ते!”

भूदेव थर-थर काँप उठा। उसके पैरों के नीचे से धरती खिसकने लगी। पसीना छूट गया, सिर चकराने लगा और बिना कुछ बोले उलटे पैर वह राजमहल के पिछवाड़े से निकल कर अपने घर आकर खटिया पर आँधामुँह करके सो गया।

चंडप्रद्योत बाहर से आया। भूदेव को नहीं देखकर उसने पता लगाया तो मालूम हुआ कि वह बहुत बीमार हैं। राजा ने चिन्तित होकर रानी से मित्र की बीमारी की

बात कही। रानी बहुत गम्भीर थी। उसने सोचा- उसे अवश्य ही अपनी दुष्टता पर पछतावा हुआ होगा। इसी भय के कारण वह बीमार भी पड़ा होगा। हो सकता है, अब उसका मन सुधर जाए। अतः क्यों गड़े मुर्दे उखाड़ कर मित्रों के हृदय में विरोध पैदा किया जाए! मनुष्य पश्चात्ताप से सुधर सकता है। रानी मौन रही और राजा के आग्रह के कारण वह भी भूदेव की तबीयत देखने राजा के साथ उसके घर पहुँची।

राजा के साथ रानी को आया देखकर मंत्री की हालत और भी खराब हो गई। भय से वह पहले ही पीला पड़ चुका था, अब तो पत्ते की तरह थर-थर काँपने लग गया। राजा ने भूदेव की सुखशांति पूछी और कहा- “मित्र! घबराओ नहीं! घबराने से रोग और बढ़ता है। रोग का उपचार कराएँ और तुम शीघ्र ही स्वस्थ हो जाओगे। यहाँ तुम अकेलापन अनुभव करते हो, अतः चलो महलों में, मेरे सामने रहो, आधी बीमारी तो तुम्हारी वैसे ही मिट जाएगी।” भूदेव रानी की तरफ देखकर रोने लगा। राजा ने समझा कि वह पीड़ा से रो रहा है और रानी ने समझा कि वह पश्चात्ताप से रो रहा है। रानी ने आश्वासन दिया- “भाई! घबराओ नहीं, सब ठीक हो जाएगा। महाराज की इच्छा है कि तुम चलो, मैं स्वयं तुम्हारी देखभाल करूँगी।”

भूदेव राजमहल में आ गया। रानी उसके अपराधों को भुलाकर भाई की तरह उसकी सेवा-परिचर्या करने लगी। एक दिन रानी को एकान्त में देखकर भूदेव उनके चरणों में गिर पड़ा- “बहन! मुझे क्षमा कर दो। मैंने दुष्टता और नीचता करने में कमी नहीं रखी और तुमने महानता दिखाने में कोई कसर नहीं रखी। मुझ जैसे दुष्ट को भी तुमने भाई कहकर गौरव दिया और सेवा-परिचर्या करके जो उपकार किया है, वह मैं जन्म-जन्मांतर में भी नहीं भूल सकूँगा। तुम नारी नहीं, देवी हो!”

रानी ने सांत्वना देते हुए कहा- “भाई! भूल करना कोई बड़ी बात नहीं है, किन्तु भूल पर पश्चात्ताप कर उसे

सुधार लेना सचमुच बड़ी बात है। मेरा कर्तव्य ही था कि अपने गुमराह भाई को ठुकराऊँ नहीं, किन्तु स्नेह से समझाकर सन्मार्ग पर लाऊँ। मुझे इस बात की खुशी है कि मेरी भावना सफल हो गई।”

बस, भूदेव की बीमारी हवा हो गई, क्योंकि उसे तो भय का ही रोग था। रानी के मधुर शिक्षा वचनों से उसका हृदय पवित्र एवं निर्भय बन गया। उसे तो जैसे जीवनदान मिल गया। कुछ ही दिनों में भूदेव पूर्ण स्वस्थ हो गया।

एक दिन उज्जयिनी नगरी में भयंकर आग लग गई। हवा के प्रबल वेग से कुछ ही क्षणों में आग की प्रचंड ज्वालाएँ भभक कर समूचे नगर में फैल गई। आग

बुझाने के अनेक उपाय किये गए, पर आग बुझने की जगह और ज्यादा भड़क उठी। पानी भी जैसे पेट्रोल बन गया। समूचा नगर चिन्तित होकर हाहाकार करने लगा। राजा भी शोक में डूब गया। बड़े अनुभवी लोगों

ने कहा- “आज तक ऐसी आग कभी नहीं देखी, न सुनी। यह तो कोई दैवीय प्रकोप लगता है।” तभी एक दिव्य स्वर सबको सुनाई दिया- “यह आग तभी बुझेगी जब कोई सती अपने हाथ से पानी के छींटे डालेगी। नगर की अनेक कुलवधुएँ जिनके शील-धर्म की चारों ओर कीर्ति थी, वे चौराहे पर आई और अपने सतीत्व की साख देकर पानी के छींटे डालने लगी, पर आग न बुझी। आखिर रानी शिवादेवी राजमहल पर चढ़ी और अंजलि में जल लेकर पुकारा- “हे अग्निदेव! यदि मैं तन से, मन से पवित्र हूँ, मेरा शील-धर्म अखण्ड एवं निर्मल है तो इस जल के छींटे लगते ही अग्निज्वालाएँ शांत हो जाएँ।”



यह कहकर शिवादेवी ने जैसे ही अपने हाथ से चारों दिशाओं में जल के छींटे डाले वैसे ही आग तुरंत शांत हो गई। समूचे नगर में शांति और खुशी छा गई। प्रत्येक मुख पर ‘महासती शिवादेवी की जय’ के नारे गूँजने लग गए।

अब तो हजारों नर-नारी शिवादेवी को मानवदेह धारिणी देवी मानकर पूजने लगे। दूर-दूर तक उसके दिव्यशील प्रभाव की कीर्ति फैल गई। किन्तु शिवादेवी फिर भी पहले की तरह ही विनम्र, सेवा एवं स्नेह की मूर्ति बनी रही। वह तो सचमुच महासती थी। वह अपने शील-धर्म में जितनी दृढ़ थी, उतनी ही सेवा, सहिष्णुता, विनम्रता एवं परोपकार में निपुण थी। राजा चंडप्रद्योत

का अपार प्रेम, प्रजा का सम्पूर्ण स्नेह, कीर्ति, भोग-वैभव की समस्त सामग्रियाँ पाकर भी वह उनमें आसक्त नहीं बनी। जल में कमल की भाँति सदा संसार में रहकर भी उससे निर्लेप बनी रही।

एक दिन भगवान महावीर

उज्जयिनी में पधारे। शिवादेवी ने अवसर देखकर प्रभु से दीक्षा देने की प्रार्थना की। चंडप्रद्योत बहुत दुःखी हुआ। रानी उसके कलेजे की कोर, उसके साम्राज्य का एक दिव्य रत्न थी, पर रानी की बलवती वैराग्य भावना को वह किसी भी तरह रोक नहीं सका। शिवादेवी प्रभु के चरणों में संयम-व्रत स्वीकार कर महासती चन्दना के नेतृत्व में संयम आराधना करती हुई अंत में केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्षगति को प्राप्त हुई! धन्य है महासती शिवा देवी!

आधार ग्रंथ आवश्यक नियुक्ति गाथा, 1284

-क्रमशः

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

राष्ट्रीय अध्यक्ष (सत्र 2023-2025) मनोनयन हेतु सूचना

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पाजी मेहता का कार्यकाल आसोज सुदी 2, दिनांक 16 अक्टूबर 2023 को पूर्ण होने जा रहा है। अतः आगामी सत्र 2023-2025 हेतु इस पद के लिए संघ समर्पित, सेवा भावना से ओत-प्रोत सुश्राविका, जो श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की आजीवन सदस्या हो, उनके नामांकन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इस पद के लिए आप अपना अथवा अन्य किसी सुज्ञ सुपात्र महिला का नाम प्रस्तावित कर सकते हैं। कृपया अपना प्रस्ताव दिनांक 30 अप्रैल 2023 से पूर्व निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें-

गौतमचन्द जैन (रांका), राष्ट्रीय अध्यक्ष

Pranjal Group, A-712, Kanakia Wall Street, Chakala,
Andheri-Kurla Road, Andheri East, Mumbai-400093 (M.H.)

Email : president@sadhumargi.com

-राष्ट्रीय महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी **15-16 मई 2023** का धार्मिक अंक **आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के जन्मदिवस के उपलक्ष में उनके जीवन चरित्र** पर आधारित रहेगा।



इस विषय पर आधारित आपकी रचनाएँ, संस्मरण एवं अन्य विशिष्ट प्रसंग **3**
0 अप्रैल 2023 से पूर्व यथाशीघ्र भिजवाने का कष्ट करें।

इसी क्रम में **जून 2023** का धार्मिक अंक **'भोजन-विवेक/धर्म-विवेक'** विषय पर आधारित रहेगा। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि मो. 9314055390, email : news@sadhumargi.com पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

- श्रमणोपासक टीम

पक्खी की टीप

श्री निर्णयसागर पंचांगानुसार

(श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा स्वीकृत)

प्रधान कार्यालय- समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)

विक्रम संवत् : 2080, वीर निर्वाण संवत् : 2549-50

शक संवत् : 1945, ईस्वी सन् : 2023-24

पुष्य नक्षत्र दिनांक	पक्ष	पक्खी की तिथि	वार	दिनांक	तिथि		पक्ष	पक्खी की तिथि	वार	दिनांक	तिथि		रोहिणी नक्षत्र
					घटी	बढ़ी					घटी	बढ़ी	
31-03-23	चैत्र सुदी	14	बुधवार	05-04-23	-	13	आश्विन बदी	15	शनिवार	14-10-23	4	8	27-03-23
28-04-23	वैशाख बदी	14	बुधवार	19-04-23	6	-	आश्विन सुदी	15	शनिवार	28-10-23	14	-	23-04-23
25-05-23	वैशाख सुदी	14	गुरुवार	04-05-23	-	-	कार्तिक बदी	14	रविवार	12-11-23	-	10	21-05-23
21-06-23	ज्येष्ठ बदी	15	शुक्रवार	19-05-23	9	-	कार्तिक सुदी	14	रविवार	26-11-23	7	-	17-06-23
18-07-23	ज्येष्ठ सुदी	14	शनिवार	03-06-23	-	7	मार्गशीर्ष बदी	14	सोमवार	11-12-23	-	-	14-07-23
15-08-23	आषाढ बदी	15	रविवार	18-06-23	2	-	मार्गशीर्ष सुदी	15	मंगलवार	26-12-23	11	-	10-08-23
11-09-23	आषाढ सुदी	14*	रविवार*	02*-07-23	-	-	पौष बदी	14	बुधवार	10-01-24	-	2	07-09-23
08-10-23	प्रथम श्रावण बदी	15	सोमवार	17-07-23	4	-	पौष सुदी	15	गुरुवार	25-01-24	4	-	04-10-23
05-11-23	प्रथम श्रावण सुदी	15	मंगलवार	01-08-23	14	3	माघ बदी	14/15	शुक्रवार	09-02-24	15	4	31-10-23
02-12-23	द्वितीय श्रावण बदी	15	बुधवार	16-08-23	6	11	माघ सुदी	14	शुक्रवार	23-02-24	-	-	28-11-23
29-12-23	द्वितीय श्रावण सुदी	14	बुधवार	30-08-23	-	-	फाल्गुन बदी	14	शनिवार	09-03-24	10	6	25-12-23
25-01-24	भाद्रपद बदी	प्रथम 15	गुरुवार	14-09-23	1	15	फाल्गुन सुदी	14	रविवार	24-03-24	3	13	21-01-24
22-02-24	भाद्रपद सुदी	15	शुक्रवार	29-09-23	11	-	चैत्र बदी	15	सोमवार	08-04-24	14	-	18-02-24
20-03-24													16-03-24

आराधना दिवस

- नवपद ओली प्रारम्भ- चैत्र सुदी 8- बुधवार- 29-03-23
- नवपद ओली पूर्ण- चैत्र सुदी 15- गुरुवार- 06-04-2023
- अक्षय तृतीया- वैशाख सुदी 3- रविवार- 23-04-2023
- चातुर्मास प्रारम्भ- आषाढ सुदी **14-रविवार-02*-07-2023**
- पर्युषण प्रारम्भ- द्वितीय श्रावण बदी 13- सोमवार- 14-08-2023
- संवत्सरी महापर्व- द्वितीय श्रावण सुदी 5- सोमवार- 21-08-2023
- नवपद ओली प्रारम्भ- आश्विन सुदी 6- शुक्रवार- 20-10-2023
- नवपद ओली पूर्ण- आश्विन सुदी 15- शनिवार- 28-10-2023
- चातुर्मास पूर्ण- कार्तिक सुदी 14- रविवार- 26-11-2023
- फाल्गुनी चातुर्मास- फाल्गुन सुदी 14- रविवार- 24-03-2024

शुभ दिवस

- भगवान श्री महावीर जयंती- चैत्र सुदी **प्रथम*** 13- सोमवार- 03-04-2023
- संघ स्थापना दिवस- आश्विन सुदी 2- सोमवार- 16-10-2023
- आचार्य श्री नानेश 24वीं पुण्यतिथि एवं आचार्य श्री रामेश आचार्य पदारोहण दिवस- कार्तिक बदी 3- मंगलवार- 31-10-2023
- दीपावली व भगवान महावीर निर्वाण- दीपावली- कार्तिक बदी 14- रविवार- 12-11-2023, वीर निर्वाण दिवस- कार्तिक बदी 15- सोमवार- 13-11-2023
- आचार्य श्री रामेश युवाचार्य पदारोहण दिवस एवं उपाध्याय श्री राजेशमुनिजी म.सा. उपाध्याय पदारोहण दिवस- फाल्गुनी सुदी 2/3 मंगलवार- 12-03-2024

अस्वाध्याय संबंधी दिवस

- आषाढ सुदी 4 गुरुवार दिनांक 22-06-2023- सूर्य के साथ आर्द्रा नक्षत्र का योग। गाज-बीज सम्बन्धी अस्वाध्याय नहीं रहेगी।
- आश्विन सुदी 10 मंगलवार दिनांक 24-10-2023- सूर्य के साथ स्वाति नक्षत्र का योग। गाज-बीज की अस्वाध्याय चालू।
- चैत्र की पूर्णिमा व अगली पड़वा दिनांक 06 व 07-04-2023, आषाढ की पूर्णिमा व अगली पड़वा दिनांक 03 व 04-07-2023, आश्विन की पूर्णिमा व अगली पड़वा दिनांक 28 व 29-10-2023, कार्तिक की पूर्णिमा व अगली पड़वा दिनांक 27 व 28-11-2023 इन दिनों पूर्ण अस्वाध्याय।

ग्रहण सूचना

आश्विन सुदी 15, शनिवार दिनांक 28-10-2023 - चन्द्रग्रहण (अस्वाध्याय 12 प्रहर) स्पर्श 01:05, मोक्ष 02:23
 नोट :- प्रतिक्रमण में प्रतिदिन 4 लोगस्स, पक्खी के दिन 8 लोगस्स, चौमासी के दिन 12 लोगस्स एवं संवत्सरी महापर्व के दिन 20 लोगस्स का ध्यान करना चाहिए।

उपरोक्त पक्खी की टीप में Bold, Underline एवं * किया हुआ एवं लाल कलर में दिया गया मैटर श्रमणोपासक में मुद्रित होने के पश्चात् संशोधित हुआ है। कृपया सुधार कर उपरोक्तानुसार पढ़ने का कष्ट करें।

वर्ष 2023

सूर्योदय-सूर्यास्त समय सारिणी

माह		बीकानेर		उदयपुर		रतलाम		दिल्ली	
		सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जनवरी	1	7:28	17:52	7:19	17:57	7:11	17:55	7:13	17:35
जनवरी	15	7:29	18:02	7:21	18:07	7:13	18:04	7:14	17:45
फरवरी	1	7:24	18:16	7:17	18:20	7:10	18:16	7:09	18:00
फरवरी	15	7:15	18:26	7:09	18:29	7:02	18:25	6:59	18:10
मार्च	1	7:01	18:36	6:58	18:37	6:52	18:32	6:46	18:20
मार्च	15	6:46	18:44	6:44	18:43	6:39	18:38	6:31	18:29
अप्रैल	1	6:27	18:54	6:27	18:51	6:22	18:45	6:11	18:38
अप्रैल	15	6:12	19:01	6:13	18:57	6:09	18:51	5:56	18:46
मई	1	5:57	19:10	6:00	19:04	5:56	18:57	5:40	18:56
मई	15	5:47	19:19	5:51	19:11	5:48	19:04	5:30	19:04
जून	1	5:40	19:28	5:46	19:19	5:43	19:11	5:23	19:14
जून	15	5:39	19:34	5:46	19:25	5:43	19:17	5:22	19:20
जुलाई	1	5:43	19:37	5:49	19:28	5:47	19:20	5:26	19:23
जुलाई	15	5:49	19:35	5:55	19:26	5:52	19:18	5:33	19:20
अगस्त	1	5:59	19:26	6:03	19:19	5:59	19:12	5:42	19:12
अगस्त	15	6:06	19:15	6:09	19:09	6:05	19:02	5:50	19:00
सितम्बर	1	6:15	18:58	6:16	18:54	6:11	18:47	5:58	18:43
सितम्बर	15	6:21	18:42	6:21	18:39	6:16	18:33	6:05	18:26
अक्टूबर	1	6:29	18:23	6:27	18:22	6:21	18:17	6:13	18:07
अक्टूबर	15	6:36	18:08	6:32	18:09	6:26	18:04	6:21	17:52
नवम्बर	1	6:47	17:52	6:41	17:55	6:34	17:51	6:32	17:36
नवम्बर	15	6:57	17:44	6:50	17:48	6:43	17:45	6:43	17:27
दिसम्बर	1	7:10	17:40	7:02	17:46	6:54	17:42	6:55	17:23
दिसम्बर	15	7:20	17:43	7:11	17:48	7:03	17:46	7:05	17:26

वर्ष 2023

सूर्योदय-सूर्यास्त समय सारिणी

मुम्बई	दुर्ग	चेन्नई	कोलकाता	गुवाहाटी					
					सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय
7:11	18:12	6:42	17:34	6:31	17:53	6:16	17:03	6:10	16:42
7:14	18:20	6:44	17:43	6:35	18:01	6:18	17:12	6:12	16:52
7:12	18:31	6:42	17:54	6:35	18:09	6:15	17:24	6:07	17:05
7:06	18:38	6:35	18:02	6:31	18:14	6:08	17:33	5:58	17:15
6:56	18:44	6:25	18:09	6:25	18:17	5:58	17:39	5:47	17:24
6:47	18:48	6:14	18:14	6:16	18:19	5:45	17:45	5:32	17:31
6:33	18:52	5:58	18:19	6:05	18:20	5:29	17:51	5:14	17:39
6:21	18:55	5:46	18:23	5:56	18:21	5:17	17:57	5:00	17:46
6:11	19:0	5:34	18:29	5:48	18:23	5:04	18:03	4:46	17:54
6:04	19:05	5:27	18:35	5:43	18:27	4:56	18:09	4:36	18:02
6:00	19:12	5:22	18:42	5:41	18:32	4:51	18:17	4:30	18:10
6:01	19:17	5:22	18:47	5:42	18:36	4:51	18:22	4:30	18:16
6:04	19:20	5:26	18:50	5:46	18:39	4:55	18:25	4:34	18:19
6:09	19:19	5:31	18:49	5:50	18:39	5:00	18:24	4:39	18:17
6:15	19:14	5:38	18:43	5:54	18:36	5:07	18:17	4:48	18:10
6:19	19:06	5:43	18:35	5:56	18:30	5:13	18:08	4:55	17:59
6:23	18:53	5:48	18:21	5:57	18:20	5:19	17:54	5:02	17:43
6:26	18:41	5:51	18:08	5:57	18:20	5:23	17:40	5:08	17:27
6:29	18:27	5:55	17:53	5:58	17:59	5:27	17:24	5:15	17:10
6:32	18:16	6:00	17:40	5:59	17:50	5:32	17:11	5:21	16:55
6:38	18:05	6:07	17:29	6:02	17:42	5:40	16:59	5:31	16:41
6:45	18:00	6:15	17:23	6:07	17:3	5:48	16:52	5:41	16:33
6:55	17:59	6:25	17:22	6:15	17:40	5:59	16:51	5:52	16:30
7:03	18:03	6:34	17:25	6:22	17:44	6:08	16:54	6:02	16:33

सौजन्य :- विभिन्न स्रोतों से



धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

15-16 मार्च 2023 अंक से आगे...

वज्राघात

मानव अपने जीवन में कितनी ही बातें सोचता है। वह केवल अपने ही नहीं, दूसरों के जीवन के सम्बन्ध में भी सुनहरे स्वप्न देखा करता है। न जाने कल्पनाओं के कितने पहाड़ खड़े कर लेता है और सोचता है कि मैं शीघ्र ही इन पहाड़ों पर चढ़ाई कर लूंगा, पर उसकी वह चढ़ाई अधूरी ही रह जाती है। उसका बुना हुआ वह काल्पनिक जाल अपूर्ण ही रहता है और रंगीन दुनिया बनाने का उसका स्वप्न अधूरा ही रह जाता है।

मनुष्य की दशा उस भौरे-सी है जो संध्या-समय कमल के ऊपर बैठा मन्द-मन्द सुगन्ध से मोहित होकर विचार कर रहा है कि क्या जल्दी है, सुगन्ध का थोड़ा और आनन्द उठा लूँ, फिर तो उड़कर चलना ही है। परन्तु थोड़ी देर में सूर्य छिपने पर कमल का फूल बन्द हो जाता है और भौरा फिर भी यही विचारता है- क्या बात है? हो जाने दो बन्द, सुबह तो होगी ही और सूर्य भी निकलेगा ही। फूल भी खिलेगा उस समय उड़ चलेंगे। परन्तु वह अज्ञानी क्या जानता है कि इतनी देर में क्या का क्या हो जाएगा। उसकी सारी लताएँ मुड़झा जाती हैं। वह इस प्रकार सोच रहा है इतने में एक हाथी आ जाता है और



(आप सभी के समक्ष एक नया धारावाहिक 'धर्ममूर्ति आनंदकुमारी' के नाम से प्रारंभ किया गया है। आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगूजी म.सा. की पट्टधर महासती आनंदकँवरजी का जीवन चरित्र प्रतिमाह आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत हो रहा है। इन महासतीजी के जीवन को पढ़कर आप जानेंगे कि कैसे उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समभाव को ज्वलंत रखा और चरित्र को डिगने नहीं दिया। निश्चय ही धर्ममूर्ति आनंदकुमारीजी का चरित्र पढ़कर आपके जीवन में संयम और चरित्र का विकास होगा।)

अपनी सूण्ड से उस फूल को जड़ से उखाड़ कर फेंक देता है। इन्हीं भावों का शब्द-चित्र नीतिकार आचार्य भर्तृहरि ने बड़े ही मार्मिक ढंग से खींचा है-

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं।

भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः।

इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे।

हा! हन्त हन्त! नलिनीं गज उज्जहार।

बस, ऐसी ही उधेड़बुन में मनुष्य लगा रहता है कि बीच में ही मृत्यु आकर गला दबा देती है। काल की गति बड़ी विचित्र है। वह किसी के लिए रियायत नहीं करती। भगवान महावीर के संघ पर निकट भविष्य में संकट पड़ता देखकर देवराज इन्द्र, भगवान के चरणों में पहुँच कर नम्र निवेदन करता है- “भगवन्! इस समय आपका निर्वाण होने से संघ पर महासंकट आने वाले हैं। आप अपनी आयु के क्षणों को थोड़ा और बढ़ा लें तो यह सब संकट दूर हो सकते हैं।” तब भगवान ने क्या फरमाया? उन्होंने यही फरमाया कि “देवराज! यह असम्भव है। समय की गति को रोका नहीं जा सकता। जीवन समाप्त होने को है, मैं उसे बढ़ा नहीं सकता। मैं क्या, संसार की कोई भी शक्ति यह काम नहीं कर सकती।”

‘कालस्य कुटिला गतिः’ इस उक्ति में कितना सत्य है! बड़े-बड़े राजा-महाराजा इस पृथ्वी पर आए और अपने बाहुबल से एक बार सारी पृथ्वी को कंपा सके। उन्होंने सारा भूमण्डल अपने अधिकार में कर लिया और लगे मूँछों पर ताव देकर कहने कि हम सरीखा कौन बली है? कौन ऐसा है जो हमारे सामने टिक सके? पर जब काल विकराल रूप में सामने आकर खड़ा हुआ तो उनके पैर भी काँपने लगे। मृत्यु का अट्टहास कितना भयंकर है! उस समय सारे मंसूबे धरे ही रह जाते हैं और काल के हाथ में अपने को सौंपना पड़ता है। यहीं आकर मनुष्य की सारी बुद्धि, सारी जीवन दृष्टि खत्म हो जाती है।

हाँ, तो हमारी आनंदकुमारीजी के पतिदेव लक्ष्मणदासजी अभी दिल्ली पहुँचे ही थे। वे हृदय में कई सुनहरी कल्पनाओं को स्थान दिए हुए युवादिल थे और अपने भविष्य को सोचने वाले थे। उन्हें क्या पता था कि

इस बार दिल्ली से लौटना हो सकेगा या नहीं? दिल्ली आए चार-छह महीने ही हुए थे कि अकस्मात् उनके ऊपर सर्दी के कारण भीषण व्याधि ने हमला कर दिया। दिल्ली जैसे प्रसिद्ध शहरों में साधनों की कोई कमी

नहीं थी। सेठ बालाबक्सजी का भी आप पर पुत्र से बढ़कर स्नेह था। वे भोजन, वस्त्र आदि में आप से किसी प्रकार का भेद नहीं रखते थे। उनको आपका सिर दुखना भी असह्य मालूम होता था, तो इस बीमारी को सुनकर कैसे बैठे रह सकते थे? सेठजी ने दिल्ली के बड़े से बड़े नामी-गिरामी डॉक्टरों को दिखाया, पैसा पानी की तरह बहा दिया। स्नेह के आगे पैसे का क्या मूल्य है? उन्होंने वहाँ से लक्ष्मणदासजी के घर (सोजत) अर्जेंट (शीघ्रगामी) तार दिलाया। तार मिलते ही लक्ष्मणदासजी के बड़े भाई फतहचन्दजी उन्हें सोजत लाने के लिए दिल्ली रवाना हुए। उन्हें क्या पता था कि हमारे भाई की बीमारी इतना भयंकर रूप ले लेगी? वे सीधे दिल्ली आए और आते ही अपने भाई की मरणासन्न हालत देखकर सन्न रह गए। कई प्रसिद्ध डॉक्टरों से मिलकर उन्होंने

सलाह ली, पर काल के आगे उन डॉक्टरों की क्या चल सकती थी? ‘टूटी की बूटी नहीं’ यह कहावत अक्षरशः सत्य है। कोई रोग होता तब तो ठीक हो जाते, पर यह तो मरण रोग था, जो अपना रूप बदल कर आया था। उसका वारंट खाली नहीं जा सकता था। वह आया और संवत् 1944 की मार्गशीर्ष कृष्ण 8 को आनंदकुमारीजी के पतिदेव को छीन ले गया। इस नवल जोड़ी को, जिसने अभी गृहस्थाश्रम की पगडंडी पर पैर रखा ही था, वह छिन्न-भिन्न कर गया। पूरे दो वर्ष भी इस जोड़ी को अखण्ड नहीं रहने दिया। वह निर्दय काल रूप गजराज इस खिलते हुए कोमल फूल को उखाड़ गया। लेखनी भी, जो इस दुःखद घटना को लिखने से पहले वज्र-सी बनी हुई थी, स्याही की बूँदें बरसा कर मानो अश्रुपात कर रही हैं।

फतहचन्दजी लक्ष्मणदासजी की शय्या के पास ही बैठे थे। थोड़ी देर पहले दोनों भाई बातें कर रहे थे और

सब हालत पूछ रहे थे। अचानक अपने भाई को मौन देखकर फतहचन्दजी ने मस्तक पर हाथ फेरते हुए कहा- लक्ष्मण! अब तुम्हारी तबीयत कैसी है? लक्ष्मणदासजी मौन थे। फतहचन्दजी ने सोचा-

‘शायद इसे निद्रा आ गई है।’ परन्तु वे तो सदा के लिए महानिद्रा की गोद में सो गये थे। उन्होंने तो अपना विश्रामस्थल और ही कहीं ढूँढ लिया था। नाड़ी देखी तो अवरूद्ध, बोली बन्द। बस, भाई के धैर्य का धागा टूट गया। उन्होंने समझ लिया कि मेरे भाई ने अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली है और इस असार संसार से उसने अपना डेरा उठा लिया है। शोक के आँसू उमड़ पड़े। उनका दाह-संस्कार वगैरह किया। उनका एक सहारा उनका भाई इस संसार से चला गया था। अतः अब दिल्ली में रहकर उन्हें क्या करना था। वे तुरन्त सोजत आ गए।

घर वाले तो यही सोच रहे थे कि फतहचन्द दिल्ली गया है इसलिए लक्ष्मणदास को लेकर ही लौटेगा। वे उनके आने की प्रतीक्षा में थे और आनंदकुमारीजी को भी अपने पीहर से बुलवा लिया था। आनन्दकुमारीजी



को उनकी माताश्री ने नहला-धुलाकर, वस्त्राभूषण पहना कर ससुराल भेजा था, पर मनुष्य का सोचा हुआ कुछ नहीं होता। 'तेरे मन कछु और है हरि के मन कछु और।'

फतहचन्दजी ने अपने भाई की आकस्मिक मृत्यु का दुःखद समाचार अपने कुटुम्ब को सुनाया। सारा कुटुम्ब ही नहीं, सारा नगर इस वज्राघात-सी घटना को सुनकर शोक-सागर में डूब गया। जिसने भी काल की यह निर्मम घटना सुनी वह वज्राहत-सा हो गया और सारे घर में कोहराम मच गया।

आनन्दकुमारीजी ने जब यह घटना सुनी तो आपकी आँखों के सामने अन्धेरा-सा छा गया। आपके पाँवों के नीचे से मानो भूमि खिसकने लगी। यह मर्मान्तक हाल सुनकर आपके ऊपर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। परन्तु आप क्या कर सकती थी? होनहार निश्चित होता है, संसार की कोई भी ताकत उसे रोक नहीं सकती। यह घड़ी तो हरगिज टाली नहीं जा सकती। आपको इस बात का बड़ा दुःख था कि अपने पतिदेव की अन्तिम समय में सेवा-शुश्रूषा न कर सकी, उन्हें कुछ भी सान्त्वना न दे सकी। दो वर्ष के लिए गृहस्थाश्रम की रंगस्थली पर यह नाटक देखना था। नाटक का एक अंक समाप्त हो गया है। यवनिका गिर गई है। अब आगे प्रकृति क्या नाटक दिखाती है, यह पाठक देखेंगे।

आनन्दकुमारीजी अब गृहस्थाश्रम की पगडण्डी पर अकेली चल रही है। उनका साथी बिछुड़ गया है। बार-बार दिल के दुःख-वाष्प से आँसुओं के बादल बनकर उमड़ते हैं, आप दिल की वाष्प समझा-बुझाकर रोकती हैं और पौछती हैं। कई मिलने वाले कुटुम्बी आते हैं और सान्त्वना देते हैं, पर आपके दिल पर जो ताजा घाव हो रहा है, वह झटपट कैसे दुरुस्त हो सकता है? कई बहिनें आती हैं और जबरदस्ती ही रोने का बहाना करके आपके सामने उस दुःखद घटना को ताजा कर देती हैं। सान्त्वना देने के बदले और अधिक रुलाती हैं। मारवाड़ में किसी सम्बन्धी की मृत्यु हो जाने पर रोने-पीटने की भयंकर प्रथा है। इस प्रथा के पीछे अधिकतर तो ढोंग चल पड़ा है। घर के किसी बड़े-बुजुर्ग के चले जाने पर उतने आँसू नहीं आते, क्योंकि वह तो अपनी जिन्दगी को किनारे लगाये ही बैठा था और परलोक जाने की प्रतीक्षा में था। उसके लिए भी नकली आँसू बहाकर

लोग अपनी आत्मा को आर्तध्यान में डालते हैं।

हाँ, सच्चा रोना तो किसी का भी रोका नहीं जा सकता, पर रोने के पीछे भी विवेक होना चाहिए। कई जगह देखा गया है कि रोना नहीं आता है तो बनावटी आँसू बहाकर झुंड की झुंड बहिनें, उस बहिन को, जिसका पति अभी-अभी परलोकगमन कर गया है; उसे रुलाती रहती हैं। उनके रोकर संवेदना प्रकट करने के लिए आने का भी तो निश्चित समय नहीं है। एक टोली आकर गई और दूसरी तैयार रहती है। मरने वाला तो परलोक चला गया, पर उसके पीछे बेचारी विधवा बहिन को ये रुला-रुला कर अधमरी कर डालती हैं। उसकी विरहाग्नि को बार-बार याद दिलाकर हवा देती रहती हैं और अग्नि को प्रज्वलित करती रहती है। ऐसी प्रथाएँ ज्यादातर अशिक्षित समाज में अन्धविश्वास के सहारे चल पड़ी हैं और अब भी जहाँ कहीं ये प्रथाएँ चल रही हैं, वहाँ अशिक्षा ही उनका प्रधान कारण है। जनता को और खासकर जैन कहलाने वाले लोगों को इस विषय में अधिक ध्यान देने की जरूरत है। उन्हें इस पर गहराई से सोचना चाहिये।

जैनधर्म किसी के मरने के बाद मृतात्मा का मिलन हो ही, यह बात नहीं मानता। वह तो कर्मसिद्धान्त पर चलने वाला है और कहता है- "किसी भी प्राणी की गति उसके शुभाशुभ कर्मों पर निर्भर है। ऐसी दशा में मृतात्मा के पीछे व्यर्थ ही रो-पीटकर अपनी आत्मा को शोक में डालने से क्या फायदा?"

आनन्दकुमारीजी कहा करती थी कि मेरे दादा ससुरजी के समय तक घर में किसी के मर जाने पर रोने-पीटने की प्रथा बिल्कुल नहीं थी। रामभक्त यही समझते थे कि हमें राम ने ही दिया है और रामजी ही ले गए। इसके लिए हम शोक-सन्ताप क्यों करें? पर बाद में दूसरे लोगों के सम्पर्क से यह प्रथा रामभक्त शलराजजी मूथा के घर में भी प्रचलित हो गई।

वास्तव में इस प्रथा के पीछे अज्ञान चक्कर काट रहा है। किसी की मृत्यु को कोई रोक नहीं सकता। जो जन्मा है वह एक दिन मरेगा ही। मरना कोई दुःख नहीं। उसने तो अपने पुराने चोले को बदल दिया है, इसमें दुःख किस बात का?

साभार- धर्ममूर्ति आनन्दकुमारी

-क्रमशः



बालमन में उपजे ज्ञान

15-16 मार्च 2023 अंक से आगे...

- मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

(बालमन अत्यन्त सरल, सहज होता है। उनके मन-मस्तिष्क में जैसी चाहे वैसी छवि बनाई जा सकती है। इसी प्रयास में बालमन में धर्म की प्रतिष्ठा करने का प्रयास किया जा रहा है। सभी बालक बड़े ही उत्साह से धर्म की बारीकियों को समझने का प्रयास कर रहे हैं और यह प्रयास उनके जीवन में अद्भुत परिवर्तन ला रहा है। 'बालमन में उपजे ज्ञान' धारावाहिक के अन्तर्गत निम्न विषयों पर रोचक जानकारी दी जा चुकी है-

- | | |
|---|--|
| 1. चातुर्मास संबंधित जानकारी | 2. चातुर्मासिक क्रियाएँ और सामायिक |
| 3. स्थानक में जाने संबंधी ध्यातव्य बिन्दु | 4. साधु-साध्वी व महत्तम महोत्सव संबंधी जानकारी |
| 5. भगवान महावीर और पाँच महाव्रत | 6. ज्ञानवृद्धि के 11 कारण |
| 7. श्रावक का वचन व्यवहार | 8. काम की बातें |
| 9. दृष्टि विवेक | |

उपर्युक्त शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्द्धक जानकारियों के बाद आगे पढ़ते हैं कि सौरभ की माताजी ने आगे क्या शिक्षा प्रदान की!)

सौरभ -

मम्मी! आज आप क्या बताने वाली हो? आज हमें क्या Interesting सुनने को मिलेगा?

सौरभ की माताजी -

आज मैं बताऊँगी कि तुम लोग कहाँ अपना नुकसान कर रहे हो।

सौरभ -

(सर खुजलाते हुए) नुकसान? चलो शाम को देखते हैं कि मम्मी क्या बताती है।

नीलिमा, पंकज, नितिन- नमस्ते आंटी!

(दृष्टि विवेक के बारे में जानकर सबकी दृष्टि में अलग ही चमक थी। अब इस दृष्टि का वे ज्ञान के विकास में कैसे उपयोग करें और अन्य दुरुपयोग से कैसे

सौरभ की माताजी -

बचें इस पर सौरभ की माताजी बताने जा रही थी। सभी बच्चे ध्यान से सुनते हैं।) बच्चो! जिस तरह हमने ज्ञान वृद्धि के 11 कारण पढ़े थे, उसी तरह आज हम ज्ञान हानि के 7 कारण पढ़ेंगे।

नीलिमा -

ज्ञान वृद्धि के कारण सबको याद है ना ?

हाँ आंटी.....। उन्हीं को ध्यान में रखकर हम सबने अच्छे से पढ़ाई की और अब Class में सबसे आगे रहते हैं।

नितिन -

हमारा Homework भी पूरा रहता है और रोज Learn भी कर लेते हैं।

सौरभ -

और रोज मम्मी की Class भी Timely attend हो जाती है।

(सभी हँसते हुए)

1. **आलस्य करे तो ज्ञान घटे** - ज्ञान अर्जन में यदि आलस्य किया कि आज नहीं कल करूँगा, कल नहीं अभी तो बहुत समय है तो.....

पंकज-

तो Exam आ जाते हैं आंटी!

सारे बच्चे हँसते हुए- इस कारण नया ज्ञान प्राप्त नहीं होता है और जो अर्जित किया है उसकी भी हानि होती है।

2. **निद्रा अधिक लेवे तो ज्ञान घटे** - जितना शरीर को स्वस्थ रखने व थकान मिटाने हेतु आवश्यक है उतनी ही नींद लेवें अन्यथा समय की बर्बादी का हर्जाना ज्ञान हानि के रूप में होगा।

3. **क्लेश करे तो ज्ञान घटे**- झगड़ा करने पर हमारी सारी सकारात्मक ऊर्जा उसमें खर्च हो जाती है। अतः बात कोई भी हो अनावश्यक क्लेश से बचें।

4. **शोक करे तो ज्ञान घटे** - मन के विपरीत कोई भी कार्य हो जाने पर मानवीय प्रकृति अनुसार हम शोक में डूब जाते हैं, जिसका कोई सार नहीं। क्योंकि बीता हुआ कुछ भी वापिस नहीं आता। आज के समय में ज्ञान हानि का यह मुख्य कारण है।

5. **चिन्ता अधिक करे तो ज्ञान घटे** - किसी भी कार्य की चिन्ता करने के बजाय समाधान पर ध्यान देना चाहिए। चिन्ता अधिक करने से हमारा चित्त स्थिर नहीं रहता और ज्ञान-हानि होती है।

6. **शरीर में रोग अधिक रहे तो ज्ञान घटे** - हमारा शरीर ज्ञानार्जन करने का स्रोत है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। मस्तिष्क स्वस्थ होने पर ही ज्ञान अर्जन होता है, नहीं तो शरीर में रोग होने पर ज्ञान-हानि होना निश्चित है।

7. **कुटुम्ब-परिवार के मोह में डूबा रहे तो ज्ञान घटे** - परिवार, दोस्त, रिश्तेदार के मोह से व्यक्ति कभी ऊपर नहीं उठ सकता। इस मोह को छोड़ना अथवा कम करना आवश्यक है अन्यथा हँसी-ठिठोली व ऊल-जलूल बातों से ज्ञान की हानि होना तय है।

(बच्चे जिन कारणों को साधारण समझ रहे थे, आज उनके नुकसान जानकर दंग रह गये। आज सभी बच्चे ज्ञान-हानि के कारणों को जानकर ज्ञान-वृद्धि का एक नया सफर तय करने को तैयार थे।)

- क्रमशः



सोशल मीडिया : एक भटकाव



15-16 मार्च 2023 अंक से आगे...

(जय जिनेन्द्र बच्चो! नाना गुरु की पैनी दृष्टि का उदाहरण देखने के बाद आप सबने अपने Good Box में दृष्टि की सजगता को सहेज लिया होगा। अगर हमारी दृष्टि सजग नहीं रहती है तो जीवन में कई भटकाव आ जाते हैं और वे भटकाव ऐसे होते हैं जिनसे पुनः मार्ग पर आना मुश्किल हो जाता है। दृष्टि का दुरुपयोग करके आज के बच्चे एवं युवा दृष्टि के भटकाव का मुख्य स्रोत बन गए हैं।) सो आइए जानते हैं-

जय जिनेन्द्र बच्चो!

सोशल मीडिया एक ऐसा जाल है जिसका निर्माण लोगों की निजी जानकारियों को एकत्रित करके उनका व्यावसायिक उपयोग करने के लिए किया गया है। किन्तु वर्तमान समय में लोग इस जाल में इस प्रकार फँस गए हैं कि उन्हें वास्तविकता का आभास भी नहीं होता है और वे दिन-प्रतिदिन इसमें उलझते ही जाते हैं। आज अधिकांश लोग सोशल मीडिया के भ्रमजाल में उलझ चुके हैं। उनकी मानसिकता पर यह भ्रम इतना हावी हो गया है कि जो लोग सोशल मीडिया के जाल में नहीं उलझेंगे वे पिछड़ जाएंगे।

सोशल मीडिया ने सभी आयु वर्ग के लोगों को प्रभावित किया है। लेकिन बच्चे तथा युवा वर्ग इससे अधिक प्रभावित हुआ है, क्योंकि इस आयु वर्ग ने स्मार्टफोन का उपयोग करना छोटी उम्र से ही शुरू कर दिया है, जिससे वे इसका उपयोग करने के आदी हो गए हैं।



सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के पीछे कुछ मुख्य कारण निम्न प्रकार हैं :-

1. प्रशंसा (लाइक्स) की इच्छा
2. किसी अन्य की नकल
3. स्वयं को आधुनिक दिखाने की होड़
4. फॉलोअर बढ़ाने की आकांक्षा



पिछले कुछ वर्षों से सोशल मीडिया पर लोगों को प्रभावित करने के उद्देश्य से “रील्स” (कुछ सेकंड या मिनट के वीडियो) बनाकर सोशल मीडिया पर पोस्ट करने का चलन बढ़ गया है।

वर्तमान समय में बच्चों के वीडियो रील बनाकर सोशल मीडिया पर पोस्ट करने का चलन भी बढ़ता जा रहा है। उनके माता-पिता को लगता है कि ऐसा करने से उनके बच्चों के साथ-साथ वे भी प्रसिद्ध हो जाएंगे। वास्तविकता में इस कार्य से वे प्रसिद्ध होंगे या नहीं यह तो पता नहीं, पर इससे उन बच्चों की मानसिकता पर अत्यंत विपरीत प्रभाव पड़ेगा। उन्हें यह लगने लगेगा कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए उन्हें सोशल मीडिया का सहारा लेना पड़ेगा और वे अपना अत्यधिक समय सोशल मीडिया का उपयोग करने में व्यतीत करने लगेंगे।

सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग से लोगों में विवेक की कमी आ गई है, जिससे उनके मन में किसी अन्य की नकल करने की इच्छा बलवती होने लगी है। अनेक बार किसी रील, वीडियो अथवा पोस्ट में किसी ड्रेस, आभूषण या कोई अन्य साधन देखकर लोग स्वयं भी बिना सोचे उन साधनों को प्राप्त करने की इच्छा करने लगते हैं, भले ही उन्हें उनकी आवश्यकता हो या नहीं।

सोशल मीडिया के अविवेकपूर्ण उपयोग से लोगों पर अनेक दुष्प्रभाव होते हैं, जिनके बारे में अधिकांश लोग जानते भी हैं। इनमें से कुछ निम्नानुसार है :-



1. अनियमित दिनचर्या,
2. अत्यधिक तनाव,
3. विवेक में कमी,
4. मानसिक समस्याएं,
5. मोह (लाइक्स की इच्छा) में वृद्धि।



सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों के बारे में अधिकांश लोग जानते तो हैं, लेकिन वे इसके मोह में इतना उलझ गए हैं कि इसको छोड़ नहीं पाते। सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव से बचने के लिए कुछ उपाय निम्न प्रकार है :-

1. विवेकपूर्ण उपयोग,
2. सीमित समय के लिए उपयोग,
3. सीमित संख्या में मित्र या फॉलोअर,
4. उपयोगी तथा ज्ञानवर्धक पोस्ट वाले ग्रुप्स में ही जुड़ना।

हर एक वस्तु के जितने नुकसान हैं, उतने फायदे भी हैं। सोशल मीडिया भी जाल या भटकाव अवश्य है, लेकिन यदि विवेकपूर्ण तथा सीमित समय के लिए इसका उपयोग किया जाए तो यह ज्ञान वृद्धि में भी सहायक सिद्ध हो सकता है। अतः इस भटकाव को केवल अपने ज्ञान की वृद्धि के लिए ही उपयोग करें।



Set Limits

—क्रमशः



आदि

प्रभु

एवं

अक्षय

तृतीया

— संकलित

दि न, तारीख, तिथियाँ कालचक्र के अनुसार परिवर्तित होती रहती हैं किन्तु कुछ तिथियाँ एवं तारीख विशिष्ट घटनाओं के कारण इतिहास के पन्नों पर अंकित हो जाती हैं। ऐसी तिथियों में एक तिथि है **अक्षय तृतीया**। यह तिथि जैन संस्कृति एवं हिन्दू संस्कृति में बहुत महत्वपूर्ण है। अक्षय अर्थात् जो कभी क्षय न हो वह अक्षय होता है। चन्द्रमा की कलाओं के अनुसार तिथियाँ होती हैं। कई तिथियाँ घटती व बढ़ती हैं, परन्तु वैशाख सुदी 3 अक्षय तृतीया न कभी घटती है, न ही कभी बढ़ती है अर्थात् न कभी क्षय होती है और न कभी दो होती है। इसीलिए इस तिथि को अक्षय तृतीया कहते हैं।

इस तिथि का सम्बन्ध दान से है। दान देना नहीं 'बोना' है। एक किसान खेत में 1 दाना बोता है, उससे एक पौधा प्रस्फुटित होता है। एक पौधे पर अनेक बीज या फल आते हैं। आम की एक गुठली से एक पौधा प्रस्फुटित हुआ, कई वर्षों तक एक पेड़ ने अनेक फल दिए। इसी तरह दान देना नहीं 'बोना' होता है। ठाणांग सूत्र में 10 प्रकार के दान का वर्णन किया गया है -

1. **अनुकम्पा दान** : दुःखी जीवों को दुःख से मुक्त करने के लिए दिया जाने वाला दान।
2. **संग्रह दान** : संकटग्रस्त को सहायता देना।
3. **भय दान** : डर के कारण दिया जाने वाला दान।
4. **कारुण्य दान** : करुणा (शोक) के कारण दिया जाने वाला दान।
5. **लज्जा दान** : लज्जा के कारण दिया जाने वाला दान।
6. **गौरव दान** : कीर्ति, बड़प्पन के लिए दिया जाने वाला दान।
7. **अधर्म दान** : पाप सेवन करने वालों को पाप सेवन करने के लिए दिया जाने वाला दान।
8. **धर्म दान** : धर्म के लिए दिया जाने वाला दान, सुपात्र दान। यह सर्वश्रेष्ठ दान है। धर्म दान से संसार परिभ्रमण सीमित परित होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।
9. **करिष्यति दान** : भविष्य में प्रत्युपकार की आशा से दिया जाने वाला दान।
10. **कृतदान** : किये हुए उपकार के बदले दिया जाने वाला दान।

इन दस प्रकार के दानों में सर्वश्रेष्ठ दान धर्मदान है, जिससे संसार परिभ्रमण परिमित होता है और अक्षय सुख मोक्ष पद की प्राप्ति होती है। इसी दान से अक्षय तृतीया का सम्बन्ध जुड़ा है।

इस अवसर्पिणी काल के प्रथम भूप, प्रथम मुनि, प्रथम भिक्षाचारी, प्रथम केवली, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव प्रभुजी ने दीक्षाकल्प के उदय होने पर 4000 भाइयों के साथ दीक्षा व्रत अंगीकार किया। आपने बेले के तप में सांसारिक सुखोपभोगों का त्याग कर महाव्रती निर्ग्रन्थ दीक्षा अंगीकार की, तत्पश्चात् आप एवं आपके साथी निर्ग्रन्थ मुनिराज प्रासुक आहार की गवेषणा के लिए नगर-नगर, ग्रामानुग्राम विचरण करते, परन्तु कहीं उन्हें एषणीय आहार-पानी सुलभ नहीं होता था। कई मुनिराज क्षुधा और तृष्णा से व्याकुल हो अन्य मार्गगामी हो गए। इन आदि भगवान के समय से 363 मत निकल गए। आदिनाथ प्रभु 410 दिन तक तपस्या में लीन रहे।

चन्द्रमा की कलाओं के अनुसार तिथियाँ होती हैं। कई तिथियाँ घटती व बढ़ती हैं, परन्तु वैशाख सुदी 3 अक्षय तृतीया न कभी घटती है, न ही कभी बढ़ती है अर्थात् न कभी क्षय होती है और न कभी दो होती है। इसीलिए इस तिथि के अक्षय तृतीया कहते हैं।

वैशाख सुदी तृतीया के दिन ऋषभदेव प्रभु प्रासुक आहार की गवेषणा हेतु भ्रमण कर रहे थे कि उनके प्रपौत्र श्रेयांसकुमार को आपके दर्शन हुए। जातिस्मरण ज्ञान से श्रेयांसकुमार ने जाना कि ये निर्ग्रन्थ मुनिराज हैं। ऐसे मुनिवरो के मैंने पूर्व में दर्शन किए हैं। आप आहार की गवेषणा कर रहे होंगे, अतः मुझे यह लाभ लेना चाहिये। श्रेयांसकुमार ऋषभ मुनिराज के सामने आए, उन्होंने मुँह पर उत्तरासंग लगाकर वन्दन, नमन कर पधारने का निवेदन किया। उसी समय उनके यहाँ इक्षुरस के घड़े लाए जा रहे थे। आपने ऋषभ प्रभु के सामने घड़ा कर दिया। प्रभु ने अंजलि बनाकर इक्षुरस से अपनी दीर्घकालीन तपस्या का पारणा किया। ऋषभ प्रभु का पारणा होते ही देवदुंदुभि बजने लगी तथा अचित्त फूलों एवं धन-वैभव की वर्षा होने लगी। वह दिन दान के लिए संसार में विख्यात हो गया। दान शुद्ध हो, दान देने वाला शुद्ध भाव से दान देवे और दानग्रहिता व्रतधारी, शुद्ध हो, सुपात्रदान

हो तो भवभ्रमण शीघ्र से समाप्त होता है।

आदि प्रभु और श्रेयांसकुमार ने दान की परिपाटी प्रारम्भ की। जैन संस्कृति के इतिहास में आज तक भी यह तप वर्षीतप के रूप में किया जाता है। तपस्वी सन्त-मुनिराज, श्रावक-श्राविकाएँ यह तप करते हैं। आदि प्रभु के लगातार 410 दिन का चौविहार तप था, परन्तु काल के अनुसार और शारीरिक अवगाहना पूर्व जैसी नहीं है। अतः आजकल एक दिन उपवास और एक दिन पारणा करते हैं और दो वर्ष तक यह चलता है। अक्षय तृतीया के दिन पारणा करते हैं। ऐसी तपस्या करने वाले सभी तपस्वियों की अनुमोदना कर हम पुण्योपार्जन करें। उन सभी तपस्वियों का हम हृदय से आभार एवं धन्यवाद व्यक्त कर स्वयं को कृतकृत्य करें।

भोजन के अभाव में भूखा रहना समस्या है। मिलते हुए भोजन को छोड़ना तपस्या है।

सभी तपस्वियों की सुख-शान्ति की पृच्छा करते हुए सभी के तप की अनुमोदना एवं मंगलमय जीवन व उत्तरोत्तर उन्नति की शुभकामनाएँ!

भक्तिरस

मुक्तक

- राजेन्द्र जैन 'अयोग्य', कुकड़ेश्वर

(एक)

अच्छे-बुरे का ज्ञान कबौ।
नमता नम का पान कबौ।
वही अनामक्त बनकन,
जीवन का उत्थान कबौ॥

(दो)

आमक्ति अनुवाग छौड दौ।
जीवन की एक नया मौड दौ।
मौक्ष मार्ग का अनुभवण हीगा,
वीतवाग मै क्नेह जौड दौ॥



ज्ञानी और अज्ञानी का स्वरूप

- डॉ. दिलीप धींग, बम्बोरा

(शोध-प्रमुख : जैनविद्या विभाग, शासुन महाविद्यालय)

ज्ञान संसार के समस्त रहस्यों को प्रकाशित करने वाला होता है।

ज्ञान ही मनुष्य जीवन का सार है।

आत्मा और आत्मज्ञान की दृष्टि से जैन दर्शन में ज्ञानी और अज्ञानी की विलक्षण परिभाषाएँ, व्याख्याएँ और टिप्पणियाँ मिलती हैं। ज्ञान को सारे सुखों का मूल स्रोत, कारण और चारित्र का आधार माना जाता है। दशवैकालिक सूत्र (4/10) में कहा गया है- **‘पठमं नाणं तओ दया’** अर्थात् पहले ज्ञान होना चाहिये, फिर उसके अनुसार आचरण होना चाहिये। वस्तुतः ज्ञानमय आचरण ही उद्देश्यपूर्ण और सुफलदायी होता है। जहाँ ज्ञानभाव है, वहाँ शुद्ध चारित्र रहता है। ज्ञानमय आचरण नहीं होने से सम्यक् चारित्र का होना संभव नहीं है। चारित्र के अभाव में न तो पुरुषार्थ होता है और न ही परमार्थ की प्राप्ति होती है। इस प्रकार अज्ञान दुःखों और कष्टों का मूल कारण बन जाता है। यूँ हम संसार में अच्छे पढ़े-लिखे, जानकार और होशियार व्यक्ति को ज्ञानी की संज्ञा दे सकते हैं, लेकिन जैन दर्शन की भाषा में ज्ञानी और अज्ञानी होने के अनेक मापदण्ड होते हैं।

माना जाता है। यदि जीव को सम्यग्दर्शन का स्पर्श नहीं हुआ है तो आध्यात्मिक दृष्टि से उसकी ढेर सारी जानकारियाँ भी ज्ञान के अन्तर्गत नहीं गिनी जाती हैं। जिसे सम्यग्दर्शन प्राप्त हो जाता है, उसका जो भी ज्ञान है, वह सम्यग्ज्ञान माना जाता है तथा उसे ज्ञानी माना जाता है। ऐसा ज्ञानी ही मानव जीवन में सही तरीके से मुक्ति की आराधना कर सकता है। इसीलिए दर्शन पाहुड में कहा गया है- **‘णाणं णरस्स सारो’**, अर्थात् ज्ञान ही मनुष्य जीवन का सार है। ज्ञान आत्मा का निज गुण है, मौलिक और असाधारण गुण है। गुण और गुणी, ज्ञान और ज्ञानी कभी अलग-अलग नहीं हो सकते हैं। ज्ञान और आत्मा में वस्तु भेद या द्रव्य भेद नहीं है। जैसे अग्नि और उष्णता अभिन्न है, वैसे ही आत्मा और ज्ञान अभिन्न है।

जैन दर्शन में सम्यग्दर्शन को सर्वाधिक महत्वपूर्ण

ज्ञान आत्मा का जन्म-जन्म का साथी है। जैन दर्शन में अभेद दृष्टि से ज्ञान को आत्मा और आत्मा को ज्ञान कहा गया है। ज्ञान स्वभावतः स्व-पर प्रकाशक है, इसलिए वह सर्व-प्रकाशक भी है। इसीलिए उत्तराध्ययन

जिससे तत्त्व का बोध हो, चित्त का निरोध हो और कर्म की निर्जरा हो, उसे ज्ञान कहते हैं।

जिसकी दृष्टि सम्यक् नहीं है, वह साधु भी बन जाए तो भी कोई फायदा होने वाला नहीं।

मेरेपन का भाव आत्मा को
आत्म-स्वभाव से दूर ले जाकर
विभाव (विपरीत या विकारी भाव)
में पटक देता है।

सूत्र (32/2) में कहा गया है- 'नाणस्स सव्वस्स पगासणाए' अर्थात् ज्ञान संसार के समस्त रहस्यों को प्रकाशित करने वाला होता है। वह अन्य वस्तुओं को जानने के साथ स्वयं को भी प्रकाशित करता है। जिस प्रकार दीपक अपने आपको प्रकाशित करता हुआ पर-पदार्थों को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार ज्ञानी अपने आपको जानता हुआ पर पदार्थों को जानता है। दीपक अपने प्रकाश से सभी वस्तुओं को प्रकाशित कर देता है, लेकिन दीपक और प्रकाशित वस्तुएँ अलग-अलग ही रहती हैं।

अतः स्पष्ट है कि न तो ज्ञेय से ज्ञान उत्पन्न होता है और न ही ज्ञान से ज्ञेय उत्पन्न होता है। ज्ञान और ज्ञेय, दोनों अपने-अपने स्वरूप में अवस्थित रहते हैं। तत्त्व के इस यथार्थ चिन्तन के आधार पर ज्ञान और ज्ञानी का स्वरूप जाना और समझा जाता है। मूलाचार में कहा गया है कि जिससे तत्त्व का बोध हो, चित्त का निरोध हो और कर्म की निर्जरा हो, उसे ज्ञान कहते हैं।

आगम साहित्य में ज्ञानी को सम्यग्दृष्टि और सम्यग्दृष्टि को ज्ञानी कहा गया है। नन्दीसूत्र के अनुसार सम्यग्दृष्टि की सभी जानकारियाँ श्रुतज्ञान के अन्तर्गत मानी जाती है और मिथ्यादृष्टि की शास्त्रीय जानकारियाँ

ज्ञानी होने के लिए अनेकान्त दृष्टि
का होना आवश्यक है।

जो व्यक्ति संसार के इन
संयोगजनित सम्बन्धों को व संसार
की क्षणिकता को समझ लेता है,
उसे ज्ञानी कहा जाता है।

भी श्रुत-अज्ञान मानी जाती है- 'समद्विद्विस्स सुयं सुयणाणं, मिच्छाद्विद्विस्स सुयं सुयअत्राणं', अर्थात् आत्मज्ञान के नजरिये से जिसकी दृष्टि सम्यक् नहीं है, जिसे भेदज्ञान नहीं हुआ है; उसे मिथ्यादृष्टि या अज्ञानी कहा जाता है। सम्यग्दर्शन के अभाव में शास्त्र-रचना, धर्म-चर्चा, भगवान की भक्ति, ध्यान, इन्द्रिय-दमन, योग-साधना आदि सभी क्रियाएँ फलहीन हो जाती हैं। अच्छी दिखाई देने वाली क्रियाएँ भी यदि समझ, विवेक और सही दृष्टि के साथ नहीं की जाती हैं तो उनका वांछनीय फल नहीं मिलता है। और तो और, जिसकी दृष्टि सम्यक् नहीं है, वह साधु भी बन जाए तो भी कोई फायदा होने वाला नहीं।

आध्यात्मिक हित की दृष्टि से ज्ञान और ज्ञानी की अनेक कसौटियाँ और विशेषताएँ हैं। सभी प्रकार के कर्मों और कर्मफलों में ममत्व, एकत्व और स्वामित्व रखना अज्ञानी का लक्षण है। शरीर, परिवार, व्यापार, प्रतिष्ठा आदि के प्रति ममता या आसक्ति ही जीव में अहंकार पैदा करती है। अहंकार से दूसरे कषाय (क्रोध, माया, लोभ) पैदा होते हैं। मेरेपन का भाव आत्मा को आत्म-स्वभाव से दूर ले जाकर विभाव (विपरीत या

आत्मज्ञान से धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप
आदि का विवेक जागृत होता है।

विकारी भाव) में पटक देता है। इसलिए आगम में कहा गया है कि जो व्यक्ति अपने से भिन्न पदार्थों में; घर, परिवार, परिजन, धन-दौलत, ग्राम, नगर आदि को अपना मानता है तो वह मूढ़ और अज्ञानी है।

यदि कोई इन पदार्थों में भूतकालीन या भविष्यकालीन सम्बन्धों को भी वर्तमान से जोड़ता है तो वह अज्ञानी है। अतीत और भविष्य को वर्तमान से जोड़ने पर वर्तमान का नुकसान होता है, आत्मा का नुकसान होता है। भूतकालीन सुख-दुःख और भविष्यकालीन काल्पनिक सुख-दुःख के बारे में सोचकर हर्षित या व्यथित होना व्यर्थ है। हम अपने रोजमर्रा के व्यवहार में देखते हैं कि व्यक्ति तमाम सांसारिक वस्तुओं, चल व अचल सम्पत्तियों, सम्बन्धियों और मित्रों को 'मेरा' कहता है। इन सांसारिक व्यक्तियों और वस्तुओं के साथ कहीं वह ममता जगाता है तो कहीं स्वामित्व स्थापित करता है। लेकिन ये सारे रिश्ते-नाते, सम्बन्ध, अनुबंध, भोग-सामग्रियाँ, कीर्ति, प्रतिष्ठा आदि संयोगजनित हैं, इसलिए बिल्कुल अस्थायी हैं। जो व्यक्ति संसार के इन संयोगजनित सम्बन्धों को तथा संसार की क्षणिकता को समझ लेता है, उसे ज्ञानी कहा जाता है।

ज्ञानी इन सम्बन्धों में ममत्व नहीं रखता है। ज्ञानी संसार के व्यवहार और आत्मा की साधना, दोनों में अपनी विशेष छाप छोड़ता है। ज्ञानी आत्मानुशासित

होता है। ज्ञानी उपादान को देखता है। वह वास्तविक कारण को जानकर हर समस्या का समाधान करता है। यथार्थ को जानने के कारण से वह जो बाहर में दिखाई पड़ता है, उसमें नहीं उलझता है। वह बाहर से निर्लिप्त और निरासक्त रहता है। इस सजगता के कारण से वह अपनी आध्यात्मिक उन्नति करता है। वास्तव में ज्ञानी होने के लिए अनेकान्त दृष्टि का होना आवश्यक है। एक ही दृष्टि से जान लेना ज्ञानी होना नहीं है। ज्ञानी होने के लिए सभी दृष्टियों से जानना आवश्यक है। सच्चा ज्ञानी एकान्त दृष्टि के प्रति आग्रह नहीं रखता है। अनेकान्त दृष्टि से सारी उलझनें समाप्त हो जाती हैं और ज्ञाता-द्रष्टा भाव बढ़ता है।

ज्ञान वही है जो सम्यग्दर्शन से युक्त है और प्रबुद्ध है। प्रबुद्धजनों का संयम, सूत्रज्ञान, प्रव्रज्या (दीक्षा) आदि अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण होता है। वस्तुतः आत्मज्ञान ही संयम और शास्त्रज्ञान है। आत्मज्ञान से धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप आदि का विवेक जागृत होता है। जब तक दृष्टि सम्यक् नहीं बनती है, तब तक जीव स्वर्ग के सुख भी पा लेता है, लेकिन उसका संसार-परिभ्रमण का अन्त नहीं आता है। इसे यूँ भी समझ सकते हैं कि जिसकी दृष्टि विशुद्ध बन जाती है, उसकी सारी जानकारियाँ सम्यक् ज्ञान के अन्तर्गत आ जाती हैं। सम्यग्दृष्टि का थोड़ा-सा ज्ञान भी **ज्ञान** है और मिथ्यादृष्टि का बहुत सारा ज्ञान भी **अज्ञान** है।

ज्ञान अन्तर से प्रकट हो

— आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

आज ज्ञान को अर्जित किया जा रहा है, जबकि ज्ञान अन्तर से प्रकट होना चाहिये। ज्ञान का दरिया हमारे भीतर भरा हुआ है। उसका स्रोत प्रवाहित करना है। पुस्तकों आदि से उपार्जित ज्ञान आन्तरिक ज्ञान के प्रकटीकरण में साधन बनता हो तो वह लाभप्रद हो सकता है। अन्यथा वह केवल मस्तिष्क में भार रूप ही होगा। टेपरिकॉर्डर व कम्प्यूटर में सारे आगमों को भरा जा सकता है, बल्कि भर भी लिया गया है। वैसे ही मस्तिष्क में भी कर लें, लेकिन उसकी उपयोगिता क्या? अभावी दस पूर्वों से कुछ कम तक का ज्ञान कर लेता है, पर वह उपार्जित ज्ञान उसके लिए आत्मकल्याण में सहायक नहीं होता। अतः ज्ञान अन्तर से प्रकट होना चाहिये।

साभार— नीरव का रव



ज्ञान की महिमा

– प्रो. सुमेरचन्द जैन
बीकानेर
(पूर्व प्राचार्य एवं पूर्व प्रान्तपाल)

संसार में एक भी प्राणी ऐसा नहीं है, जिसमें ज्ञान न हो। उपयोग आत्मा का लक्षण है और वह आत्मा में अवश्य रहता है। भले ही चेतना की हीन अवस्था में वह ज्ञान सम्यक् न होकर मिथ्या हो, परन्तु आत्मा में ज्ञान की सत्ता से इन्कार नहीं किया जा सकता।

जै न सिद्धान्त में ज्ञान को परम मांगलिक माना गया है। मंगल का प्रतिपादन करते हुए श्री जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने ज्ञान को भाव मंगल कहा है। **ज्ञान वह उज्वल प्रकाश है** जो मोक्ष के मार्ग को आलोकित करता है, जो सिद्धि के पथ को प्रशस्त बनाता है। **ज्ञान वह दिवाकर है** जो मोह की निशा के घनघोर अन्धकार को दूर कर आत्मा को अपूर्व आभा से प्रकाशमान बना देता है। **ज्ञान वह सुधाकर है** जो पाप के ताप को मिटाकर आत्मा को स्वानुभूति की शीतल रश्मियों द्वारा प्रफुल्लित करता है। **ज्ञान वह नेत्र है** जो आत्मा की अनमोल निधि का साक्षात्कार कराता है। **ज्ञान वह दर्शन है** जो आत्मा को अपने अनन्त स्वरूप वैभव की अपूर्व अनुभूति कराता है। **ज्ञान ऐसा अद्भुत नेत्र है** जो आगे-पीछे, आमने-सामने, ऊपर-नीचे सब ओर देखता है। ज्ञान त्रिभुवन के समस्त प्रमेयों, पदार्थों को देखने की क्षमता रखता है। ज्ञान के सभी नेत्रों के खुलने पर ही आत्मिक वैभव और आध्यात्मिक जगत् का विराट स्वरूप दृष्टिगोचर होने लगता है। ज्ञान के द्वारा संसार और मोक्ष की वस्तुस्थिति की प्रतीति होने पर ही साधना और आराधना का द्वार खुलता है। इसलिए दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है— **‘पहले ज्ञान फिर दया। अज्ञानी कल्याण-अकल्याण को क्या समझेगा?’**

समस्त संयमी चेतनाएँ पहले सम्यक् ज्ञान प्राप्त करती हैं और बाद में दया का अर्थात् संयम का यथावत् आचरण करती हैं। जिसे जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्वों का ज्ञान नहीं है, वह जीवरक्षा संयम का आचरण नहीं कर सकता। जिसे सत्-असत् का विवेक नहीं है, जो आश्रव और संवर के स्वरूप का ज्ञाता नहीं है, वह कैसे आश्रवों का त्याग करेगा और किस प्रकार संवर से संवृत्त होगा। निर्दोष संयम का पालन करने के लिए पहले प्रयोजनभूत सम्यक् ज्ञान की अनिवार्य आवश्यकता है। मुमुक्षु के लिए प्रयोजनभूत ज्ञान वह है जिससे आत्मा का वास्तविक स्वरूप प्रतीत हो। आत्मा अपने स्वरूप से क्यों च्युत हुआ है? किन उपायों का अवलम्बन लेने से वह अपने मूल स्वरूप को प्राप्त कर सकता है? जीव क्या है? उसकी रक्षा किस प्रकार की जा सकती है? इत्यादि बातों को जानना प्रयोजनभूत ज्ञान है, क्योंकि मोक्ष मार्ग के लिए यही उपयोगी होता है।

भगवती सूत्र में कहा गया है कि जब तक जीव-अजीव

आदि तत्त्वों का यथार्थ ज्ञान नहीं होता, तब तक संयम की स्थिति नहीं बनती। यही नहीं, यदि अज्ञानी संयम पालने का दावा करता है तो वह मिथ्या भाषी है, संयमहीन है, एकांत हिंसक और एकांत बाल है। जिस चिकित्सक को रोग के स्वरूप का ज्ञान नहीं है, उसके निदान का पता नहीं है, रोगी की प्रकृति की पहचान नहीं है, रोग के निवारण के उपायों को नहीं जानता, वह रोग को दूर कर नहीं सकता। इसी प्रकार भव रोग का स्वरूप, उसका निदान, उस भव रोग से मुक्त होने के उपाय को जो सम्यक् प्रकार से नहीं समझता है, वह संसार की बीमारी से छूटकर आध्यात्मिक स्वस्थता प्राप्त नहीं कर सकता। कहा गया है कि आत्मा के यथार्थ को न जानने से जो दुःख उत्पन्न हुआ है, वह आत्मज्ञान से ही विनष्ट किया जा सकता है। आत्मज्ञान से रहित पुरुष तपस्या के द्वारा भी दुःख का क्षय नहीं कर सकता। क्योंकि आत्मज्ञान हीन तप का फल मोक्ष मार्ग के लिए अनुपयोगी होता है।

ज्ञान आत्मा का मौलिक गुण है। आत्मा गुणी है और ज्ञान उसका स्वाभाविक गुण है। ज्ञान के अभाव में आत्मा की कल्पना करना संभव नहीं है। ज्ञान और आत्मा में तादात्म्य संबंध माना गया है। जिनमें तादात्म्य संबंध होता है, वे एक-दूसरे से अलग नहीं रह सकते। ज्ञान आत्मा का निजी गुण है। वह आज से नहीं अनंतानंत काल से सदासर्वदा इस आत्मा में रहा है और आत्मा में ही रहेगा। **संसार में एक भी प्राणी ऐसा नहीं है, जिसमें ज्ञान न हो। उपयोग आत्मा का लक्षण है और वह आत्मा में अवश्य रहता है। भले ही चेतना की हीन अवस्था में वह ज्ञान सम्यक् न होकर मिथ्या हो, परन्तु आत्मा में ज्ञान की सत्ता से इन्कार नहीं किया जा सकता।**

यह प्रश्न सहज ही उत्पन्न होता है कि आत्माओं में पाए जाने वाले ज्ञान की न्यूनाधिकता का क्या कारण है? मौलिक गुण की दृष्टि से सब जीवात्माएँ समान हैं तो

ज्ञान की अनन्त गुणा न्यूनाधिकता का क्या हेतु है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि यद्यपि आत्मा का मौलिक गुण एक-सा है तथापि विभाव-दशा में आत्मा ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के आवरण से आवृत्त होती है। यह आवरण जितना घना या हल्का होता है, उसी अनुपात में आत्मा की चेतना शक्ति व्यक्त होती है। यदि आवरण अव्यक्त सघन है तो आत्मा के ज्ञान की मात्रा बहुत ही कम होती है। जितने अंशों में आवरण की सघनता कम होती जाती है, उतने अंशों में ज्ञान की मात्रा अभिव्यक्त होती रहती है। जिस प्रकार सूर्य मेघों के आवरण से आवृत्त होता है तो उसका प्रकाश न्यूनाधिक होता रहता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि चाहे जितने घने बादल सूर्य को घेर लें, परन्तु सूर्य का कुछ अंश अनावृत्त ही रहता है और इसी कारण दिन और रात्रि का भेद बना रहता है। इसी प्रकार आत्मा पर ज्ञानावरणीय कर्म के कितने ही घने आवरण आ जाएँ, आत्मा की चेतना का अनन्तवां भाग अनावृत्त ही रहता है, जिसके कारण उसमें ज्ञान की न्यूनतम मात्रा बनी ही रहती है।

सम्यक् दर्शन सहित सम्यक् ज्ञान के बिना चारित्र की प्राप्ति नहीं हो सकती। ज्ञान के द्वारा जीव हिताहित में विवेक करता है, लोकालोक के स्वरूप को समझता है, जड़-चेतना का भेदज्ञान करता है, बंध और मोक्ष को जानता है। दर्शन द्वारा वह सम्यक्त्व पर श्रद्धान् करता है, अपने ध्येय, हेय-ज्ञेय-उपादेय के प्रति दृढ़ आस्थाशील होता है और चारित्र के द्वारा हेय को छोड़कर उपादेय को अंगीकार करता है। तप के द्वारा आत्मा के कर्ममैल को जलाता है। इसीलिए कहा गया है कि जो व्यक्ति श्रेष्ठ चारित्र से रहित है, परन्तु सम्यक् ज्ञान में श्रेष्ठ है और प्रवचन की प्रभावना करता है तो वह उसकी अपेक्षा श्रेष्ठ है। जो दुष्कर तप आदि तो करता है, परन्तु ज्ञानरहित सम्यक् ज्ञान रहित है, उसे सम्यक् ज्ञान की महिमा और गरिमा को समझकर ज्ञान सम्पादन में यत्न करना चाहिये।



ज्ञान अर्थात् जानना। ज्ञान सभी जीवों में पाया जाता है, लेकिन सभी जीवों के ज्ञान में समानता नहीं होती है। ज्ञान जीव का लक्षण है। प्रयास, पुरुषार्थ से ज्ञान को विकसित किया जा सकता है। ज्ञान की बड़ी महिमा है। रत्नत्रय में भी ज्ञान को प्रथम क्रम पर रखा गया है, क्योंकि दर्शन एवं चारित्र की आराधना के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है।

ज्ञान को प्रकाश की और अज्ञान को अंधकार की उपमा दी गई है। प्रकाश एवं अंधकार दोनों एक साथ नहीं रह सकते। जहाँ प्रकाश हो जाता है वहाँ अंधकार टिक नहीं पाता। ठीक इसी प्रकार ज्ञान के प्रकट होने के साथ ही उतने ही अंश में अज्ञान भी दूर हो जाता है।

क्योंकि आँखों पर पट्टी यानी अज्ञान अभी तक बना हुआ है। अब अगर उस पट्टी को हटा दिया जाए तो वह उस दायरे से आगे बढ़ने का प्रयास भी करेगा और सफल भी होगा। कारण, अब उसका पट्टी रूपी अज्ञान दूर हो चुका है।

ठीक उसी तरह हमारे भीतर जो अज्ञान व्याप्त है, वह हमें आगे नहीं बढ़ने देता। उसे दूर किये बिना सारी क्रियाएँ घाणी के बैल के समान ही होगी। परिणाम वही- 'ढाक के तीन पात'।

एक जिज्ञासा अवश्य उभर आती है। ज्ञान कैसे प्राप्त किया जाए? समाधान है- पढ़ना, सुनना, देखना एवं फिर इन पर चिन्तन, अनुप्रेक्षा करना। पढ़ने, स्वाध्याय करने, सुनने, चारित्रात्माओं के प्रवचन एवं जिनवाणी श्रवण करना तथा इन सब पर चिन्तन करना, ये सब ज्ञान वृद्धि के उपाय हैं।

आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के जीवन चरित्र का एक प्रेरक प्रसंग है-

ज्ञान

विवेक :

अंधकार से

प्रकाश

की ओर

- सुरेश बोरदिया
मुम्बई

ज्ञान हमें महान बना सकता है। आत्मा से परमात्मा बनाने में ज्ञान सक्षम है। आवश्यकता है ज्ञान को बढ़ाने एवं प्राप्त करने की। क्योंकि आत्मकल्याण के लिए आगार या अणगार दोनों धर्म की आराधना ज्ञान के बिना नहीं हो सकती है। कितनी भी क्रिया कर ली जाए, लेकिन ज्ञान के अभाव में क्रिया अभिष्ट फल प्रदान नहीं कर सकती। बिना ज्ञान की क्रिया का परिणाम शून्य ही होगा।

घाणी का बैल जिसकी आँखों पर पट्टी बंधी रहती है, वह रस्सी द्वारा खूँटे से बंधा हुआ दिनभर चलता रहता है। लेकिन फिर भी वह एक निश्चित दायरे से आगे नहीं बढ़ पाता, क्योंकि आँखों पर पट्टी बंधी होने से वह रस्सी, खूँटे आदि को देख नहीं पा रहा है। यही अज्ञान है। कदाचित् उसकी रस्सी को खूँटे से अलग कर दिया जाए तो भी वह उस दायरे से बाहर नहीं बढ़ पाएगा,

सांसारिक अवस्था में आपश्री के शरीर में वेदना उत्पन्न हो गई थी। सभी तरह के उपाय निष्फल हो चुके थे। एक दिन आपश्री अनाथीमुनि का जीवन चारित्र पढ़ रहे थे कि किस तरह अनाथीमुनि के शरीर में छाई हुई वेदना उनके संयम लेने के संकल्प मात्र से दूर हो गई। आपश्री ने वह चारित्र पढ़ा, उस पर चिन्तन, अनुप्रेक्षा की और स्वयं भी ऐसा ही संकल्प ले लिया कि मेरी भी वेदना मिट जाएगी

तो मैं भी संयम ग्रहण कर लूँगा।

शुभ संकल्प का शुभ परिणाम हुआ कि वेदना शान्त हो गई। अनाथीमुनि का प्रसंग एक बार फिर से जीवन्त हो उठा। जीवन परिवर्तन करने वाली घटना की पुनरावृत्ति हो गई। यह था **स्वाध्याय** का प्रभाव। पढ़ने के बाद हुए **चिन्तन**, **अनुप्रेक्षा** का परिणाम। पढ़ने से जो ज्ञान प्राप्त हुआ वह अब आचरण में उतरने के लिए आतुर था। संकल्प वास्तविकता बनने हेतु बेताब हो उठा और यथासमय आपश्री ने अपने संकल्प को पूर्ण करते हुए संयम ग्रहण किया। आज हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि पढ़े हुए ज्ञान, लिए गए एक संकल्पमात्र ने आपश्री को कितना महान बना दिया। नवकार महामंत्र के तीसरे पद में नर और नरेन्द्र तो क्या सुर और सुरेन्द्र तक जिनके चरणों में नतमस्तक हो जाते हैं। यह है ज्ञान का प्रभाव और ज्ञान की महिमा, जिसने न सिर्फ आपश्री का जीवन बदल दिया, महान बना दिया, बल्कि सैकड़ों भव्यात्माओं का भी जीवन परिवर्तन कर उन्हें मोक्ष-मार्ग पर आरूढ़ कर दिया।

सुनने से भी ज्ञान प्राप्त होता है। याद करते हैं आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के बचपन को। बाल्यावस्था में गोवर्धन (बालक नाना) को माताजी द्वारा की जाने वाली सामायिक आदि धर्मक्रिया भी पसंद नहीं थी, लेकिन प्रसंगवश भादसोड़ा में मुनि श्री चौथमलजी म.सा. के श्रीमुख से छठे आरे का वर्णन सुनने का अवसर मिला। सुनकर **चिन्तन** चला और परिणाम वैराग्य की प्राप्ति। तत्पश्चात् के पूरे जीवन चरित्र से आप सभी परिचित ही हैं। यह था सुनने से प्राप्त हुए ज्ञान का प्रभाव, जिसने बचपन में धर्मक्रिया में बिल्कुल रुचि नहीं रखने वाले बालक नाना को समता का मसीहा आचार्य श्री नानेश बना दिया। स्पष्ट है कि **ज्ञान हमें निश्चित ही महान बनाने में सक्षम है।**

देखने से भी ज्ञान प्राप्त होता है। जीवन में हम कई घटनाएँ, प्रसंग जो देखते हैं, उनसे हमें ज्ञान उत्पन्न

हो सकता है। भरत चक्रवर्ती जैसे अत्यन्त रिद्धि सम्पन्न जब अरिसा भवन में अपनी वस्त्र अलंकार रहित देह को देखते हैं तो चिन्तन चलता है कि यह है मेरी काया का वास्तविक स्वरूप। **अनुप्रेक्षा** गहन होती चली गई और वहीं खड़े-खड़े केवलज्ञान प्राप्त हो गया। केवलज्ञान जैसा सर्वोच्च ज्ञान मात्र अपने आपको देखने, **चिन्तन** करने मात्र से प्राप्त हो गया। अतः स्पष्ट है कि देखने से भी ज्ञान प्राप्त होता है।

उपरोक्त वर्णित विषयों से यह तो स्पष्ट हो गया कि पढ़ने, सुनने और देखने से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यकता होती है विनय की। ज्ञान का मूल विनय होता है- **‘विद्या ददाति विनयं’** बिना विनय के चाहे कितना भी पढ़ लिया जाए, सुन लिया जाए, देख लिया जाए, लेकिन विनय के बिना ज्ञान नहीं हो सकता।

कुएँ में बाल्टी को उतारा जाता है तो उसे पानी से भरने के लिए झुकना पड़ेगा। झुके बिना बाल्टी रिक्त ही रहेगी, यह झुकना ही विनय है। झुकने से व्यक्ति महान बन सकता है-

**नर की और नल नीर की गति एक समान।
जेतो नीचे हो चले, तेतो ऊँचो होय।।**

टंकी से पानी जितना नीचे उतरता है, उतना ही पुनः ऊपर उठने में सक्षम होता है। मनुष्य भी जितना झुकेगा, विनयवान बनेगा, उतना ही ज्ञान से सम्पन्न होगा। ज्ञान प्राप्त करने के लिए ही नहीं, उसके बाद भी विनय की आवश्यकता रहती है। विनय के अभाव में अभिमान हो सकता है, जो ज्ञान के लिए घातक होता है। विनय ज्ञान के साथ-साथ ज्ञानदाता के प्रति भी होना चाहिये। ज्ञान देने वाला गुरु होता है। उनके प्रति विनय न रखना उनके उपकार के प्रति अपकार ही होगा।

एक गडरिया जंगल में तालाब के किनारे भेड़ें चराया करता था। एक दिन उसने एक बगुले को देखा जो तालाब में तैरती मछली को अपनी चोंच में दबाकर उड़ गया। सहसा

मछली उसकी चोंच से छूटकर नीचे की तरफ गिरने लगी तो बगुला तीव्र वेग से नीचे की तरफ आने लगा। अब मछली हवा में ऊपर थी और बगुला उसके ठीक नीचे आकर आकाश की ओर चोंच को खोलकर हवा में स्थिर हो गया। नीचे गिरती हुई मछली को उसने पुनः अपनी चोंच में पकड़ लिया और पुनः ऊपर उड़ गया।

गडरिया पूरी घटना को ध्यान से देखता रहा। बगुला उसकी नजरों से ओझल हो चुका था, लेकिन उसके दिमाग में वह घटना अच्छी तरह बैठ चुकी थी। देखी हुई घटना पर चिंतन चला कि बगुला जो कर सकता है, वह मैं क्यों नहीं कर सकता? मुझे भी प्रयास करना चाहिये। उसने बगुले को गुरु मान लिया और तत्काल अभ्यास करने लगा। शुरुआत में वह पतली लकड़ी को हवा में उछालता और हथेली पर झेलता। अभ्यास होते-होते वह लकड़ी को खड़ी ही ऊपर की ओर उछालकर अंगुली पर झेलने लगा। धीरे-धीरे पतली लकड़ी के बजाय भेड़ें हाँकने वाली लकड़ी को खड़ी ही उछालकर झेलने लगा। पारंगत होने के साथ-साथ और अधिक सीखने की लालसा भी पनपती गई। एक दिन लकड़ी के बजाय भाला लिया और उसकी तीखी नोक वाले सिरे को नीचे की तरफ रखकर ऊपर की तरफ उछाला और बड़ी चतुराई से उसे हाथों में, फिर अंगुली पर झेलने में सफल हो गया।

सीखने की लालसा अभी तक बरकरार थी। अब वह भाले के तीक्ष्ण नोक वाले सिरे को अपनी जीभ पर झेलने लगा। देखकर लोग आश्चर्यचकित होते। नगर में, राज्य में, यहाँ तक कि राज दरबार में भी उसकी चर्चा

होने लगी। राजा ने उसे अपने दरबार में बुलाया और उसे अपनी कला का प्रदर्शन करने का आग्रह किया।

गडरिये ने अपने अंदाज में भाले को ऊपर उछाला और बगुले की तरह मुँह को ऊपर की ओर खोलकर खड़ा हो गया। गिरते हुए भाले को अपनी जीभ पर झेल लिया। राजा, मंत्री, दरबारी, जनता सब चकित, किसी को भी विश्वास नहीं हो रहा था। उसने एक बार नहीं, दो बार नहीं, तीन बार ऐसा करतब दिखाया। उसके मन में अभी तक अपने ज्ञान के प्रति विनय मौजूद था। यहाँ तक कि उस बगुले के प्रति भी विनय था कि उसके कारण ही वह राज दरबार तक पहुँच पाया।

सहसा राजा ने पूछ लिया- 'तुम्हारी यह विद्या अद्भुत है। यह आपको किसने सिखाई?' गडरिये के मन में रहा विनय सभा द्वारा प्रशंसा करने के बाद अभिमान में बदल गया। न ज्ञान के प्रति और न ही ज्ञानदाता के प्रति विनय। गर्वित होकर कहा- 'यह विद्या मैंने स्वयं ही सीखी है। मेरा कोई गुरु नहीं है।'

ईनाम देने से पहले राजा ने कहा- एक बार फिर से अपनी कला दिखा दो। गडरिये ने खुश होकर भाला उछाल दिया और उसे जीभ पर झेलने लगा, लेकिन..... इस बार भाला उसकी जीभ को बीधता हुआ गर्दन के आर-पार हो गया। धड़ाम से गिरते ही उसकी जीवन-लीला समाप्त हो गई। कई बार सफलतापूर्वक प्रदर्शन करने के बावजूद इस बार असफल हो गया। कला, विद्या, ज्ञान का ही नहीं, जीवन का भी अन्त हो गया। क्योंकि इस बार ज्ञान के साथ विनय नहीं, अभिमान था, गर्व था, जिसने ज्ञान के साथ जान को भी खत्म कर दिया।

“ यह था बिना विनय के ज्ञान का प्रभाव, ज्ञान के साथ विनय नहीं होने, ज्ञानदाता के प्रति विनय नहीं होने का परिणाम। अतः ज्ञान के प्रति हमें कभी भी गर्व नहीं करना चाहिये, क्योंकि ज्ञान का मूल विनय है। बिना मूल के वृक्ष कभी नहीं टिक पाता। अतः ज्ञान के साथ विनयवान बनें। गर्व हमारे ज्ञान को गला देता है, जला देता है। इसलिए ज्ञान और ज्ञानदाता के प्रति सदा विनयवान बने रहेंगे तो हमारा ज्ञान बढ़ता रहेगा। ”



स्वयं में 'स्व' की खोज ही आत्मज्ञान है

— पदमचन्द गाँधी,
जयपुर



हमारे शास्त्रों में एवं आम वचनों में जो सबसे मूल्यवान उपदेश है, वह है स्वयं को जानो। 'आत्मानम् विद्धि:', 'अप्य दीपो भव:' स्वयं को जाने बिना सब कुछ जाना हुआ बेकार है और स्वयं को जान लेने के बाद और कुछ जानना शेष नहीं रह जाता। जीवन की वास्तविक सफलता और सार्थकता के लिए, मनुष्य के लिए स्वयं के भीतर 'स्व' की खोज एक अनिवार्यता है। लेकिन मनुष्य अपने स्वरूप को नहीं पहचानता। भीतर का वास्तविक स्वरूप 'स्व' क्या है? जिसे वह बार-बार 'मैं' कहता है, वह 'मैं' क्या है? इस धरा पर स्वयं के जीवन का उद्देश्य क्या है? वह यहाँ क्यों आया है? इन सभी प्रश्नों का उत्तर ही आत्मज्ञान है। इन प्रश्नों के आवरण को तोड़े बिना आत्मज्ञान की उपलब्धि असम्भव है। अतः 'स्व' की खोज ही परम पुरुषार्थ है, परमज्ञान है। इसका एकमात्र उपाय है भीतर की यात्रा अर्थात् 'परभाव' से 'स्वभाव' की यात्रा। प्रभु महावीर ने 'स्व' की यात्रा में ही जीवन व्यतीत किया और केवलज्ञान प्राप्त कर लिया।

'स्व' के ज्ञान का उद्घाटन सत्य के स्वरूप से होता है, क्योंकि व्यक्ति के जीवन की संरचना में 'जड़' और 'चेतन' का समन्वय होता है। सभी इन दोनों के होने की सत्यता को स्वीकार करते हैं। यदि कोई पूछे— 'आप कौन हैं?' उत्तर— 'मैं आत्मा हूँ' यह नहीं आकर नाम विशेष, कुल, वर्ण, सम्प्रदाय, स्थान से परिचय मिलता है, जो जड़ हैं। यह परिचय चैतन्य का नहीं होकर जड़रूपी शरीर और उससे जुड़ी हुई विशेषताओं से होता

है। अतः हमें सत्य को स्वीकार करना है। हमारे शरीर की वास्तविक शक्ति व सत्ता केन्द्र जड़ शरीर नहीं अपितु चेतन आत्मा है। मनुष्य केवल भौतिक लक्ष्य का चयन कर भटक जाता है, जिससे वह संसार में बहुत कुछ जान लेता है, लेकिन स्वयं के स्वरूप से अनभिज्ञ रहता है। आत्मज्ञान को जानना अर्थात् भेद-विज्ञान को समझकर आत्मिक पक्ष का चयन करना सत्य को जानना है। जब मनुष्य इस भेद को जान लेता है तभी अपने मूलस्वरूप को जान सकता है। आचारांगसूत्र स्पष्ट कहता है—

**जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ।
जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ।**

अर्थात् जो एक आत्मा को जानता है वह संसार के स्वरूप को जानता है और जो सम्पूर्ण संसार को जानता है वह आत्मा के स्वरूप को जानता है। यह सम्यक् ज्ञान द्वारा ही सम्भव है।

अपने स्वरूप को पहचानना : मूल स्वरूप को जानने के लिए मानस लोक अर्थात् चित्त, अन्तःकरण, मन, बुद्धि, प्रज्ञा आदि साधनों का विकास आवश्यक है। जीवन के इन्हीं आन्तरिक आयामों में हमारी सूक्ष्म चेतना अन्तर्निहित रहती है। इस सूक्ष्म चेतना को घोषित करने के लिए ध्यान, तप, जप, योग, स्वाध्याय आदि तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। 'ध्यान'—सिद्धि की उपलब्धि है। ध्यान द्वारा 'स्व' का चिन्तन, स्व-प्रेरणा, स्व-संकेतन के अभ्यास से स्व की अनुभूति तथा भौतिक शरीर से पृथक्ता की सिद्धि होती है। अपने स्वरूप को पहचानने का अर्थ है कि अखण्ड, अविनाशी

परम चैतन्य की अवस्था का बोध करना। यही हमारा वास्तविक स्वरूप है।

श्रीमद् भगवद्गीता 13/11 में स्पष्ट किया है-

**अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तम् ज्ञानं यदतोऽन्यथा॥**

अर्थात् अध्यात्म ज्ञान में नित्य स्थिति और तत्त्वज्ञान के अर्थ रूप परमात्मा को ही देखना यह सब ज्ञान है और जो इसके विपरीत है वह अज्ञान है। जिस ज्ञान के द्वारा आत्म वस्तु और अनात्म वस्तु जानी जाए उस ज्ञान का नाम आत्मज्ञान है। ज्ञान वह चेतना शक्ति है जो अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर कर आत्मा को सम्यग् मार्ग दिखाता है। ज्ञान आत्मा का अखण्ड प्रकाश पुँज है, महान शक्ति है, निर्मल ज्योति है, मानव जीवन का सार है। हमारे भीतर में अनन्त ज्ञान की शक्ति है, लेकिन कषायों एवं विकारों से हमारा भौतिक स्वरूप ढँक गया है। उसे उजागर कर अपने स्वरूप को प्राप्त करने की विधि सम्यग्ज्ञान है। हमारे सुप्त मन को जाग्रत करना अर्थात् शरीर से मन, मन से आत्मा और आत्मा से परमात्मा को पहचानना है। अपने स्वरूप को जाने बिना यह सम्भव नहीं होता है।

हमारे भीतर में चिन्तन, तर्क, निर्णय, तुलना, विवेचन आदि की क्षमताएँ होती हैं। जीवन की वास्तविक प्रतिभा, आत्मप्रेरणा, प्रेम, दया, करुणा, न्याय-निष्ठा, धर्म, सत्य आदि विलक्षण गुण मौजूद होते हैं अर्थात् सुप्त मन अथवा प्रवृत्त मानस से प्रबुद्ध मानस तथा प्रबुद्ध मानस अध्यात्म मानस तक पहुँचना ही स्व से साक्षात् करना होता है। 'स्व' के स्वरूप को जानकर ही परमात्मीय चेतना के रूप की अनुभूति होती है। ऐसे आत्मत्व, स्वत्व को प्राप्त कर लेना ही मनुष्य जीवन की वास्तविक सफलता और सार्थकता है। 'स्व' के भाव में स्थित अर्थात् स्वभाव में होना ही मनुष्य का परम मूल्य कहा गया है। स्व स्वरूप को पहचानने के पश्चात् जीवन के सभी मौलिक प्रश्न सुलझ जाते हैं। मैं क्या हूँ? मेरा स्वरूप क्या है? उद्देश्य क्या है? इन सभी के उत्तर 'स्व' की खोज में मिल जाते हैं। व्यक्ति तभी सत्य कह पाता है कि मैं आत्मा हूँ, चैतन्य स्वरूप हूँ, मेरा उद्देश्य

आत्मरूपी परम तत्त्व को प्राप्त करना है।

ज्ञान 'स्व-पर' प्रकाशक है : ज्ञान आत्मा का नेत्र है, आत्मोपलब्धि का सोपान है। ज्ञान अपने आप में एक अति दिव्य तत्त्व है, श्रेष्ठता का चरम स्तर है। ज्ञान का अथाह भण्डार मनुष्य को ज्योतिर्मय बना देता है। ज्ञान का उल्लास मन को हर्षित कर देता है। ज्ञान की विवेचना जिन्दगी के कई गूढ़ वातायन खोजती है। ज्ञान ही व्यक्ति को शक्तिशाली, निर्मल, अनुशासित, विवेकवान और शालीन बनाता है। ज्ञान सर्वप्रकाशक है। ज्ञान से ही जीवन का वास्तविक बोध सम्भव है। उत्तराध्ययनसूत्र 32/2 में स्पष्ट है-

**नाणस्स सव्वस्स पगासणाए,
अन्नाण मोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य संखण्णं,
एणंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं॥**

अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान व मोह त्याग से, राग-द्वेष के क्षय से शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है। ज्ञान जीवन का अभिन्न अङ्ग है। ज्ञान-अज्ञानरूपी अन्धकार को दूरकर आत्मा को सच्चा मार्ग दिखाता है। अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होने के लिए नीति में कहा है-

**असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतगमय।**

ज्ञान ही है जो अज्ञान के तम को दूर करता है।

ज्ञान अहंकार को दूर करता है : ज्ञान के अविवेक से व्यक्ति अहंकारी हो जाता है, वह अपनी मर्यादाएँ भूल जाता है, उसमें निरंकुशता पनपने लगती है। ज्ञान की मूल साधना क्लुषित होने लगती है। ज्ञान के अभाव में दहशत, भय, सूनापन विद्यमान रहता है। ज्ञान का अविवेक बहुधा व्यक्ति को क्रूरतम कगार पर लाकर खड़ा कर देता है, जहाँ उबरने का कोई रास्ता नजर नहीं आता। ज्ञान का अहंकार केवल पीड़ा ही पहुँचाता है। एक बार भले ही वह अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने में सफल हो जाए, अन्ततः उसे अपमानित ही होना पड़ता है। इन्द्रभूति गौतम के अहंकार को प्रभु महावीर ने

अपने दिव्य ज्ञान से क्षीण कर दिया और उन्हें अपना प्रथम शिष्य बना लिया।

प्रज्ञा अर्थात् सम्यक् ज्ञान-विवेक बुद्धि की परिष्कृत अवस्था है। उत्कृष्टतम स्थिति है। जिसके आधार पर दिव्य दृष्टि, दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है, जो जीवन के बीच अपनी प्रकाशपूर्ण राह खोज लेता है। 'स्व' की खोज में व्यक्ति 'मैं', 'अहम्' को भूल गया है, क्योंकि ये बाह्य तत्त्व है, भीतरी गुण नहीं। वह यह जान जाता है कि अहंकार केवल असुरक्षा, भय, घृणा और मिथ्याधारणा के अतिरिक्त कुछ प्रदान नहीं करता। वह प्रगति के पथ का रोड़ा है, अन्धकार है। इसलिए इसके स्थान पर आत्मिक पथ का चयन करता है। आज के युग में इस पर विजय प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण कार्य है, क्योंकि जहाँ त्वरित लाभ पाने की प्राथमिकता हो, 'मैं' सर्वोपरि की धारणा हो, वहाँ केवल कषाय ही उत्पन्न करता है।


अहंकार और स्वार्थ की रेखाओं से जिस व्यक्तित्व

का निर्माण होता है वह भौतिक व्यक्तित्व होता है, लेकिन जो सच्चा साधक है, 'स्व' की खोज करता है, जिस व्यक्तित्व का निर्माण सच्चाइयों के आधार पर होता है। वह आध्यात्मिक व्यक्तित्व का होता है। आध्यात्मिक व्यक्तित्व का सम्बन्ध मैं धनवान हूँ, मैं शासक हूँ, मैं शक्तिशाली हूँ आदि से नहीं होता है, वह केवल यथार्थवादी दृष्टिकोण के आधार पर चलता है। वह सत्य का अतिक्रमण नहीं करता, सच्चाई को झूठलाने का प्रयत्न भी नहीं करता।

'स्व' भाव में व्यक्ति जब केन्द्रित हो जाता है, वहाँ अहम् का स्थान शून्य हो जाता है। मोह-माया, राग-द्वेष आदि सब क्षीण हो जाते हैं। इस प्रकार आत्मज्ञान से व्यक्ति अहंकार से बच सकता है।

अतः स्पष्ट है कि सुख बाहर नहीं, भीतर में है, पर में नहीं 'स्व' में है। 'स्व' की यात्रा द्वारा स्वयं को जानना, समझना ही आत्मज्ञान है। यही कल्याण का मार्ग है।

॥ जय गुरु नामा ॥



॥ जय महावीर ॥

वुमन्स मोटिवेशनल फोरम


(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति)

Presents

संकल्प-पत्र

(भ्रूणहत्या त्याग)

॥ जय गुरु राम ॥



मैं शासनपति भगवान महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक के पावन अवसर पर उनके उपदेश **जीओ और जीने दो** को आत्मसात करते हुए आत्मसाक्षी से संकल्प लेती हूँ कि मैं आजीवन भ्रूणहत्या करूंगी नहीं, करवाऊंगी नहीं और करते हुए की अनुमोदना भी नहीं करूंगी।

मोबाईल नंबर : जन्म दिनांक :/...../.....
शहर : अंचल का नाम :

तो देर किस बात की, आज ही संकल्प-पत्र भरें एवं 723 1033008 पर व्हाट्सअप द्वारा भेजें।

[Google Link](https://forms.gle/7Sm9pDxZqFeqn12r5) ▶ <https://forms.gle/7Sm9pDxZqFeqn12r5>

इतिहास के झरोखे से

- संकलित

(वर्ष 2006 में सौभाग्यशाली शिरपुर संघ के तत्वावधान में आगमज्ञाता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी के सांनिध्य में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर वर्षीतप पारणा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य भगवन् के श्रीमुख से उच्चरित जिनवाणी के मोती आपके समक्ष प्रस्तुत हैं।)

परम दयालु ओजस्वी क्रान्तिकारी प्रवचनकार परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. द्वारा इतिहास में अपने ओजस्वी वाणी में अक्षय तृतीया के महत्त्व के बारे में फरमाया कि इस अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान हैं, जिनका नाम ऋषभ है। उन्होंने अनेक कार्यों की शुरुआत की। वे प्रथम राजा सन्त बने। उन्होंने एक न्याय-नीति की व्यवस्था का श्रीगणेश किया। वहीं धर्म के क्षेत्र में सन्तर्चर्या का सूत्रपात किया। उन्होंने आत्मा का बोध किया एवं वे आदिनाथ बन गए। जो निज का बोध करता है वह नाथ हो जाता है। भगवान ऋषभदेव ने असि, मसि, कृषि की शिक्षा के माध्यम से कर्मबोध कराया। जब शान्ति का वातावरण बना तब वे मुनि बने। साधना से घनघाती कर्म दूर कर कैवल्य प्राप्त

किया। एक वर्ष तक प्रभु को अन्न नहीं मिला, पर मन में खिन्नता नहीं आयी और ना ही अधीर हुए। लेकिन जो राजकुमार दीक्षित हुए थे, वे भूख सहन नहीं कर पाए। वे वृक्षों से फल तोड़कर खाने लगे। देववाणी हुई, खबरदार सन्त के चोले में रहकर ऐसा नहीं हो, लेकिन आज वह देववाणी क्यों नहीं हो रही है? आज इस चोले में क्या-क्या हो रहा है? आचार्यश्री ने फरमाया कि मुनि जीवन में जो मर्यादाओं की क्षत-विक्षतता हो रही है।

उसका बड़ा कारण मुनि ही नहीं, श्रावक भी हैं। हम अपने-अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वाह करें। तीर्थंकरों की अवहेलना करने वाले हम नहीं बनें, इसका ध्यान रखें। आज तो कोई बहुरूपिया भी आ जाए तो 'मत्थण वंदामि' करके सोचते हैं कि साधु की पोशाक तो है और हम से तो अच्छा ही है। सन्त मिलते नहीं। इसकी समीक्षा कौन करे? हमारे मन की विचार शक्ति मन्द है। पेढ़ी का बहुत महत्त्व है। एक फुटपाथ पर बैठा व्यक्ति कोई

जाना बिना घर

जाना बिना घर... श्री सुपरिभाषीजी म.सा. श्री पतिलालजी म.सा. आदि का संयुक्त प्रयास है। शिरपुर संघ के तत्वावधान में आगमज्ञाता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी के सांनिध्य में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर वर्षीतप पारणा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य भगवन् के श्रीमुख से उच्चरित जिनवाणी के मोती आपके समक्ष प्रस्तुत हैं।

शिरपुर संघ के तत्वावधान में आगमज्ञाता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी के सांनिध्य में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर वर्षीतप पारणा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य भगवन् के श्रीमुख से उच्चरित जिनवाणी के मोती आपके समक्ष प्रस्तुत हैं।

जाना बिना घर

जाना बिना घर... श्री सुपरिभाषीजी म.सा. श्री पतिलालजी म.सा. आदि का संयुक्त प्रयास है। शिरपुर संघ के तत्वावधान में आगमज्ञाता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी के सांनिध्य में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर वर्षीतप पारणा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य भगवन् के श्रीमुख से उच्चरित जिनवाणी के मोती आपके समक्ष प्रस्तुत हैं।

जाना बिना घर... श्री सुपरिभाषीजी म.सा. श्री पतिलालजी म.सा. आदि का संयुक्त प्रयास है। शिरपुर संघ के तत्वावधान में आगमज्ञाता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी के सांनिध्य में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर वर्षीतप पारणा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य भगवन् के श्रीमुख से उच्चरित जिनवाणी के मोती आपके समक्ष प्रस्तुत हैं।

जाना बिना घर... श्री सुपरिभाषीजी म.सा. श्री पतिलालजी म.सा. आदि का संयुक्त प्रयास है। शिरपुर संघ के तत्वावधान में आगमज्ञाता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी के सांनिध्य में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर वर्षीतप पारणा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य भगवन् के श्रीमुख से उच्चरित जिनवाणी के मोती आपके समक्ष प्रस्तुत हैं।

आभूषण मात्र 20 हजार में दे रहा है, उससे नहीं लेते हैं। जबकि पेढ़ी पर वही आभूषण 50 हजार रुपये का है तो भी खरीद लेते हैं। 30 हजार का लाभ होते हुए भी फुटपाथ वाले से नहीं खरीद रहे। पेढ़ी वाले का विश्वास है, फुटपाथ वाले का नहीं। **महंगा रोवे एक बार सस्ता रोवे बार-बार।** हम व्यावहारिक जीवन में किर-किर की रोटी नहीं खाएंगे, पर धर्म क्षेत्र में भेल-सम्भेल की रोटी खा लेंगे। सोने की परख हम कसौटी पर बार-बार कस कर करेंगे और धर्म के मामले में ऐसा क्यों? हम अपना-अपना दायित्व बोध करें। अक्षय तृतीया के दिन भगवान ऋषभदेव के पारणे के संदर्भ पर कुछ मतभेदों पर पूज्य गुरुदेव ने मार्मिक विवेचन किया और कहा कि मतभेद के साथ मनभेद न हो।

आचार्य भगवन् ने अपने क्रान्तिकारी उद्बोधन में

कहा कि कुछ लोग कहते हैं कि वर्षीतप तो शास्त्रों में चला नहीं। भगवान ने एकांतर तो किया नहीं। तब आचार्य प्रवर ने कहा कि मैं पूछ लूँ पचरंगी, सतरंगी कौन से शास्त्र में है? पाँच तिथियों का वर्णन कौन से शास्त्र में है। एकांतर तप के लिए शास्त्र का निषेध नहीं कि यह तप नहीं किया जा सकता। अन्य कई उदाहरण आचार्य भगवन् ने प्रस्तुत किये। अन्त में आचार्य भगवन् ने फरमाया कि जैसे पृथ्वी का क्षरण वृक्ष लगाने से रुकता है, वैसे ही धर्म का क्षरण क्षमा, करुणा, मित्रता इत्यादि पेड़ों को लगाकर रोक पाएँगे। हम सच्चे धर्म का पालन करें, कषायों को दूर करें और मित्रता विकसित करें। जैसे राम-भरत मिलते हैं, ऐसे ही साधर्मी भाईचारे में हम आगे बढ़ें तभी अक्षय तृतीया अक्षय शान्ति प्रदान करने वाली बन पाएगी।



ज्ञानी-अज्ञानी कौन ?

- आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

संसार के सभी पदार्थ नाशवान हैं। इन नाशवान पदार्थों को काम में लिया जा सकता है, परन्तु ये ही आत्मा के लिए सर्वस्व नहीं बनते हैं। आत्मा के लिए तो चरम लक्ष्य प्रभु के तुल्य बनने की प्रबल जिज्ञासा और तदनुरूप श्रद्धा ही मुख्य हैं। ऐसे लक्ष्य पर आरूढ़ व्यक्ति चाहे थोड़ा ज्ञानी हो या अधिक, परन्तु वह प्रभु की सेवा के मार्ग को ग्रहण करने वाला बन सकता है। जिसको इससे विपरीत ज्ञान है, जो आत्मा और परमात्मा संबंधी विषय को समझता ही नहीं है अथवा जो समझकर झुठलाता है, अपनी कमजोरियों को छिपाकर परलोक का अपलाप करता है, आत्मा की शक्ति को विस्मरण करके भौतिक तत्त्वों का प्रतिपादन करता है, संसार की मोह-माया ही जिसके जीवन का लक्ष्य है, इस जीवन के अन्दर कुछ खा लिया, पी लिया, पहन लिया, मौज-शौक कर लिया, यही सब कुछ है, इसके अतिरिक्त कोई तत्त्व नहीं है; जो इस प्रकार की श्रद्धान् रखकर चलने वाला है, तो चाहे वह व्यक्ति लोगों की दृष्टि में अधिक ज्ञानी भी क्यों न हो, भौतिक विज्ञान की दृष्टि से प्रकाण्ड विद्वान् भी क्यों न हो, परन्तु शास्त्रकार कहते हैं कि जो इस प्रकार एकाकी ज्ञान के साथ है और अपने निज स्वरूप को भूलकर संसार के विज्ञान को ही सब-कुछ मानता है, वह अज्ञानी है।

साभार- नानेशवाणी-45



भक्तों के भगवान की, जय बोलो गुरुवर राम की।
जिनशासन के शान की, जय बोलो गुरुवर राम की॥

युगनिर्माता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी,
प्रशान्तमना परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलालजी म.सा. ने उदयपुर
के अनेक क्षेत्रों को किया पावन एवं
उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा.
के चित्तौड़गढ़ की दिशा में बढ़ते चरण

पधारजे घणी खम्मा से गूँज रहा झीलों की नगरी
का कोना-कोना; श्रद्धा का सैलाब निरंतर उमड़
रहा; उदयपुर बना तीर्थधाम

“

हमारी समाधि हमारे हाथ में है - उपाध्याय प्रवर

”

तिलक नगर, ऋषिनगर, वृंदावन विहार, से. 3, आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र, राणाप्रताप नगर, सुन्दरवास, उदयपुर।

जिनके दर्शन मात्र से खुलती तकदीर है।

ऐसे राम गुरुवर की हर दिल में बसी तस्वीर है॥

पंचम आरे में चतुर्थ आरे की झलक दिखलाने वाले रत्नत्रय के महान आराधक, युगपुरुष, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परमाराध्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. आदि ठाणा-9 झीलों एवं श्रद्धा, भक्ति, आस्था की नगरी उदयपुर के उपनगरों में जिनशासन की अद्भुत प्रभावना कर रहे हैं। आचार्य भगवन् के अलौकिक दर्शनों हेतु देश-विदेश से श्रद्धा का जनसैलाब उमड़ रहा है। जीवन निर्माणकारी, कर्मनिर्जरा हेतु प्रभावकारी

प्रवचनों की अमृतधारा निरंतर प्रवाहित हो रही है। उदयपुर की धर्मप्रेमी जनता आत्मतृप्त हो स्वयं को धन्यातिधन्य महसूस कर रही है।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग हेतु चित्तौड़गढ़ की ओर निरंतर विहार कर रहे हैं। बीच राह आने वाले अनेक क्षेत्रों में धर्म जागरणा करते हुए आपश्री धर्मप्रेमियों को कर्मनिर्जरा हेतु भगवान महावीर के पंचशील सिद्धान्तों की ओर अग्रसर होने का आह्वान कर रहे हैं। अद्भुत संयम साधना एवं आगमसम्मत प्रवचनों से जनता प्रभावित हो रही है। आचार्य भगवन् की महती कृपा से उपाध्याय प्रवर द्वारा आयंबिल तप की आराधना करने हेतु अद्भुत प्रेरणा दी जा रही है। अनेक स्थानों पर भाई-बहिनों ने प्रति माह एक आयंबिल करने एवं दशवैकालिक सूत्र का प्रथम अध्ययन कंठस्थ करने का नियम ले रहे हैं। साथ ही अनेक जगहों पर आयंबिल की लड़ी प्रारंभ हुई।

शासन दीपक श्री मनीषमुनिजी म.सा., श्री हेमंतमुनिजी म.सा. ठाणा-2 नाथद्वारा, कांकरोली होते हुए देवगढ़ की ओर तथा शासन दीपक श्री आदर्शमुनिजी म.सा., श्री नवोन्मेषमुनिजी म.सा. ठाणा-2 ब्यावर-बीकानेर की ओर विहार हुआ है। शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (उदयपुर वाले) आदि साध्वीवर्याओं द्वारा धर्म की विशेष प्रभावना की जा रही है।

16 मार्च 2023 प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ फरमाया। आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र में धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमें वीतरागी बनना है। वर्तमान समय में युवा पीढ़ी गलत संगति में पड़कर टी.वी. के विज्ञापनों को देखकर भ्रमित हो व्यसनों की ओर कदम बढ़ा रही है। तम्बाकू, गुटखा, शराब का सेवन कर जीवन को बर्बादी के कगार पर ले जा रही है। तंबाकू, गुटखा खाने से कैंसर जैसी भयंकर बीमारियाँ हो रही हैं। समय रहते युवा पीढ़ी को दुर्व्यसनों से बचाना होगा।

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि ‘कैसे हो कल्याण करणी काली है, नहीं होगा भुगतान हुण्डी जाली है’, लेकिन राम गुरु की शरण में कल्याण निश्चित है। सत्पुरुषार्थ की दिशा में हम निरंतर कदम बढ़ाएँ। उपस्थित अनेक भाई-बहिनों ने दुकान में तम्बाकू, गुटखा, बीड़ी, सिगरेट नहीं बेचने एवं कईयों ने नहीं खाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर कई लोगों ने खाना खाते समय टी.वी. देखने का त्याग लिया।

महेश नाहटा ने ‘राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश’ कार्यक्रम को जन-जन तक पहुँचाने की अपील की। बालक आयुष सुराना, तन्मय सुराना-कटियार आदि कई बच्चों ने कोल्डड्रिंक्स पीने का त्याग किया।

प्रातः डॉ. सत्यनारायणजी शर्मा द्वारा समीक्षण ध्यान प्रयोग विधि करवाई गई।

17 मार्च महावीर भवन, से. 3 में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हेमन्तमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि गुरु की शरण में जाने का मतलब है कि गुरु के बताए हुए मार्ग पर चलना और उस पर टिके रहना। कोई भी संत-सतियाँजी की टीका-टिप्पणी/आलोचना, आशातना नहीं करना चाहिए। गुरु के इशारे पर सदैव चलते रहना चाहिए। गुरु हमारे साथ हैं, फिर डरने की क्या बात है। यतना से चलें, यतना से बैठें, यतना से बोलें, यतना से सोएँ और यतना से सारे कार्य करें तो पापकर्म का बंधन नहीं होगा। हर परिस्थिति और कठिनाई का हम डटकर मुकाबला करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा., साध्वी श्री ललिताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद सभा में सुशोभित थे। साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा. निरंतर एकल ठाणा तप कर रहे हैं। कई भाई-बहिनों ने वर्ष में 12 एकासन, 12 उपवास, 12 आयंबिल, 12 संवर करने का प्रत्याख्यान लिया।

18 मार्च धर्मसभा में श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जब इच्छाएँ पूरी नहीं होती हैं तो हम अपने मन के ग्राफ को गिरा देते हैं। मान-अभिमान, लोभ करना आदि संसार बढ़ाने के कारण बन सकते हैं। जो काम-भोगों से निवृत्त नहीं होता, वह पग-पग पर खेदित हो रहा है, दुःखी हो रहा है। संकल्प-विकल्पों में उलझा हुआ वह श्रमण

कैसे बन पाएगा? इसलिए हम खेदित हो रहे हैं, दुःखी हो रहे हैं। साधु जीवन स्वीकार करने से संसार के सभी पापों से बचाव होता है। बारह व्रतधारी श्रावक तो अवश्य बनें।

शासन दीपिका साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. आदि साध्वीमंडल सभा में सुशोभित थे। श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार समिति के संयोजकजी सहित अनेक जनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

19 मार्च, संजयजी बम्बोरिया, 7, ऋषिनगर, से. 31 प्रातः तिलक नगर में रविवारीय समता शाखा में श्रद्धालुओं की उपस्थिति देखते ही बनती थी। परम पूज्य आचार्य भगवन् ने आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ फरमाए।

शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का तिलक नगर में जय-जयकारों के साथ संजयजी बम्बोरिया के निवास पर पधारना हुआ।

महावीर भवन में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हेमन्तमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि गुरु-भगवन्तों की आज्ञा का पालन उनकी सबसे बड़ी सेवा है। वही सच्चा विनयवान है, जो गुरु आज्ञा पालता है। क्रोध, मान, माया, लोभ को जितना घटाएँगे उतना ही हमारा कल्याण होगा। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके शादी-विवाह एवं अन्य अवसरों पर बढ़ रहे दिखावे, प्रदर्शन एवं आडम्बरों से दूर रहने के लिए सर्वसमाज के हितार्थ उत्क्रांति का विशिष्ट आयाम प्रदान किया है। हमने इस आयाम का कितना सार्थक उपयोग किया, यह आत्मचिन्तन का विषय है।

सभा में उपस्थित कई भाई-बहिनों ने इसके पालन हेतु विभिन्न संकल्प लिए।

20 मार्च, ऋषिनगर एवं आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र। प्रातः मंगलमय प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् की पावन वाणी में मंगलपाठ श्रवण का विशेष प्रसंग प्राप्त हुआ।

आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र में शासन दीपक श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने गीतिका “*ऐसा अवसर मिला है मिलेगा कहाँ, जिनशासन मिला है मिलेगा कहाँ*” प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि प्रभु और गुरु की महिमा अपरम्पार है। इनकी स्तुति करने से मन पवित्र हो जाता है। निंदा, विकथा करने से सम्यक्त्व मलिन हो जाता है। सुदेव, सुगुरु, सुधर्म पर हमारी आस्था इतनी गहरी होनी चाहिये कि इसका प्रभाव हमारे जीवन पर पड़े। व्यर्थ चर्चा में समय की बर्बादी न कर स्वाध्याय व सेवा में अपना जीवन आगे बढ़ाएँ।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। धर्म की आराधना से कर्म शीघ्र क्षय हो जाएँगे।

70 वर्ष की आयु के पश्चात् व्यापार से पूर्ण निवृत्ति का संकल्प सभा में उपस्थित कुछ भाइयों ने लिया।

21 मार्च। प्रतिदिन की भाँति प्रातःकालीन मंगलमय बेला में प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण करने के पश्चात् आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि ज्ञान-मार्ग रूखा-सूखा लगता है। ज्ञान-मार्ग के साथ यदि भक्ति जुड़ जाए तो रस आने लगता है। जब दो सिर मिलते हैं तो फूट पैदा होती है और जब दो दिल मिलते हैं तो जुड़ाव होता है। दिल से जीने वालों के रिश्ते लम्बे चलते हैं और दिमाग से जीने वालों के रिश्ते ज्यादा नहीं चलते।

एक तुम्हारा होना क्या से क्या कर देता है।

एक तुम्हारा खोना क्या से क्या कर देता है।।

आप दिमाग से ज्ञानी बनते हैं और दिल से भक्त बनते हैं। जिसको प्रभु से लगन लग जाती है वह मोक्ष में चला जाता है। उच्च भावों से कर्मों की निर्जरा होती है। बिना भाव आत्मज्ञानी व्यक्ति मोक्ष नहीं जा सकता।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि लोग कहते हैं सामायिक में मन नहीं लगता, पर मन को मोड़ना अपने हाथ की बात है। मन को धर्म में, अच्छे कार्यों में लगाएँ तो मन का स्थिर रहना निश्चित है।

साध्वी श्री रिभिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा सभा में सुशोभित थे। साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा. के 43वाँ एकल ठाणा तप के पञ्चवर्षाण हुए। श्री हेमंतमुनिजी म.सा. के 12 वर्षों से लगातार एकान्तर तप चल रहे हैं। अन्य कई चारित्रात्माओं के भी तपस्याएँ निरंतर जारी हैं।

22 मार्च | मंगलमय बेला में प्रातःकालीन प्रार्थना सम्पन्न हुई। आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र में आयोजित धर्मसभा में श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारी संस्कृति धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है। हमें हमारी संस्कृति का ज्ञान नहीं है। हर व्यक्ति को नवपद ओलीजी करनी चाहिये। हमें हर छोटी से छोटी चीज को महत्त्व देना चाहिये तथा हर छोटी चीज हमारे जीवन में आनी चाहिये।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि नये संवत्सर में हमें नया काम करना है। जीवन के इतने वर्षों में हमने क्या खोया, क्या पाया, क्या शुभ एवं क्या अशुभ कार्य किये, आत्मचिन्तन करें। बालचंदजी बरड़िया, सिलचर/नोखा ने वर्ष में 5 तेले एवं 12 उपवास करने का संकल्प लिया। सभा में उपस्थित कई भाई-बहिनों ने 1-1 व्यक्ति को व्यसनमुक्त कराने का संकल्प लिया।

23 मार्च, ऋषिनगर | प्रातः मंगल प्रार्थना पश्चात् आचार्य भगवन् ने पावन वाणी में मंगलपाठ प्रदान किया। आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र में शासन दीपक श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिस हृदय में प्रभु का वास होता है, वहाँ काम, क्रोध का वास नहीं रहता है। पाप को दूर करने के लिए प्रभु का हृदयकमल में विराजना जरूरी है। जिस प्रकार सूरज की एक किरण अंधकार का नाश कर देती है, उसी प्रकार प्रभु के स्मरण मात्र से विकार दूर हो जाते हैं। सभी साधुओं के साथ एक समान भाव होना चाहिये। कोई भी साधु-साध्वी आए तो मैं निर्दोष गोचरी बहराऊँ, कभी साधु-साध्वी खाली नहीं जाएँ, ऐसी भावना रखें।

आओ भगवन् आओ, मेरे अन्तर्मन में आओ

मेरे जीवन के कण-कण में, बनकर प्राण समाओ।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जीवन में निभाने की कला आनी चाहिये। आज सहनशीलता के अभाव में परिवार बिखरता जा रहा है। सहने की क्षमता को बढ़ाना है।

साध्वी श्री रिभिताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद सभा में सुशोभित थे।

दोपहर में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, समाचारी पठन, जिज्ञासा समाधान आदि कार्यक्रम में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि **“हमारी समाधि हमारे हाथ में है। हमारा कार्य है सेवा करना, श्रवण करना, सुनना और सामने वाले को समाधि पहुँचाना। सेवा समाधि देना तभी संभव है कि हम स्वयं खुद समभाव में रहें। अगर हमारा सत्य बोलना सामने वाले व्यक्ति को कष्ट या पीड़ा पहुँचा रहा है तो हमें सत्य नहीं बोलना चाहिये।”** धर्मपरायणा प्रीतमबाई सोनी, उदयपुर के संथारापूर्वक महाप्रयाण पर पारिवारिकजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति संदेश प्राप्त किया।

24 मार्च | प्रातः मंगलमय प्रार्थना तत्पश्चात् आशीर्वाद स्वरूप आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से मंगलपाठ श्रवण किया। आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र में धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि धर्म करना नहीं पड़ता अपितु धर्म स्वयंमेव होता है। स्थानक में आकर हम धार्मिक बनते हैं और बाहर हम राग-द्वेष, ईर्ष्या-वासना, छल-कपट, लोभ में उलझे रहते हैं। हर जगह धार्मिक रहना चाहिये। भक्त बनना बहुत दूर की बात है। पहले हमारी श्रद्धा-भक्ति मजबूत होनी चाहिये। भोजन से पहले प्रभु का स्मरण करना चाहिये। जब हर क्षण प्रभु का स्मरण करेंगे तो विषय-विकार दूर हो जाएँगे। व्यर्थ की बातों में समय बर्बाद नहीं करें।

मेरे तन में है राम, मेरे मन में है राम।

रोम-रोम में समाया हुआ राम है। मेरी श्वांसों में बसे तेरा ही नाम है।।

गीत प्रस्तुति के साथ पूरी सभा भक्ति भावों में हिलोरें लेने लगी।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि प्रभु एवं गुरु भक्ति में जो आनन्द और शांति है, वो दुनिया की किसी चीज में नहीं है।

शासन दीपिका साध्वी श्री समीक्षणाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमंडल सभा में सुशोभित थे। कई लोगों ने कोल्डड्रिंक्स त्याग का नियम लिया।

शाम को आचार्य भगवन् आदि ठाणा का आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र में जय-जयकारों के साथ मंगलमय पदार्पण हुआ।

25 मार्च, आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र। प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना में “*इस कलयुग रा भाग्यविधाता, राम सब रा कष्ट मिताता*” के समवेत स्वर श्रद्धापूर्ण भावों के साथ सभा में गूँज रहे थे। आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मंगलपाठ के साथ युवा शिविर का आगाज हुआ। श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने इस अवसर पर नवयुवकों को मार्गदर्शन देते हुए फरमाया कि आजकल भावनात्मक बुद्धिमत्ता कम होती जा रही है और कृत्रिम बुद्धिमत्ता बढ़ती जा रही है। जिस समय में जो कार्य करना चाहिये, वही करना बुद्धिमत्ता का परिचायक है। पहले गलती होने पर कान पकड़ते थे। उसका कारण था कि कान पकड़ने से बुद्धि बढ़ती थी और वापिस वह गलती नहीं होती थी। बच्चों के बचपन से छल हो रहा है, ऐसा सुना है। बचपन डिजिटल हो रहा है। अब मेलों में जाने की जिद नहीं होती। गुड़िया की गोद में गुड़िया नहीं होती। बच्चे मोबाइल के लिए आसमान सर पर उठा लेते हैं। लगभग 165 युवा भाई-बहिनों ने उत्साहपूर्वक शिविर में भाग लिया।

प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि अच्छे कार्यों की शुरुआत अपने घर से एवं स्वयं से करनी चाहिये। शांति और सफलता के लिए अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के सिद्धान्तों को जीवन में अपनाना चाहिये। सत्य ही भगवान है। सत्य पर ही सारी दुनिया टिकी हुई है। 12 वर्ष तक जो सत्य वचन का प्रयोग करता है उसे वचन सिद्धि हो जाती है। आरंभ-परिग्रह से पुण्यवानी घटती है और अहिंसा-सत्य के पालन से पुण्यवानी बढ़ती है।

सभा में साध्वी श्री लक्षिताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद उपस्थित थे। सभा में उपस्थित कई भाई-बहिनों ने ऊनोदरी तप करने का संकल्प लिया।

26 मार्च। आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारी और सिद्धों की आत्मा में कोई फर्क नहीं है। सिर्फ कर्मों का ही अन्तर है। कर्म क्षय होने से हम भी परमात्मा, सिद्ध, भगवान बन सकते हैं। हर आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति है। ‘**मोहनीय कर्म**’ कर्मों का राजा है। व्यक्ति का पुरुषार्थ मोहनीय कर्म क्षय करने की दिशा में होना चाहिये। मोहनीय कर्म को क्षय करने से ही मोक्ष की प्राप्ति होगी। आध्यात्मिक आरोग्यम् प्राप्त करने के लिए अपने कर्मों का क्षय करने का प्रयास करना चाहिये। संयम भाव को जीवन में आगे बढ़ाएँ।

साध्वी श्री समीक्षणाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री करिश्माश्रीजी म.सा. आदि ठाणा सभा में सुशोभित थे। कई भाई-बहिनों ने प्रातः उठते ही पाँच मिनट तक मोबाइल के हाथ नहीं लगाने, कोल्डड्रिंक्स नहीं पीने का प्रत्याख्यान ग्रहण किया। बारह माह में 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 संवर करने का प्रत्याख्यान भाई-बहिनों ने लिया। दुबई प्रवासी खिरकिया निवासी परम गुरुभक्त अभिषेक पटेल ने गुरुदर्शन का लाभ लिया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-6 का महावीर भवन, सुन्दरवास से विहार कर गुडली में मंगल पदार्पण हुआ। दोपहर में प्रभावशाली, ओजस्वी प्रवचन हुए। आयंबिल की लड़ी प्रारंभ करने की विशेष प्रेरणा उपाध्याय प्रवर ने दी। गुडली सहित विभिन्न संघों के प्रतिनिधियों ने आयंबिल की लड़ी प्रारंभ

करने का संकल्प लिया। कई भाई-बहिनो ने दशवैकालिक सूत्र का प्रथम अध्ययन कंठस्थ करने का संकल्प लिया।

धर्मसभा में श्री हेमंतमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जीवन में तीन तत्त्वों का होना जरूरी है- देव अरिहंत, गुरु निर्ग्रन्थ, केवली भाषित दयामय धर्म। इन पर श्रद्धा जरूरी है। गुरु पर श्रद्धा रखने वाले का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता है। हम चाहे कहीं भी रहें, गुरु आशीर्वाद हमारे साथ होता है। गुरु के पास रहने से ज्यादा गुरु की आज्ञा में रहना अनिवार्य है।

उपाध्याय प्रवर ने जीवन में तप की अनिवार्यता का विश्लेषण किया। श्रावक-श्राविकाओं को भी पूरे देश में आयंबिल की लड़ी चलानी है। आत्मा अनन्त शक्तिमान है। जो इन्द्रियों के विषय में लिप्त रहते हैं, उन पर ज्ञान कम चढ़ता है। पेट हल्का होने से मस्तिष्क की नसों में हल्कापन आ जाता है।

उपस्थित जनसमुदाय ने आयंबिल की लड़ी में नाम लिखवाये। विभिन्न संघों के धर्मप्रेमियों ने माह में 1 आयंबिल करने का संकल्प लिया।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. के पावन मार्गदर्शन एवं श्री साधुमार्गी जैन संघ व समता युवा संघ उदयपुर के तत्वावधान में “Artificial Intelligence v/s Emotional Intelligence” विषय पर दो दिवसीय युवा शिविर का आयोजन 25-26 मार्च को उदयपुर में सम्पन्न हुआ। इस शिविर में युवाओं ने जीवनोपयोगी लगभग 15 नियम ग्रहण कर जीवन एवं शिविर को सार्थक बनाया।

राम गुरु का है आह्वान, एक बच्चा गुरु के नाम

27 मार्च, वृंदावन विहार, से. 31 प्रातः प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् द्वारा मंगलपाठ प्रदान करने के पश्चात् जिनवाणी का अविरल प्रवाह प्रारंभ हुआ। प्रारंभ में 14 पूर्वों का सार नवकार महामंत्र जाप किया गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि धन, परिवार, पद-प्रतिष्ठा से जीव का कल्याण होने वाला नहीं है, अपितु देव, गुरु, धर्म का शरण लेने से जीव का कल्याण होगा। एकमात्र धर्म ही हमारे साथ जायेगा। प्रभु से कष्ट दूर करने की मांग नहीं करना अपितु कष्ट आने पर उसे सहन करने की क्षमता को प्राप्त करना है। महापुरुषों के सान्निध्य का हमने इतना लाभ लिया, लेकिन जीवन में कितना परिवर्तन आया? आत्मचिंतन करें। “राम गुरु का है आह्वान, एक बच्चा गुरु के नाम” आह्वान करते हुए मुनिश्री ने राम गुरु के चरणों में अपनी एक संतान समर्पित करने की प्रेरणा दी।

शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजनाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमंडल सभा में सुशोभित थे। भोजन करते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का संकल्प कई लोगों ने लिया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-4 का गुडली से आँचलियों की मादड़ी में पधारना हुआ। जैनेतर भाइयों की सेवा-भक्ति भावना अत्यन्त सराहनीय रही।

शासन दीपक श्री मनीषमुनिजी म.सा. एवं श्री हेमंतमुनिजी म.सा. ठाणा-2 का विहार नाथद्वारा, देवगढ़ की दिशा में हुआ।

28 मार्च प्रातः धर्ममय प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् की पावन वाणी में मंगलपाठ श्रवण करने के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि खाते, सोते, भोग भोगते लगभग जिंदगी निकल गई, लेकिन अब तक तृप्ति नहीं हुई। तृष्णा का गड्ढा कभी भरता नहीं है। जीवन का सच्चा सुख तृप्ति और संतोष से मिलने वाला है। श्रावक को जीव-अजीव का ज्ञाता होना चाहिये। जो जीव-अजीव को नहीं जानता, वह धर्म को नहीं जान सकता। श्रावक को एक व्रत या बारह व्रत अवश्य पालन करने चाहिये।

श्रावक ऐसा चाहिये, जो हो क्रियावान।

यतना और विवेक का, रखे सदा ध्यान॥

गुरु के प्रति दिखावा नहीं, सच्ची भक्ति व समर्पणा होनी चाहिये। भक्ति दिल से होगी तो सब संकट अपने आप दूर हो जाएँगे। हमें संत-सतियों द्वारा बताई गई अच्छी बातों को जीवन उतारना चाहिये।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विशालप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा सभा में उपस्थित थे।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का जैन स्थानक, मावली स्टेशन में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। यहाँ पर दो प्रभावशाली प्रवचन हुए। माह में 1 आयंबिल करने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया। श्रीसंघ की सेवाएँ सराहनीय रही।

29 मार्च प्रातःकालीन बेला में मंगलमय प्रार्थना से सम्पूर्ण माहौल धर्ममय बन गया। आचार्य भगवन् ने अपूर्व कृपा का वर्षण करते हुए आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ प्रदान किये। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आज से ओली तप प्रारंभ हो रहा है। धन्य हैं वे लोग जो आयंबिल तप कर अपनी आत्मा को भावित करते हैं। नवकार महामंत्र की महिमा अपरंपार है। हजारों योद्धाओं को जीतने से बढ़कर अपनी आत्मा को जीतने वाला महान् होता है।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि खाना-पीना, माल उड़ाना, परिवार बढ़ाना हमारे जीवन का उद्देश्य नहीं है। धर्म को जीवन में प्रतिस्थापित करना हमारा उद्देश्य होना चाहिये।

शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजनाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद सभा में उपस्थित थे। साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा. के 51वाँ एकल ठाणा तप हुआ।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा द्वारा मावली स्टेशन में धर्म की पावन गंगा प्रवाहित हुई। बाहर के दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

30 मार्च प्रातःकाल की मंगल बेला में सिद्ध-अरिहंतों की प्रार्थना करवायी गयी। आचार्य भगवन् ने मांगलिक प्रदान कर धर्म का मार्ग प्रशस्त किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आज हम सिद्ध भगवान की आराधना करते हुए उनके गुणों का स्मरण कर रहे हैं। आप भी कर्मों को हटा देने से सिद्ध बन सकते हैं। **‘अप्या सो परमप्या’** आत्मा ही परमात्मा है। अरिहंत बने बिना सिद्ध नहीं बन सकते। परम अवस्था को प्राप्त करना सिद्धत्व है। सिद्ध यानी जिसको कुछ पाना या करना शेष नहीं है। तीर्थकर भी दीक्षा से पहले सिद्धों को नमस्कार करते हैं। नवपदों की माला में नमो सिद्धाणं की माला आज अवश्य फेरें। सिद्धत्व प्राप्ति की दिशा में हम निरंतर आगे बढ़ें।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि अरिहंत सिद्ध की स्तुति से हमारे सारे दुःख, कष्ट, तनाव दूर हो जाते हैं। एक बार **नमो सिद्धाणं** बोलने से अनंत सिद्धों को नमस्कार होता है। अरिहंत और सिद्ध भगवान में अपार शक्ति है। पंच परमेष्ठी के स्वरूप को समझकर हम उनकी आराधना करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याएँ सभा में सुशोभित थे। महेश नाहटा ने महापुरुषों के सान्निध्य का अधिकाधिक लाभ उठाने की अपील की। प्रतिदिन एक घण्टा मौन रखने एवं माह में एक दिन मोबाइल त्याग करने के संकल्प हुए।

फतहनगर में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. एवं श्री राजनमुनिजी म.सा. के प्रभावशाली प्रवचन **‘अंधकार से प्रकाश की ओर जीवन को आगे बढ़ाएँ’** विषय पर हुए। श्री धीरजमुनिजी म.सा. ने महिला शिविर के अन्तर्गत मन को शांत रखने के सूत्र, सकारात्मक सोच, गुणदृष्टि आदि पर महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया।

31 मार्च प्रातः प्रार्थना की पावन वाणी से सम्पूर्ण माहौल आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत हो गया। आचार्य

भगवन् ने असीम कृपा बरसाते हुए मंगलपाठ प्रदान किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्य भगवन् होते हैं, जो सारणा, वारणा, धारणा को पूरे संघ में बखूबी संचालित करते हैं। आचार्य भगवन् के अनंत उपकार हैं। वे सबको वात्सल्य, सही शिक्षा देते हुए प्रभु की वाणी को जन-जन तक पहुँचाते हैं। आचार्य श्री रामेश भगवान महावीर के 82वें पट्टधर हैं। वे जिनशासन को दीपा रहे हैं। उनके नेतृत्व में संघ निरंतर चहुँमुखी विकास कर रहा है। वह धरा धन्य हो जाती है, जहाँ राम गुरु के चरण पड़ते हैं। उनके उपकारों का मोल हम कभी चुका नहीं सकते। उनकी आज्ञा आराधना कर जीवन धन्य बनाएँ।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा का कल्याण करने का अवसर इस पंचम आरे में प्राप्त हुआ है। आज के समय में टी.वी., मोबाइल, इंटरनेट, व्हाट्सएप्प आदि आधुनिक साधनों से हिंसा बढ़ती जा रही है। बाल-युवा पीढ़ी को हमें इसके दुरुपयोग से बचाना होगा।

साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमंडल सभा में सुशोभित थे। सभा में उपस्थित सभी लोगों ने “सदा स्वस्थ रहें गुरु हमारे, यही प्रभु से अर्ज हमारी” भजन के गीत सामूहिक रूप से उच्चारित कर आचार्य भगवन् के स्वास्थ्य की मंगलकामना की।

महिला मंडल ने “आखी बहार गुरुवर आपके आने से, तेरी छवि में डूब गये हम शुभ भावों से” भजन प्रस्तुत किया। आचार्य भगवन् को छत्तीस वंदना एवं माह में एक आयंबिल करने का नियम कई लोगों ने लिया।

फतहनगर में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 के पधारने से ज्ञान-ध्यान की अपूर्व आराधना हो रही है।

प्रातःकालीन प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य उपस्थित गुरुभक्तों को मिला। दोपहर में उभय गुरु-भगवंतों एवं चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

तपस्या सूची

आजीवन शीलव्रत	अभयजी पुष्पाजी पिरोदिया-रतलाम, चांदमलजी-सुशीलादेवी सांखला, डॉ. हरिसिंहजी मोगरा-चित्तौड़गढ़
आजीवन चौविहार	देवीलालजी डोसी
पक्की नवकारसी	150- मैनादेवी रांका-चेन्नई 100- कविताजी दलाल-बड़ीसादड़ी, सुशीलाजी खटोड़-दल्लीराजहरा, स्नेहलताजी चण्डालिया, बुधराजजी रांका-चेन्नई, आभाजी डूंगरवाल-इन्दौर
संवर	100- मोहनीदेवी कोठारी
एकासना	3 माह- मैनादेवी रांका-चेन्नई
आयंबिल	15- नम्रताजी टाटिया-अर्जुनी
1 घंटा मौन	प्रकाशजी धींग, नंदनालालजी बोहरा, प्रहलादजी लोढ़ा, हरिसिंहजी बोहरा
गाथा स्वाध्याय	प्रतिदिन 1500 गाथा- लीलादेवी सांड-इन्दौर 1 लाख- ममताजी बोहरा-कोरबा, सायरबाई सांखला-दुर्ग

- महेश नाहटा



Serving Ceramic Industries Since 1965

हुं सिं उचौ श्री जय नाना राम चमकते भानु समाना
 तरुण तपस्वी, प्रसादिभना, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी मरसा.
 एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कण्डिशः वंदन



A Premier Clay Specialists in The Country..

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
 Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
 1st Floor, Labhuji Ka Katla,
 Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
 FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
 Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com



सामाजिक जिम्मेदारी 'सिपानी' की पहचान



बेंगलूर जैसी महानगरी में वरिष्ठ नागरिकों एवं लाचार व्यक्तियों को सिपानी सदन में निःशुल्क भोजन, वस्त्र एवं चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवायी जा रही है। यह सौभाग्य है कि 10 वर्ष पूर्व शुरू की गई इस सेवा योजना का लाभ 100 व्यक्तियों से प्रारम्भ होकर आज 10 वर्षों की पूर्णता तक यह संख्या बढ़कर 400 हो गई है।



इस सेवा कार्य में इन नागरिकों को पूर्णतः सज्जित एम्बुलेंस, डॉक्टर एवं नर्सिंग देखभाल की सुविधा चौबीसों घण्टे उपलब्ध करवायी जा रही है।

सेवा के नये आयाम प्रस्तुत करते हुए सिपानी फाउंडेशन ने वहाँ पर 60 कर्मचारियों की नियुक्ति भी की है जो इन सब सुविधाओं के आधार स्तम्भ हैं।

आर के सिपानी फाउंडेशन

439 18वाँ मेड़न, 6वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूर — 560 095

संपर्क सूत्र : संतोष 9964105057, 9243667700, सिपानी कार्यालय | ई-मेल : sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नेखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
फोन : 0151-2270261

helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

गौतम चन्द्र जैन, मुम्बई

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में 1,000/- (15 वर्ष के लिए)

विदेश हेतु 15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक 50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता 500/-

आजीवन सदस्यता 5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से

कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

[E-mail : ho@sadhumargi.com](mailto:ho@sadhumargi.com)

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : accounts@sadhumargi.com



व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	} news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक	: 9799061990	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	} examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें।

इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर दें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA

PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND



Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA

Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.

Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



Diamond
Duroflex



Diamond
DUROLON

Now with new
M.R.O.
Technology
Resists high impact

IS 15778 : 2007

CM/L NO: 2526149

cftri
CERTIFIED

LUCALOR
FRANCE

FIRST TIME IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED
CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com

रक्षा जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261